नवजागरण के आलोक में शरतचन्द्र एवं प्रेमचन्द के साहित्य का अनुशीलन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध



निर्देशिका डॉ० शैल पाण्डेय किन्द्रा विभाग



इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद 1994 प्रस्तुतकर्ता राम करन

यह मानव सृष्टि सृष्टा को अद्भुत संरचना है और यह मानव सम्भवत: उस परम सत्ता की सर्वोत्तम कृति ।। है। प्रकारान्तर से यह को वह सक्ते है कि परम सत्ता अपने अधिकाश शुरू रहते का प्राकट्य मानव के माध्यम से करती है। इस प्रकार मृष्टा का प्रकटकेकरण ही यह सँम्पूर्ण विश्व जगत है। प्रकृति के इ तना पुकट रूपों में हमें केवल के हो रूप या विचार अत्यधिक प्रभावित करते। है जि का सम्बन्ध हमसे या हमारे "स्व" तत्व से होता है। बतार उदाहरण रू यह । हर क्री हैं कि प्रातः समाचार पत्र पाते ही गाठक उसमें अपने स्व को खोज वरने लहें हैं व और क्रम्हा: वरीयता क्रम में उनका उन्हरीलन भी करते चलते हैं। जिसकी हि छेल जगत में है वह छेल का पृष्ठ पहले उलाने पुलटने लगता है। राजनीति में रिः लें वाले अपने दंग की राजनोति को रष्ट खोजने लगते हैं तथा अपराधिः मानिशक्तः के लोग अपराध जगत का पृष्ठ खोलरे हैं कहने का अभिपाय कि, हर व्यक्ति अपर्ना रूचि स्थिति और हालातों के विष्य में ही ज्यादा कुछ जानने तथा सुनने लो इच्छा रखता है। अथात व्यक्ति स्ट ४ स्थिति, रूचि, हालात के बीन में रहता ज्यादा पसन्द करता है।

मेरे विषय चयन में भी व्हा इसी प्रकार के कारक है। प्रारोक्शक ब्यारमें में विषय करते हुए संयोग से एक कहानी पदने का अवसर मिला। जिसके पानी दें नाम हमारे घर - गाँव जैसे सीधे - गाँद तथा जिसकी क्थावस्त, गाँव की दिन-प्रान्धें द

की कहानी का नाम था - "मन्त्र" । मंत्र कहानी के भगत तथा व्रांडिया में मुझे अपने गाँव का "स्व" प्रकट होने लगा । उसके वातावरण म चित्रण में घर गाँध जीवन्त हो उठा । उस कहानी को कई बार पदा । यही मन्त्र कहानी हगारे विकय च्यन की मूल मन्त्र बनी । और इस कहानी के लेखक प्रेमचन्द की अन्य रचनाओं के प्रति कुम्हार रुचि बद्दती गयी । अन्तत: में उनका उपासक बन गया ।

मानव मन की भी अजीव स्थिति है वह कभी दो भिन्न वस्तवों की तलना करने लाता है तो क्भी दो "अन्न दिखने वाली वस्तुओं" में साम्य खोजने लगता हे तथा कभी दो समान वस्तुओं में अन्तर खोजने लगता है। अथा कभी दो समान वस्तुओं में अन्तर खोजने लगता है। मन को इसी पृष्ठभूमि है तुल्ना मह अध्ययन करने की रूचि पैदा हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययन काते ए विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित "आवारा मसीहा" नामक पुस्तक हाथ ल्या ।यी । उसमें जिस चरित्र नायक की जीवनी पढ़ी उसके सम्पूर्ण साहित्य के विषय में जार्नन की अभिलाधा बलवती हुई। इस प्रकार यह " आवारा" मेरे मनो मरितष्ट को अपने मोलिक विवारों के हारा लुकने लगा। चूँकि प्रेमवन्द लरिकाई से हं मुझे प्रभावित करते रहे अत: उनके जीवन चरित तथा तत्कालीन साहिता लेखन नी परिस्थितियाँ जमनने को रूचि स्वानाविक ही थी। व्यस्क होने पर शरतहन्द्रं भी कुछ कम नहीं प्रभावित किये। इन सबका मिला- जुला नतीजा पह हुआ ि

मैंने अपने शोध का विषय इन्हीं दो साहित्य महारिययों को चुना

इन रचना कारों का व्यक्तित्व और जीवन दर्शन भी विषय के मित रूचि पैदा करता रहा । यह अदमुत लंधोग ही है कि दोनों का जन्म प्रेमचन्द §1880 तथा शरत चन्द्र ४1876 ई0 ४ में हुआ । दोनों का वात्यव्यल भी लगभग एक सी विपन्नता में व्यतीत हुआ । दोनों में बचपन में एक पंकार का अल्ड पन तथा बेफिकी मोजद थी। बावज़द इन सभी बाल सुलभ प्रवृत्तियों के वे यूग के प्रति इतने संवेदस्त्रील केसे हुए । मुल्लो डण्डा का खिलाडी कलम का मिपा ही वैसे बना या वे कोन सी एरिस्थितियों थीं जो इस अलमर- खिला ही छो एक पुबद्ध साहित्यकार बनाया । तथा एक आवारा दीन-दु स्थियो. गरीब उ असहायों का मसी हा कैसे बना १ या वह कैसा वातावरण था जिसने बेपरवाह फॉकेमस्त मावक ख्दय को लेखनी पक्छने के लिए प्रेरित किया । इस उकार इन रचनाकारों की जीवनियां पदने के बाद तत्कालीन वातावरण की जानकारी के पृति सजगता पेदा हुई। और इन साहित्यकारों के व्यक्तित्व निर्माण करने वाल वातावरण " नवजागरण " को आधार बनाकर इन लेखकों की साहि त्यक सांच की जानकारी का उपक्रम प्रारम्भ किया ।

इस शोध कार्य को पूर्ण करने में जिन मनी क्यों ने योगदान दिना उनका स्मरण करना अप्रासाणिक न होगा । सहजता एवं सरलता की उत्तिमूटिं, मातृ तुत्य कु कत्याणी दास गुप्ता की में हार्दिक चरण वन्दरा करता हूँ जिन्होंने मुक्षे पृत्रक्त स्नेह पुदान कर बंग साहित्य का ककहरा ज्ञान कराया तथा जिक्य च्यन में भी मदद की।

निश्चल व्यक्तित्व, मानवतावादी, दया, मम्ता एव करणा की देवी, वस्ययन शीला, विद्राशी, निर्देशिका, " डाँ० शेल कुमारी पाण्डेय के प्रति शृगावनत हूँ जिनके चरणों का संरक्ष्ण प्राप्त कर शोध कार्य पूर्ण हो सका।

अनुशासनिष्य, स्पष्टवाः , क्रिव्यनिष्ठ, नारिकेल फलं सिम्मतं, व्यक्तित्व मो० राजेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष हिन्दी विभाग के पृति हृदय से आभागे हूँ जिनका अनुशासन सदेव क्रिव्य के पृति प्रेरित करता रहा ।

और अन्त में पात: रमरणीय पूज्य माता-पिता के शुः, सोम्य कमलकत वरणों का वंवरीक बनना वाहता हूँ जिनके आशींवाद से शोध कार्य निर्वाध रूप मे सम्मन्न हो सका ।

शोध कार्य को पूर्ण करने में टाइपिंग में दक्ष ,शुभम मोटो कापियर्स . मनमोहन पार्क, कटरा, इलाहाबाद के श्री रावेश कुमार शुक्ल जी ने वडकती धूम में भो बड़ी लगन दिखायी । उनकी यह लगन एवं उत्साह स्मरणीय रहेगा ।

अ - न - इ - म - णि - का पृष्ठ सं0 पुस्तावना 1. 1 - 5 पृष्ठभूमि 2. 1 = 26 पुथम **अ**ध्याय 3. 27 - 68हितीय अध्याय 4. 69 - 97तृतीय अध्याय 5. 98 - 130 चत्र्यं अध्याय 131 - 174पंचम अध्याय 7. 175 - 203उपहासर

" नवजागरण के आलोक में शरतचन्द्र एवं प्रेमचन्द के साहित्य का अन्यातित "

पृष्ठभूमि :

पृथम अध्याय : "भारतीय न्वजागरण का स्वस्प "

bab विभिन्न स्धारवादी संगठन एवं मस्याए°

१। ६ ब्रह्म समाज ४२० तत्व बोधिनी मभा

830 प्रार्थना नभा 848 आर्य समाज

858 रामकृष्ण आन्दोलन 86, थियोसोफिकल सभा

०७४ बहावी ा न्दोलन ७४० अलीगद आ न्दोलन

थ्र देव बन्द तासा

ूखं - पा समाजित सुधार १२० राजनैतित सुधार

030 साहित्य वेतना 040 औदीगि: विजाण

हितीय अध्याय : हिन्दी प्रदेश में नवजागरण

त्वोय अध्याय :

" नक्जा गरण एवं शरतचन्द्र

्क₀ सामाजिः द्रिटकोण

७20 राजनैतिव द्रां भ्टकोण

वत्र्यं अध्यायः

- " नवजा गरण एवं प्रेमचन्द"
- ूक_{ू सामाजिक दृष्टिओं प}
- ूरा¦ राजनतिक दृष्टिकोण

पंचम अध्याय .

- " शरतचन्द्र एवं प्रेमचन्द्र के उपन्या सो' में मा म्य एवं
- दृष्टि गेद।
- अ भाम्य
- हुक लगाज सुधार परक दृष्टिकोणों में लाम्य
- ¿खं राजनीति परक दृष्टिकोणो में राम्य ।
- व वैजम्य
- ूक्य तामाजिक दृष्टिकोण सम्बन्धो वैकस्य
- ूख, साहित्य परक द्विटकोण सम्बन्धी वैषम्य
- ूग. राजर्नी तक दृष्टिकोण सम्बन्धो वैषम्य

उपसंहारः

अग्रेज भारत में व्हापार के उद्देश्य से आये किन्तु थोड़े हो स्मर में यहाँ के शासक बन गये। तत्परधात यहाँ के धार्मिक, शैक्कि, आर्थिक, गौर सांस्कृतिक व्यवस्था में भो हस्तकेम करना प्रारम्भ किये। ईसाई धर्म को सर्वेष्ट धर्म घोषित किया। तथा हिन्दू और इस्लाम धर्म को टिक्ली उजानो कृ दो। शिक्षण संस्थाएं, अस्पताल, जेल तथा ईनाई मिशनरियाँ उनके धर्म प्रमार ज हाधन बनी। समाचार पत्र, सार्वजनिक सनाकों और इश्तिहारों के द्वारा ईनाई की के लाने का प्रमास विया गया।

भीजों ने भारत में जो शिक्षा व्यनस्था लागू की उसस उद्देश्य ैतः
मानिसक्ता पैदा करना था। जो "रक्त और रंग से भारतीय हो तथा अपनी
पृवृत्ति, किवार, नै। तक, मापदण्ड जोर प्रका से भीज हो । इसके साथ हो हिन्दू
तथा मुसलमान में मतभेद पैदा करने के लिए साम्प्रदायिक शिक्षा अरम्भ हो ।
शिक्षा और सांस्कृति के के में भीज शासकों का प्रयत्न यह था कि यता के विकासनन
धर्मों को मानने जालों के बीच द्या जिसे फैलाया जाय और प्रेसी संस्कृति का
विकास न होने दिया जाय, जिस्ते विभिन्न सम्प्रदायों के लोग गागोदार ने ।
इस प्रकार भीजों ने भारत में सांप्रदायिक्ता का बोज बोकर अरणवार करना
पारम्भ किया ।

पश्चिमी संस्कृति ने भरत को सामाजिक परम्पराखां, धर्म, कला, साहित्य, विचारधारा, रहन - भहन, वस्त्र-भोजन खादि सभी को गम्भीर स्प से प्रभावित किया जो भारतीय संस्कृति सदियों से विभिन्न संस्कृतियों को अपने में आ स्मसात करती हुई चली जा रही थी वह इस संस्कृति के साथ अपना समन्वय नहीं बना सकी । इसका कारण यह था कि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकवादी थी जबकि औरजी संस्कृति भोतिकता वादी थी- भारतीय संस्कृति के सम्मूख खड़ी हो गयी।

आर्थिक क्षेत्र में अंग्रेजों ने भारतीयों का शोषण करना प्रारम्भ किया। स्ती वस्त्र उद्योग, रेशमी वस्त्र उद्योग, तथा उनी वस्त्र उद्योग भारत के प्राचीन उद्योग थे, औजों ने इंग्लैंड की मंडियों में भारतीय वस्त्रों पर ज्यादा कर लगाया तथा वाद में उसे पूर्णरूपेण ठप कर दिया । इसी समय ओदी गिक क्रान्ति शुरू हुई उसके कारण अंग्रेजों ने महीनों से वस्त्र बनाना प्रारम्भ किया । भारतीय हथ करधा उद्योग विदेशी कम्पनियों के इन क्यड़ों का मुकावला नहीं कर पाये परिणामस्वरूप इनकी माँग कम होती गयी तथा अशीनों द्वारा तैयार क्यड़े सस्ते टर पर हर जगह मिलने लो। भारत से अप्रैज कच्चा मान अपने देश ने जाते तथा वहाँ से बना हुवा माल भारत भेजनाश्क किये इस प्रकार भारत में पूजी विदेशमें को जाने लगी तथा भारतीय मजदूर एवं कारी गर भारी संख्या में बेरोजगार होने लगे। उनका हालत दिन- प्रतिदिन गिरती चली गयी।

किसानों का भी शो क्या हुआ । जमीन पर से किसानों का अधिकार समाप्त हो गया, जमीन का मालिक उँची बोलो लगाने वाला बना । प्रारम्भ में पाँच साल के लिए नीलामी की ब्यवस्था की गयी । फिर साल भर के लिए इसके साथ ही मालवाड़ी और रैवतबाड़ी पृथा भी लागू की गयी ।

इस पुकार जमीन पर किसानों का अधिकार नहीं रह गया । ठेकेदारों के अधीन काम करते थे । ये ठेकेदार विभिन्न रूपों में उनका शोषण करते थे । लगान न देने पर बेदखल कर देना, कोड़े मारना आम बात थी । जिसके कारण किसानों का आत्मिकिश्वास नष्ट होता गया ।

इस प्रकार देश में चारों तरफ अभावगुस्तता का वाता वरण बन गया। भारतीय चिन्तकों ने इनका कारण खोजना प्रारम्भ किया। इस प्रकार परस्पर विरोधी भाव समृहों के निरन्तर संधर्ष से एक नये दृष्टिकोण का अभ्युदय हुआ।

विचारी का यह आन्दोलन नवजागरण के नाम से जाना गया।

मध्यया में जात- पाँत, कुआ इत, पदां प्रथा, बाल वध, बाल विवाह, वह विचाह
विधवाओं के लिए ब्रह्मवर्य, सती प्रथा, नारी शिक्षा का निष्धे जैसे स्द विचारों

वेगर अन्य विश्वासे में जो भारतीय आतमा दब गयी थी वह इस नये दृष्टिकोण
के कारण उदब्ह हो उठी। इसी के भारतीय नवजागरण के नाम से जाना जाता

पृथम अध्याय

भारतीय नवरागरण का स्वरूप

१वई प्रमुख सुधारवादी स्थाञ्च एवं बान्दोलन :

सदियों को राजनैतिक दासता के परिणामस्वरूप भारतीय खोम का सर्य धीरे - धीरे शोतल होने लगा । भोतिक्तावादी ब्रिटिश संस्कृति की अंध्र ने आध्यात्मिकता वादी भारतीय संस्कृति का मार्ग अवस्ट कर दिया । ब्रिटिश संस्कृति ने यहाँ को धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्थितियों को प्रभावित किया । अपनी संस्कृति के पृति आस्थायान मनी षियों ने प्रत्येक प्रकार की बेचारगी के शमन हेतु प्रयास किये । भारतीय नवजागरण का उत्स इसी पृष्ठभूमि में फूटता है। इन नवजागरण के सवा हकों ने तत्का लीन समाज में परिव्याप्त विविध प्रकार की विसंगतियों के शमन हेत् नये मानदण्डों के अन्वेषण की वेष्टा की । धार्मिक दिवालियापन, रूदियों में जक्डा हुआ समाज, मन्ष्य की मन्ष्य के पृति विदेष भावना. नारी के व्यक्तित्व का हत्कापन उद्गेलित करने वाले ऐसे बिन्दु हैं जिन्होंने तत्कालीन नयी जागृति को एक स्वरूप पुदान किया । जीवन एवं समाज के पृति एक नयी सौच पैदा हुई । जीवन के पुत्येक क्षेत्र में भावुकता के स्वान पर बोहिकता का महत्व बदा । सर्वती स्प से सम्पन्न होने के बावजूद भी देश को दयनीय स्थिति के विषय मे ोचने वा

सिलिसला जारी हुआ । इसके साथ ही उन तमाम कारणों का अन्त्रेषण किया जाने लगा जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय समाज हासो नमुख हो रहा था । इन पतन्त्रील तत्वों को भारतीय संस्कृति से हटाने तथा अपनी संस्कृति के उन तत्वों का अन्वेषण किया जाने लगा जिसके हारा भारतीय समाज व संस्कृति उत्तरों त्तर विकसित हो सके।

बंगाल में पश्चिम का प्रभाव अधिक था, क्यों कि वहीं के लोग अंग्रेजों के सम्पर्क में अधिक आये थे। इसलिए नवजागरण की प्रथम ज्यों ति बंगाल में ही प्रज्ञविल्त हुई। बंगाली नव्य्वक पश्चिमी ज्ञान प्राप्त करके भारत का नविनिर्माण करने का प्रयत्न करने लो। प्रारम्भ में नवजागरण धार्मिक क्षेत्र में उदय हुआ। उन लोगों का विचार था कि पहले धार्मिक कृतित हो फिर सामाजिक और अन्त में राजनैतिक तथा बार्थिक। सर्वप्रथम वे बात्मा की उन्नित चाहते थे, क्यों कि बात्मिक उन्नित वे बिना सामाजिक बोर राजनैतिक प्रगति सम्भव हो नहीं थी। निम्निलिखित सुधारवादी संगठनों ने नवजागरण की ज्यों ति जलायी -

१।१ ब्रह्म समाज:

राजा राम मोहन राय, ने 20 अगस्त सन् 1828 को कलकत्ता में बुहम समाज की स्थापना को । धार्मिक और सामान्कि दोनों किनों में बुहम समाज ने सुधारवादी कार्य किया । हिन्दू समाज की तमाम रुद्रियों एवं बुध्याओं को तोड़ने में सपल हुये । धार्मिक केन्न में उन्होंने पादरी धर्म पुचारकों

के विरुद्ध हिन्दू धर्म की रक्षा की और दूसरी और हिन्दू धर्म में साये झूछ और अंध विश्वासों को दूर करने का भी प्रयत्न किया । मूर्ति पूजा का खण्डन कर एके वरवाद की स्थापना की। मानवतावाद की प्रतिष्ठा के लिए उपनिषदी का गम्भीरता से अध्ययन किया । सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में उन्होंने भगीरथ प्रयास किये। सती- पृथा, बहु पत्नी पृथा, वेशया गमन तथा जातिवाद का उन्होंने विरोध किया एवं विधवा प्नविवाह का समर्थन किया । देश में आर्धनिक प्रवृत्तियों के प्रचार - प्रसार हेत् उन्होंने औष्रवी शिक्षा का समर्थन किया।

तत्व बोधिनी सभा §2 §

महिष देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1899 में " तत्वबोधिनी सभा" की स्थापना की । अपने सिहान्त के प्रचार हेतू इन्होंने "तत्वबो हिमी पनिका " आरम्भ की । धार्मिक शिक्षा के ित्र एक स्कूल खोला । उन्होंने समाज सुधार पर विशेष ध्यान दिया । बहु विवाह, बाल विवाह, जाति पृथा आदि का विशेष विरोध किया । कालांतर में जब ब्रह्म समाज का विभाजन हुआ तो इन्होंने आदि ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया ।

§38 प्रार्थना सभा :

बंगाल के सुधारवादी आन्दोलन का प्रभाव देश के अनेक भागों में भी पड़ने लगा । चूँकि महाराष्ट्र भी पश्चिमी संस्कृति से ज्यादा प्रभावित था अत: वहाँ भी नई चेतना एवं न्यें दृष्टिकोण का विकास स्वाभाविक ही था।

बंगाल के बाद महाराष्ट्र में सुधारक दी आन्दोलन तेज हुआ । " महाराष्ट्र
में सुधार आन्दोलन सन् 1940 के आस - पास आरम्भ हुआ ।" 1832 में
वहाँ दर्पण हूं साप्ताहिक हूं एवं दिग्दर्शन हुमासिक पत्र में निध्ना निवाह,
दिलतोबार इत्यादि का प्रचार किया गया । किन्तु, महाराष्ट्र में व्यापक रूप
से सुधारवादी आन्दोलन का प्रचार तब हुआ जब केशवचन्द्र सेन 1864 में बम्बई
गये, उनकी प्रेरणा से 1867 में बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई । इसके
प्रमुख नेता थे - न्यायमृति महादेव, गोविन्द रानाडे और एनव्यजिवन्द्रावरकर ।
समाज सुधार के देल में प्रार्थना सभा ने चार प्रमुख कार्य किये - ।

- । जाति-पाति कः विरोध क्या।
- पुरुषी' तथा स्त्रियो' को विवाह की आयु को बढ़ाने पर
 बल दिया ।
- विधवा प्रतिवाह को बल दिया ।
- 4. स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन दिया।

इसके साथ ही इस सभा ने दिलत जाति मण्डल, समाज सेवा संघ एवं दक्कन शिक्षा समिति की स्थापना की । ब्रह्म "समाज के विवारों" के पूँचार के लिए मद्रास में भी कई केन्द्र खोले गये । पजाब में इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए

[।] भारतीय नवजागरण का इतिहास, बाबू राव जोशी, पृष्ठ - १)

दयान सिंह पुन्यास के तत्वाधान में दयान सिंह कालेज खोला गया।

§46 वार्यसमाज:

ब्रह्म समाज एवं प्रार्थनाः समाज ने जो सुधारवादी आन्दोलन बलाये उस पर पश्चिम का प्रभाव था। उन्हें सरकारी संरक्षण भी प्राप्त था। उसने ईसाई धर्म और संस्कृति से प्रभावित हो कर हिन्दू, धर्म और समाज की कुरोतियों को दूर करने काष्रयत्न किया था।

यद्यपि कि उन्होंने वेद तथा उपनिषदों से प्रेरणा प्राप्त की थी परन्त, उसने उनकी श्रेष्ठता को स्थापित करने का साहस नहीं किया । उन्होंने ईसाई और इस्लाम धर्म को भी समान पद प्रदान किया था । हिन्दू धर्म और उसकी आत्मा उनसे सन्तृष्ट न हो सकी । पूर्णस्प से भारतीय सधार आन्दोलन का प्रवर्तन आर्य समाज द्वारा हुआ । आर्य समाज आन्दोलन का जन्म पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ । इसकी स्थापना स्थामी दयानन्द ने 1875 ई० में बम्बई में की । स्वामी जी ने भारतीय जनता की खोई हुई आत्मा का संधान किया और राष्ट्रीय जीवन में शक्ति का संचार किया । वे वेदिक धर्म में ही पूर्ण सत्य को मानते थे । हिन्दू धर्म को वे विकर्व – धर्म मानते थे । हिन्दू धर्म के दरवाजे समुची मानव – जाति के लिए खुले थे । धार्मिक सुधार आन्दोलन के रूप में

उन्होंने मूर्ति पूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद, पशु बिल, श्राह, जंत्र, मंत्र तथा तंत्र एवं कर्मकाण्ड की कट आलोचना की थी। हिन्दू समाज सुधार के केत्र में भी उन्होंने अपृतिम योगदान दिया, वे जाति प्रथा के विरुद्ध थे। वेदों के आधार पर जाति प्रथा की आलोचना को। अञ्चल व्यवस्था का विरोध किया। वेदों के अध्ययन का मार्ग सबके लिए खोल दिया। स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। बहु - विवाह तथा बाल विवाह का विरोध किया। अन्तर्जातीय विवाह का

सामाजिक केन में उनका सबसे प्रमुख कार्य शृद्धि प्रथा थी। इस प्रथा के अनुसार जो क्यक्ति इसनाम या इंमाई धर्म अमा चुका था। वह हिन्दू धर्म में सिम्मिलित कर लिया जाता था। यह निश्चित रूप से एक उदार कार्य था। उन्होंने पुनः "वेदों की ओर चलो " का नारा दिया। स्वामी दयानन्द ने प्रमंस की कृतित से उत्पन्न स्वतन्त्रता, समानता और विश्व बन्धुत्व के विचारों का आधार वेदों को ही बताया। आर्थ समाज ने सर्वाधिक प्रभावी कार्य शिक्षा तथा सामाजिक सुधार के रूप में किया। राजनीति के क्षेत्र में भी उनका दृष्टिटकोण स्पष्ट था। वे कहतेन थे - बुरे से खुरे देशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छे हैं। इस प्रकार स्वराज्य के पृति उनकी गहरी आरथा थी। आर्य समाज

ने धर्म तथा समाज सुधार के साथ ही राजनीति क्षेत्र में भी अपना पृभाव स्थापित क्या।

5· राम कृष्ण आन्दोलन :

नवजागरण के प्रचार - प्रसार में राम कृष्ण म्हिन का योगदान
अत्यधिक है। हिन्दू धर्म को एक नवीन सामाजिक उद्देश्य प्रदान करने का श्रेय
"राम कृष्ण म्हिन " को ही है। विभिन्न धर्मों में सामन्जस्य स्थापित करने का
कार्य भी इसी म्हिन ने सम्पादित किया। चूँ कि स्वामी रामकृष्ण परम इंस स्वयं
अपने जीवन में वेष्णव, शास्त, इस्लाम एवं इंसाई धर्मों का प्रयोग कर चुके थे १
तथा सबमें एक सत्य का अनुभव कर चुके थे, इसीलिए रामकृष्ण म्हिन के संस्थापक
स्वामी विवेकानन्द ने भी सभी धर्मों को बराबर सम्मान दिया। उन्होंने मानव
सेवा को ही ईस्वर की सच्ची सेवा माना। मानव सेवा को ही उन्होंने सच्चा
सेवा माना। मानव सेवा को ही उन्होंने सच्चाधर्म माना। उनके अनुभार भूखे
व्यक्ति को धर्म की बात कहना ईस्वर तथा मानवता का उपमान है।"

उन्होंने अपने मत का प्रचार न केवल भारत अपित्, विदेशों में भी किया । राम कृष्ण मिशन ने ----

[।] अधिनिक भारतीय इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन, बीट्र लट्टांवर, प्ट- 377

पकेषवरवाद, मृतिपूजा में विश्वास नविध्न संभाव पर बन दिया । भानव सेवा को ही इंस वर की उपासना का मुख्य साधन माना है। इस प्रकार यह मिशन लोक सेवा तथा समाज सुधार का एक केन्द्र बन गया ।

¥6 ¥ थिओसो पिकल सभा :

प्राचीन भारतीय गौरव के पुंति न कैवल भारतीय नागरिक व समाज सुधारक बास्थावान थे बिपत् विदेशी नागरिक भी, हाचीन भारतीय संस्कृति से प्रभावित हर । जिसके परिणाम स्वस्प थिन्नोसोपिकल सभा की स्थापना हुईं। थिन्नोसोपिकल सभा की स्थापना सन् । 882 में अध्यार मद्रास में हुईं। जब शीमती बैसैट इसकी अध्यक्षा बनीं तो इसकी क्रियाशीलता में दुगुना विकास हुआ। इसने क समाज में मात् भावना का प्रचार प्राचीन धर्म, दर्शन और विकान के अध्ययन में सहयोग, सभी धर्मों के महत्व को स्वीकार करना तथा स्त्री- पुरुष की समानता पर बल दिया। इस प्रकार प्राचीन भारतीय गौरव के पृति आदर तथा विश्व -बन्धुत्व की भावना से भारतीय नवरागरण को अत्यध्कि बल मिला।

४७४ बहावी आन्दोलन: ४ 1860 मुस्लिम सुधार आन्दोलन ४

जिस प्रकार पाश्चात्य प्रभावों के परिणाम स्वस्य हिन्दू धर्म एवं समाज में नई चेतना का विकास हुआ, एक नये प्रकार की सोच पैदा हुई उसी प्रकार मुस्लिम समाज भी उससे प्रभावित हुआ । भारतीय मुसलमानों के रोति - रिवाज तथा मान्यताओं में आयी तमाम क्रीतियों की और ध्यान दिया गया। मृहिलम एकीकरण का यह पृथम प्रयास था। यह बहावी आन्दोलन अथवा बली उल्लास आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। इस आन्दोलन के नेता शाह वली उल्लास ये। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस्लाम धर्म के चार प्रमुख न्याय शास्त्रों में सामंत्रस्य स्थापित होना चाहिए जिसके कारण भारतीय मुसलमान आपस में बंटे हुए हैं उन्होंने वैयि वतक अन्त चेतना पर भी बल दिया।

उन्होंने वहा कि जहाँ बुरान और हदोस के शब्दों की क्षी क्मी विरोधात्मक व्याख्या हो सकती है तो व्यक्ति को अपनी अन्तितना के
अनुसार निर्णय लेना चाहिए । इस प्रकार एक संगठित समाज की स्थापना का
संकस लेकर इस आन्दोलन ने नवजागरण को गित प्रदान की ।

४८४ अलीगद् आन्दोलन:

बहावी आन्दोलन का कार्य क्षेत्र केवल धार्मिक रहा। राज =
नीतिक क्षेत्र में परिवर्तन का कार्य अनोगढ़ आन्दोलन से प्रारम्भ होता है। परपरागत
म्हिलम केवल कुरान के अध्ययन को ही सब कुछ मान बैठे थे। परम्परागत दंग से
म्हिलम शिक्षा प्राप्त करते थे। उलीगढ़ आन्दोलन के द्वारा मुसलमानों को
आधिनिक बनाने का प्रयास किया गया।

मुसलमान समाज भे पैली हुई क्रीतियों को दूर करने का उयास किया गया । इस आन्दोलन के भणेता थे - सर सैय्यद अहमद थां। उन्होंने मुस्लिम समाज को नई शिक्षा देने के लिए एंग्लों औरियन्टल स्कूल की स्थापना की । कुरान पर टीका लिखी । उन्होंने अपने जीवन के दो मुख्य लक्ष्य बनाये -

> थे। अप्रेज सरकार और मुसलमानों के सम्बन्धों को ठीक करना। ४२४ मुसलमानों में आधुनिक शिधा का प्रचार करना।

इस पुकार हिन्दू समाज के लिए जो कार्य क्रम्म समाज के हारा राजा राम मोहन राय कर रहे थे। वहीं प्रयास मुस्लिम समाज के लिए सर सैय्यद अहमद जा कर रहे थे।

४ू९४ देव वन्द शाखा ÷

बाधिनः विचारों हारा सरकार के साथ सामकंस्य बैठाने वाले बलीगढ़ आन्दोलन के महिलम समाज में विरोध होने लगा । जिसके परिणामस्वरूप देव वन्द शाखा का जन्म हुआ । इसका उद्देश्य परम्परागत महिलम समाज को बार अधिक दूर बनाना था । तथा महिलम सम्प्रदाय के लिए धार्मिक नेता तथार करना था । उहाँ पर अलोगढ़ आन्दोलन नई शिक्षा प्रदान कर छात्रों को सरकारी निय्कि की तरफ प्रेरित करता था वहीं देव बन्द शाखा आन्दोलन इस्लाम धर्म के पैनाने में बल देता था ।

। सामाजिकसुधार:

परिवर्तन के पृति आगृही भारतीय मनीषा के अन्तस में दो बातें समाहित थीं - समाज सुधार एवं भारतीय स्वाधीनता । सती पृथा बाल विवाह, विधवा किंग्ह निष्ध, पर्वा प्रया, नशा सोरी सान-पान, सम्बन्धी प्रतिष्टन्ध इत्यादि सामाजिक क्षुयाओं की शिकार भारतीय जनता मुक्ति के लिए कराह रही थी। इस सुधारवादी संगठनों ने द्वते हुए समाज को उबारा । उस समय जो तत्व देश और समाज की प्रगति में बाधा डाल रहे थे। इन सुधारों ने उन सबका प्रभाव कम किया और देश को प्रगति की और अग्रसर किया । भारतीय आत्मा को जाग्रत करने का पुयत्न किया । सामाजिक बुरा ध्यों का परिष्कार धार्मिक आचार- विचारों के मल स्वस्प का सन्धान और व्यवहारिक जीवन में सहानुभूति, सहिष्णुता दया. करणा जैसे मानवीय पृषों का विकास हुआ ।

बैगुजी शासन के साथ - साथ भारत में ईसाई धर्में - प्रचारकों का भी प्रवेश हुआ । ईसाई फिशनरियाँ भी भारत में आयीं । इन फिश्न-रियों ने अनेक प्रकार की लालच तथा स्विधाओं का प्रलोभन दिखाकर बहुत सारे भारतीयों को ईमाई धर्म स्वीकार करने के लिए पुरित किया । पर प्रेरणा से जो हिन्दू धर्मावलम्बी ईसाई या मुसलमान हो गये थे, प्न: हिन्दू धर्म की जोर उन्मूख हुए । इन दोनों सुधारवादी संगठनों वे ईसाई तथा मुस्लिम स्रोतों को कमतर किया । इसके बाद ईसाई धर्म समाज के केवल कुछ ही लोगों तक सीमित रह गया । इस प्रकार नवजागरण बान्दों लन ने एक तरफ हिन्दू समाज को अन्य धर्म गृहण करने से मना किया तथा दूसरी तरफ अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति आस्था पेदा की ।

"राजनीतक जागरण "

भारतीय जनमानस में राष्ट्रवाद की भावना पैदा होते ही राजनेतिक जागरण प्रारम्भ होता है। भारतीय राष्ट्रवाद प्रांसीसी क्रान्ति से विकेष स्प से प्रभावित था। ब्रिटिश शासकों ने भारत में अपनी नीव और गहरी जमाने के लिए राजनीतिक, सेबिक, आर्थिक तथा बौडिक सभी बेह्नों में आधीनक पहितयों का प्रयोग किया। इस आधीनकीकरण के परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रवाद का जल्म हुआ 2

बंग्रेजों का शासन सम्पूर्ण भारत पर था । इसलिए सम्पूर्ण भारत में एक सी समस्याएं पेदा हुईं। इन समस्याओं के निदान हेतू एक से कानून बनाये गये इस प्रकार अखिल भारतीय भावना पनपने लगी।

सम्पूर्ण देश को एक्ता के सूत्र में पिरोने का कार्य रेलवे तथा डाक तार व्यवस्था के प्रारम्भ हो जाने के परिणामस्वरूप हुआ । रेलवे लाइन बिष्ठ जाने से देश के सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक जीवन में जामूल चूक परिवर्तन हुआ । देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचना, ज्यादा सुविधाजनक तथा कम समय लगता था इस कारण लोगों के जीवन में गतिशीलता आयी नथा सम्पूर्ण देश में एक सी संस्कृति का प्रचार - प्रसार होने लगा । डाक्जानों के प्रचार से राष्ट्रीय साहित्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर शोध्रातिशीध्र में जाने लंगे।

1835 में खीजों ने खीजों भाषा के माध्यम से शिक्षा का प्रसार करने का निर्णय लिया। खीजी शिक्षा प्राप्त नक्युवकों के लिए पाश्चा त्य उदारवादी विचार धारा के हार खुल गये। मिल्टन, शेलो, बन्थम, मिल, स्पेन्सर, रूसों तथा वा स्टेवर के विचारों ने भारतीय बुद्धिजोवियों में स्वतन्त्रता, स्वशासन तथा राष्ट्रीयता की भावनाएं जगा दी। उंची शिक्षा प्राप्त करने के लिए कुछ नवीदित बुद्धिजोवी इंगलेण्ड भो गये थे। 'वलायत शिक्षा प्राप्त नक्युवक वहाँ के नागरिकों के अधिकारों को नजदीक से देख चुके थे तथा अपने देश की अधिकार श्रान्यता को भी देखे परिणामस्वरूप इनमें राष्ट्रीयता को भावना बलवती हुई। ब्रीजी शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण यह एक सम्पर्क भाषा का काम करने लगो। इस प्रकार आपस में विचार – विमर्श करने में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका बदा की।

देश में एकता स्थापित करने में समाचार पत्रों का अभूतपूर्व योगदान रहा।
मृद्धणालय की स्थापना हो जाने से ममाचार पत्र तथा सस्ता साहित्य प्रकाशित
होनेल गा। ये समाचार पत्र पाश्चात्य तरीके पर विकसित ह्य थे। इन समाचार
पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीयता को भावना मृद्ध्य रूप से बलवती हुई। दो इण्डियन
मिरर, दिक्गाली, दि अमृत बाजार पत्रिका, दी बाम्बे क्रानिकल, दि हिन्दू
पेट्रियट, दि भट्टरट्ठा, दि केसरी, दि आन्ध्र पुकाशिका, दि हिन्दू, दि इन्दू
पुकाश, दि कोहिनूर इत्यादि समाचार पत्र स्वतन्त्रता तथा पुजातंत्रीय भावना
को विशेष रूप से प्रसारित किये।

इसी समय भारतीय इतिहास पर सर विलियम जो न्स, मो नियर विलियम, मैक्समूलर इत्यादि विदेशी विद्यानों ने शोध परक विवार प्रतिपादित किये जिसके परिणामस्करप भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा का ज्ञान हुआ। यूरोपीय राष्ट्रवादी आन्दोलन ने भी देश के पृति गौरव की भावना पैदा की!

"भारत में राजनीतिक आन्दोलन के प्रवर्तक राजा राम मोहन राय थे। प्रथम राजनैतिक संगठन "क्या भाषा प्रकाशक सभा " 1836 ई0 में राम मोहन राय के साथ्यों ने स्थापित को । भूमि पितयों के हितों के लिए 1835 ई0 जमीदारी एसोसियेशन को स्थापना हुई । वास्तव में इसे ही पहली संगठित । बीठ्यलागोवर: आधुनिक भारतीय इतिहास: एक नवीन मूल्याकन पु0-397 राजनीतिक वेष्टा माना जा सकता है। जिसने अपनी शिकायतों के निवारण के लिए सवैधानिक उपचारों का प्रयोग किया। 1875 में शिशिर कुमार घोष ने इण्डियन लीग की स्थापना को। इस लीग का मुख्य उद्देश्य लोगों में राष्ट्रवाद को भावना जगाना था। जानन्द मोहन बोस और सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के सहयोग से इण्डियन एसोसियेशन को स्थापना हुई। इस संस्था ने न केवल मध्य वर्ग को ही सदस्य बनाया बल्क सर्वसाधारण को भो इसमें सिम्मिलत किया गया।

कलकत्ता की इण्डियन एसो सियेशन के आधार पर बम्बई प्रेसीडेन्सी में भी " बम्बई एसो सियेशन"की स्थापना हुई हूं 1852 हु ब्रिटिश सरकार तथा जनता के बीच में सेतु का काम करने वाली 1867में पूना में "पूना सार्वजनिक सभा को स्थापना हुई।

मद्रास प्रेसीडेन्सो में मद्रास नेटिव पसोसियेशन की स्थापना हुई । इस
पुकार कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास तोनों प्रेसीडेन्सीयों में संगठना त्मक राजनोतिक
आन्दोलन तेज हुए । यद्योप की पान्तीय स्तर पर संगठना त्मक भावना पनप
रही थी पिर भी बिखल भारतीय स्तर पर इस प्रकार को कोई संस्था नहीं
स्थापित हो गयी थी । जिसके माध्यम से सम्पूर्ण देश के बुझिजी कियों से विचारविमर्श हो सके । 1877 में पूना नार्वजनिक सभा ने बम्बई तथा कलकत्ता के
पुतिनिधियों में मिल-जुलकर काम करने की भावना पैदा की । इसी पुकार के

प्रयास कलकत्ता की इण्डियन एसो सियेशन का चल रहा था। यह संस्था राष्ट्रीय सम्मेलन की बात सोच रही थी। अधिल भारतीय स्तर पर राजनीतिक संगठन का सपना "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना १ 1855 है के साथ ही सम्मन्न हो गया। इस संस्था के जन्म के साथ ही राजनीतिक जागरण अधिक तेज हुए। इस संस्था के तोन प्रमुख सोपान है। 1885- 1905 को प्रथम चरण माना जाता है। इस चरण में यह जान्दोलन केवल थोड़े से बुद्धिजीवियों तथा शिक्षित वर्गों में ही लोक प्रिय था, जो पाश्चात्य उदारवादो तथा अतिवादी विचारधारा से प्रेरणा ग्रहण करता था।

दूसरा चरण 1905- 1919 तक माना जाता है । इस समय काग्रैस एक प्रोद संस्था बन गयी थी । इसके उद्देश्य तथा सीमाएं बद गयी । अनता के सर्वतो-न्यूडी सामाजिक, आर्थिक, राजनीर्तिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी बल देने लगो । तथा पूर्ण स्वराज्य पर बल देने लगी । इसी समय क्रान्तिकारी विचार-धाराएं भी काग्रैस में पनपने लगींथी । तथा वे ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे । 1919-1947 तक काग्रैस ने पूर्ण स्वराज्य की मांग की जिसके नेता बने - महात्मा गाँधी । इन्होंने अहिंसात्मक आन्दोलन पर बल देकर सम्पूर्ण जनता को इस आन्दोलन से जोड़ दिये । इस पुकार राजनीतिक जान्दोलन का पूर्ण विकास कांग्रेस की स्थापना के साथ ही होता है।

å3å साहित्यिक वेतना :

पश्चिमी सभ्यता के सम्पर्क में आने के कारण देश के वातावरण में काफी परिवर्तन का गया था। ज्ञान - क्लिन की दिनोदिन वृद्धि हो रही थी। ऐसे वातावरण में परम्परागत धार्मिक शिक्षा समाज में अपनी पैठ नहीं बना पा रही थी। इसलिए वर्तमान साहित्य विषय और शेली दोनों केनों में परम्परागत साहित्य से भिन्न बना। और इस विभिन्नता के लिए तत्का लोन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक सुधारवादी भावनाएं मूख्य प्रेरक बनी । अप्रैजों ने अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी बनाया । भारत में इस पुकार की भाषा का जान हो जाने वे परिणामस्वरूप अंग्रेजी शाहित्य से भी परिचय हुआ । जिसका नतीजा यह हुआ कि रीतिका लीन - शृंगारिकता, रीति निस्पण, अलंकार प्रवृत्ति के पृति अनावश्यक मोह इत्यादि प्रवृत्तियां के पृति साहित्यकारों का मोह भंग हुआ। क्यों कि ये गतिक्शील वर्तमान युग में प्रासागिक नहीं लग रही थी।

बंग साहित्य ने सर्वेप्रथम अपने युग की संवेदनाओं को अपने में समेटा अतः नवजागरण कालीन को ध सर्वप्रथम बंगला साहित्य में ही देखने को मिलता है।

नृत्य वंग साहित्य में मूख्य विशिष्टताएं उभरकर सामने आयीं -

- 🐉 🖟 मानव तथाः 😬 मानव शिक्त पर अविचलित विश्वास ।
- अपनी अर्त्तनिहित मानव शिक्त के प्रति प्रबल शृहा -संवेतन आ तम
 मर्यादा बोध।
- §3 है सब तरह के संस्कारों से जिल्ला मध्य युगीन दृष्टिकोण के पृति
- अवस्थ वात्म चेतना, आत्म विश्वास तथा आत्म प्रतिष्ठा की स्वस्थ तथा विलष्ठ अभिव्यक्ति।

इस प्रकार सर्व आरतीय ऐक्य से देश प्रेम की भावना के नये यूग को अलंकृत किया। जातीय अभ्युदयान की विशाल चेतना से शिक्षितों के ह्दय आ लोकित हुए। सीधे अंग्रेजों से यह भावात्मक परिवर्तन सम्भव नहीं हुआ। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से यूरोपीय प्रभाव से समस्त सामाजिक तथा साहित्यक प्रक्रिया में परिवर्तन आ गया।

बंग साहित्य में सर्वपृथ्म रंग लाल वन्धोपाध्याय ने भारतीय जीवन को नवीन सम्भावनाओं को रेखां कित किया । वैसे बंगला साहित्य में स्वदेश प्रीतिमूलक कविता सर्वपृथ्म ईश्वर चन्द्र गुप्त ने किया किन्तु यहाँ पर नवजागरण अस्पष्टस्प में था उसका स्पष्ट स्प से पृस्पट्टन रंग लाल पन्धोपाध्याय के साहित्य में मिलता है। रंग लाल पन्धोपाध्याय ने राजस्थान के इतिहास से विषय गृहण किये। उन्नीसवी राता ब्दी के जातायता बोध की पेरणा को व्यक्त करने के लिए उन्होंने इन कहानियों का आश्रय लिया - पदिमिनी उपाध्यान, सुर -सुन्दरी दर्भ देवी तथा काज्यिकावेरी उनके प्रमुख का व्य हैं। रंग लाल के का व्य का मुख्य स्वर देश प्रेम और स्वाधोनता प्रियता है यधिप कि इंश्वर चन्द्र गृप्त के का व्य में देश प्रेम था किन्तु यह देश प्रेम स्वाधीनता प्रदित तक नहीं पहुँच सका। उनकी दृष्टि में भारतीय समाज की रोति - नीति श्रेष्ट थी। पाश्चात्य प्रभाव से उन्होंने विकार और पतन देखा था किन्तु रंग लाल का दृष्टिकोण अधिक व्यापक था।

बंगाल का नवजागरण माइकेल मध्यदन दत्त के काव्य में पूर्णता प्राच्त करता है। उन्होंने अपने साहित्य में निम्न मान्यताएं स्थापित की।

- १। १ मातृभाषा तथा भारतीय पुराण में विश्वास।
- १२ श्रे मानवता की शक्ति पर अटल विश्वास ।
- १३१ यूरोपीय साहित्य तथा भारतीय साहित्य का ज्ञान तथा पाश्चात्य विशिष्टता केग्रहण किया ।

बंगला साहित्य के क्षेत्र में उनका पदापण एक नाटक कार के रूप में होता है। उनका प्रथम नाटक शर्मिक्टा है। 859 में " एकेइ कि बले सभ्यता" 1860 तथा पद्मावती नाटक 1860 में प्रकाशित हुआ । 1861 में उनकी सर्वप्रेष्ठ रचना " मेद्यनाद क्थ " का व्य प्रकाशित हुआ । जिसमें समाज संस्कार विभिन्न्नी पृंयासों में नारी व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा, चिर अवहेलित नारी का स्वाधीन स्वतन्त्र विकास और नारो व्यक्तित्व के प्रति शृहा तथा उसके प्रति मानवता बोध जैसे जीवन के शुभ प्रश्न उद्धाटित किये गये हैं।

इसके बाद परवर्ती कि क्यों में हेम चन्द्र वन्द्योपाध्याय शिव्वनाथ शास्त्रो नवीन चन्द्र सेन, इंशान चन्द्र वन्द्योपाध्याय इत्यादि कि क्यों ने नकजागरण कास व्देश अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रेषित किये। कालान्तर में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस प्रवृत्ति का पूर्ण निवाह किया।

राजाराम मोहन राय ने भारतीय धर्म का असारता को दूर करने का प्रयास किया । ईरवर चन्द्र किया सागर ने भी शिक्षा और समाज संस्कार में पृतृत्त हुए थे। महिष देवेन्द्र नाथ टैगोर भी इसी समय सामाजिक तथा धार्मिक किवारों का परिष्कार कर रहे थे इन सब सार्थक -प्रयासों के परिणामस्वस्य बांग्ला नाद्य केन्न में भो परिवर्तन आया । इस समय दो प्रकार के नाटक लिखे गये। पौराणिक तथा लोकिक आख्यान पर आधारित । १८६ विध्वा विवाह, बह विवाह, बाल-विवाह, देखे, अशिक्षा, धार्मिक अञ्चर इत्यादि सामाजिक दोषों पर आधारित

नील दर्पण में सर्वप्रथम राष्ट्रीय भावना दिखलायी पड़ती है।

माइकेल मधुनूदन दत्त, बिक्न चन्द्र चट्टोपाध्याय, ईरवरचन्द्र विधासागर, रवीन्द्रें नाथ टैगोर इत्यादि पृतिभाशाली साहित्यकारों के स्पर्श से नवजागरण सम्पूर्ण भारत में ग्राह्म होता जा रहा था। शरतचन्द्र के जन्म के समय \$1876 ई0-1938 \(तक नवजागरण समग्र स्प से पूरे देश में पेल गया।

बंग साहित्य जब अपने रूप विधान में नवजागरण को पूरी तरह से समेट लिया तो उस प्रवृत्ति से हिन्दी साहित्य भी विचित नहीं रह सका । हिन्दी में नक्जागरण का प्रवेश द्वार बना भारतेन्द्र बाबू हरिश्चन्द्र का साहित्य। इसके दो कारण है' - पथम तो यह कि ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जब भी बग्रस आते भारतेन्द्र से मुलाकात बराबर होती रहती। दूसरा कारण यह कि इनके पूर्वज सेठ जमीचन्द बंगाल के ये इसलिए बंग भूमि का संस्कार इनके खत में समाहित था । जब सम्पूर्ण देश बंग पान्त के नेतृत्व में करवंटे बदलने लगा तो हिन्दी प्रदेश भी अपने को इससे नहीं बचा सका । इसका परिणाम यह हुआ कि भूगोरिक्ता, रातिबद्धत , तथा दरबारी-पन में कभी आ गयो तथा राष्ट्रंप्रेम, भाषा प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम इन साहित्यकारों के मन में पैदा हुआ। इन्होंने रचना वो के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान भी पुस्तुत किया । क्रीतियों पर करारा पृहार किया । इस समय राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, हास्य- व्याय, भीवत परक, समस्यापृति

इत्यादि विषयों से सम्बन्धित साहित्य सृष्टि हुई इसके साथ ही बंग साहित्य के अनुवाद भी हुए ।

जिस नवजागरण की नींव भारतेन्द्र युग में पड़ी थी उस पर भव्य महल बनाने का कार्य दितीय युग में प्रारम्भ हुआ । राष्ट्रीयता का वास्तिवक ओज दिवेदी युगीन किवता में ही देखने को मिला है। जहाँ भारतेन्द्र युग में राष्ट्र प्रेम हत्का सा धुम्ला लग रहा था। राज भिन्त की भावना लोगों के अन्तस में थी। अंग्रेज राज सूख साज कहते थे किन्तु चिन्ता भी भारतीय आर्थिक व्यवस्था के प्रमु होने के कारण " पे धन विदेश चिल जात रहे अति ढवारी " वहाँ युग में पराधीनता

औद्योगिक - विकास ==========

क्रीज़ों के पूर्व भी भारतवर्ष न्यर कई विदेशी शासक शहसन किये किन्तु इन विजेताओं ने केवल भारतीय राजनीतिक शिक्तयों को ही क्षित पहुँचायी। देश के आर्थिक टॉचे में कोई बुनियादी परिकर्तन नहीं हुआ। उनका राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण भारतीय हो गया। किसान, दस्तका और व्यापारी क्यने जीवन को पहले जैसा ही व्यतीत करते रहे। ग्रामीण क्ष्मंव्यवस्था में भी कोई बुनियादी परिकर्तन नहीं हुआ।

अंग्रेजों ने न केवल भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर आक्रमण किया बिल्क यहाँ को अर्थव्यवस्था को भी नष्ट किया। पहला आक्रमण यहाँ के हस्तिशित्यों पर हुआ। 1813 के बाद अंग्रेजों ने भारत पर एक्तरफा मृक्त व्यापार की घोषणा कर दी। जिसके परिणाम स्वस्प ब्रिटिश विनिर्मित वस्तूर विशेष कर सूती वस्त्रों की भारत में भरमार हो गयी। ये वस्त्र शक्तिशाली मशीना दारा बनाये गये ये इनकी पृतिद्वन्दिता में भारतीय हस्तकरघा से बने हुए वस्त्र पीछे हो गये।

भारतीय रेल विभाग के स्थापित हो जाने के कारण अँजों के ये वस्त्र सम्पूर्ण भारत में तेजी से पैलने लो । इनका प्रभाव गाँवों में भी पड़ने लगा । सूत कातने तथा सूत बुनने का उद्योग सबसे ज्यादा व्यतिग्रस्त हुआ । लोहा, मिद्टी के बर्तन, शीशा, कागज, धातु, जहाजरानी, चमड़ा शोधक तथा रंगाई का कार्य भी नष्ट होने लगा । ईस्ट इण्डिया कम्पनी और उसके कर्मचारियों ने बंगाल के दस्तकारों को बाजार से सस्ते दर पर बस्तु बेचने के लिए वास्य किये जिसके परिणाम स्वस्प दस्तकार अपना पहतीनी पेशा छोड़ने को बाध्य हुए ।

इसके साथ ही भारतीय वस्तुओं पर ब्रिटेन तथा यूरोप में उच्च आयात शुल्क लगा दिये गये जिसके परिणाम स्वस्य 1820 के बाद यूरोपीय बाजार भारतीय वस्तुओं के लिए लगभग बन्द से हो गये। वे भारत से मात्र क्यास आर चमड़े जैसे कच्चे मालों का आयात करने लगे जिसके कारण इनको कीमतें भी बदने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि यह कच्चा माल भी महंगा होता गया तथा भारतीय व्यापारी या हस्तिशिली इनको खरीदने मे असमर्थ हो गये। इस प्रकार भारतीय उद्योग धन्धो का दिन - प्रतिदिन हमस होने लगा। ये हस्तिशिली तथा दस्तकार वैकि त्यक रोजगार के स्प में कृषि की अपनाये। इस प्रकार कृषि पर लोगों की निर्भरता ज्यादा बद्द गयी।

ब्रिटिश शासन के अन्तेंगत किसान धीरे - धीरे दिर होते गये। रैयत-वारी और महालवारी केनों में भूराजस्व का एक तिहाई से लेकर आध्या तक होता था। भूराजस्व को रकम वर्ष प्रतिवर्ष ब्द्रती गयी। भूराजस्व की रकम वस्नूलने के तरीके ने इसको और भी भयकर बना दिया। राजस्व की बकाया रकम वस्नूल करने के लिए उसकी जमीन की निलामी करनी शुरू की दी। किसान इस राजस्व को जमा करने के लिए महाजन से ब्याज पर कुछ धन ले लेते थे। अथवा अपनी कुछ जमीन इनके पास गिरवी रख देते थे। धीरे - धीरे महाजन इस जमीन कामालिक बन जाता था। क्योंजों के नियम भी इन्हीं महाजनों, सेठों की सुरक्षा के लिए बन्हों थे। बाद तथा अकाल के समय भी इनको राजस्व भरना पड़ता था।

उन्नीसवीं सदी में महाजन ग्रामीण क्षेत्र का अभिशाप बन गया । किसानों ने यही समक्षा कि ये महाजन अंग्रेजों के शोक्षण तन्त्र के महत्वपूर्ण अस्त्र हैं। इसलिए 1857 में जहाँ भी किसानों ने विद्रोह किया उसका पहला निशाना था महाजन । 1793 में स्थायी बन्दोवस्त के कारण उंची बोली लगाने वालों को राजस्व क्सली का अधिकार मिलने लगा । इस राजस्व का 10/11 भाग सरकार ले लेती यो । इससे बंगाल के आधे अमीदारों की भू सम्मित्त सोदागरों तथा धनी वर्गों के हाथ में चली गयी । उत्तर मद्रास तथा शेष मद्रास में स्थायी बन्दोवस्त तथा रेयतवारी बन्दोवस्त के कारण जमीदारों के उपर तबाही बरपने लगी । सरकार कृषि में सुधार करने का कोई प्रयास नहीं किया । पुराने दंग से ही देती होती रही । जबकि कृषि पर निर्मरता बदती गयी जिसके परिणामस्वस्प कृषकों की हालत स्माब होती गयो ।

हस्तिशिष्य की तबाही के परिणामस्वरूप कृषि पर दबाव बढ़ा तथा कृष्कों की तबाही के परिणामस्वरूप श्रीमकों की संख्या बढ़ती गयी। कृषक मजदूर बनते चले गये। इस आ कि विमन्तता को दूर करने का एक ही रास्ता था - भारत में महीन युग का प्रारम्भ करना। औद्योगिक विकास के लिए पूँजी की आवश्यकता पड़ी इस समस्या का निराकरण अँग्रेजों की सहायता के बिना असम्भव था। इत: उनते पूँजी लेकर भारत में महीनी उद्योगों का पृचलन हुआ। पहली क्यां मिल काव सजी नाना भाई ने 1853 में बम्बई में प्रारम्भ को। तथा जूट मिल 1855 में रिशरा

इसके पश्चात उन्नीसर्व 'सदी के उत्तरार्ध तथा बीसवी' शदी के प्रारम्भ में क्मास की ओटाई तथा चावल, आटे, इमारती लक्डी की मिंभ, चर्म शोधनालय, उनी कमड़े के कारखाने, कागज और चीनी को मिले, लोहा और इस्पत्ता के कारखाने तथा नमक, सीमेण्ट, कागज, दियासलाई, चीनी और शीशा उद्येखग विकसित हुर ।

किन्तु इन उधीं ग धन्धों पर ब्रिटिश पूँजी का हो स्वामित्व या । विदेशी पूँजीपतियों को भारतीय उधों ग में पूँजी लगाना अच्छी सम्भावना पैदा कर रहा या । इसिल्य विदेशी पूँजीपित यहाँ पूँजी लगाने में सह मैं तैयार हो जाते थे। अधिकतर बैंको पर ब्रिटिश अधिकतर के ही प्रभाव था इसिल्य उन्हें कई लेने में काफी किन्ताई होती यी उँचा ब्याज देना पड़ता या । यह ब्याज विदेशियों को काफी आसान किस्तों पर मिन जाते थे। भारत के पास न ही अपनी कोई टेक्नालाजी थी और न ही बाहर से मशीन हो मँगा सकते थे। इसिल्य विदेशी ही भारत में उद्योग धन्धों की स्थापना कर सके।

भारत में ओद्योगिक विकास के परिणाम स्वस्प औद्योगिक पूँजोपति तथा आधिनिक मजदूर वर्गों का जन्म हुआ । ये नयी टेक्नो लोजो, आर्थिक संगठन की नयी प्रणालो, नये सामाजिक विचार, नयी परम्पराओं ,रीति-रिवाजों, जीवन के नये तौर - तरीकों से परिक्ति हुए ।

इसके पश्चात सरकार ने इनको संरक्षण देना शुरू किया । मजदूरों का शोषण होने लगा । काम ज्यादा लिया जाने लगा । इसका विरोध मिल मजदूरों ने यूनियन बनाकर मिलों में आगज ने तथा तोड़-प्लोड़ करना प्रारम्भ किया । किन्तु इसका यह परिणाम हुआ कि भारत में आधुनिक टेक्नो लोजी, चिकित्सा- विकान इत्यादि आधुनिकतम विवार- धाराओं का प्रारम्भ हुआ ।

दितीय अध्याय

हिन्दी प्रदेश में नवजागरण

नवजागरण की उद्दाम तन्गों में सम्पूर्ण देश प्रवाहित हुआ । बंग प्रान्त से प्रारम्भ होकर महाराष्ट्र तथा ग्जरात से होता हुआ उत्तर भारत में भी कालान में इसके चिन्ह स्पष्ट होने लो । उत्तर भारत में नवजागरण की प्रारम्भिक सीमा 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन से मानी जा सक्ती है ।

" हिन्दी प्रदेश में नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से शुरू होता है। इस स्वाधीनता संग्राम में मामन्तों ने आन्दोलन का नेतृत्व नहीं किया अपित भारतीय सेना के नेताओं ने बागड़ों समहाली। राज्य सत्ता को समस्या को सामन्तों के हित में नहीं. जनता वे हित में हल करने का प्रयास किया गया था। जफ्र बहाद्र शाह/केसारे देश का बादशाह घोषित किया गया था । किन्तु वास्ति उक सत्ता बाद्याह या उसके अन्यायियों के हाथ में नहीं थी. वह सैनिकों के हाथ में थी। वहीं - वहीं कीजों ने जमीदारों और साहकारों को नये अधिकार दिये थे अंगुजों का शासन खत्म होते ही इनकी व्यवस्था भी उलट दी गयी । जो किसान फोज में भरती हो गये ये तथा सेना के सिपाही तथा सुबेदार के रूप में काम कर रहे थे। उन्हीं लोगों ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। सामन्त देशी शिक्तयों के दबाव में आकर अंग्रेजों से युद्द किया।" इसका नेतृत्व अकिसानों ने किया जो परेज

 ^{ा॰} डा० रामिवलास शर्मा - आचार्य महावीर प्रसाद डिवेदी, और हिन्दी व्यक्त परण भूमिका पृ०- १

^{2 -} वही - 9

में सिपाहियों और सुबेदारों के रूप में काम कर रहे थे। अनेक छोटे - बड़े किसानों सामन्त इनके सहायक थे, संग्राम के नेता नहीं। अक्सर वे देशी सेना के दबाव में आकर अंग्रेजों से लड़े। फोज के भीतर वाले किसानों के साथ गाँवों के गैर-फोजी किसान थे, और इन दोनों ने किलकर जो हिय्यारबन्द लड़ाई चलायी कैसी लड़ाई न तो सन् 1857 से पहले कभी चलायों गयी थी, और न उसके बाद कभी चलायी गयी। लड़ने वाले किसानों में केवल उच्च वर्ण के हिन्दू नहीं थे। उनके साथ निम्न वर्ण के सेकड़ों आदमी थे। हिन्दुओं के साथ सेक्डों मुसलमान थे। धर्म और वर्ण की सीमाएं तोड़कर ये जा लाखों किमान एक ही लड़ाई में शामिल हुए, उसका बड़ा गहरा असर उनकी संस्कृति पर पड़ा और यह असर उनके लोक गीतों पर दिखायी देता है।"

इस आन्दोलन में हिन्दू और मुसलमान दोनों शामिल थे। इस प्रकार
यह एक असम्प्रदायिक राष्ट्रीय रूप था। सन् 1857 का स्वाधीनता संग्राम
अग्रेजों द्वारा प्रेरित सम्प्रदाय बाद की सबसे बड़ी पराज्य थी। यह आन्दोलन
हिन्दी भाषी केनों में हुआ। इसका दमन करने के लिए अग्रेजों ने अहिन्दी भाषी
केनों के सैनिकों का प्रयोग किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी इजारेदार व्यापारियों की कम्पनी थी। ये स्वच्छन्द प्रतियोगिता के विरोधी थे। भारत में अग्रेजों के

[।] हिन्दी नवजागरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विदी - भूमिका - 10

मुख्य सहायक यहाँ के सामन्त थे। " सन् 1857 - 58 में क्ष्मीर में लेकर हैदराबाद तक और महाराष्ट्र - राजस्थान से लेकर बंगाल तक के जमींदारों और राजाओं नवाबों ने अंग्रेजों की मदद को। स्म, प्रांस तथा ब्रिटेन सर्वत्र पित्रियों ने सामन्तों से सम्झौता कर लिया था। इसका प्रभाव भारत पर भी पड़ा था। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों राज सब्से बड़े जमोंदार को भूमिका निर्वाह रहा था। यह नया जमींदार प्रांने जमींदारों से कहीं अधिक कुर और शोषक था। अंग्रेजों की आमदनी का मुख्य छोत थी। जमीन पर किसान की मेहनत। सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास का विस्तृत विवरण है श्रेप के कागजात है में सुरिक्षत है।

हिन्दी प्रदेश में नवजागरण का दितीय सोपान - भारतेन्द् युग माना जा सकता है। 1868 में " किव-ववन- सुझा " नामक पित्रका निकाली। इस पित्रका में " लेवी प्राण लेवो दें नामक ब्रिटिश विरोधी लेखध्या था। भारतेन्द्र का साहित्य स्वतन्त्रता संग्राम से बहुत प्रभावित है। इनके माहित्य में किसानों को लक्ष्य करके इनको संगठित और आन्दोलित करने का सबसे अधिक प्रयास किया गया है जो गदर के इसतहार बहाद्रशाह जफर के नाम जारी किये गये थे उसमें, व्यापारियों और सरकारी नोकरों कारीगरों को स्थित का विश्लेषण किया गया है। हिरशचन्द्र अपने साहित्स में इन सब बातों को दृहराते हैं। 26 फरवरी 1874 की किव-वचन-

सुधा है में लिखा " क्या यह अनीति नहीं है कि अनुमान दो सो वर्ष हुए इसका अधिकार इस देश में है। इन्होंने हमारे धनधा न्य की वृद्धि में कोई उपाय नहीं किया और केवल अपनी भाषा सिखाया और सब व्यापार और धन सब अपने इस्तगत किया न्या यह खेद की बात नहीं है कि एमको कला - कोशात्य में विमुख रखा और आप स्वत: व्यापारी बनकर सब देश भर का धन और धान्य अपने देश में ले गये।"

हिन्दुस्तान में अंग्रेजी माल के आने से यहाँ के कारीगर, जुलाहे, बढ़ ई, लुहार, चमार सब बेकार हो गये। इस प्रकार यहाँ का कारीगर भिखारी बन गया। 9 मार्च 1874 की किंव वचन सूझा में हिरिस्चन्द्र कहते हैं "कपड़ा बनाने वाले, मूर्त निकालने वाले, खेती करने वाले आदि सब भीख माँगते हैं - खेती करने वालों की यह दशा है कि लंगोटी लगाकर हाथ में तुम्बा ले भीख माँगते हैं, और जो निस्थम हैं उनको तो अन्न की भान्ति है।"

भारतीय स्वधीनता - अन्दोलन में स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की भूभिका महत्वपूर्ण रही है जो गदर के इश्तहार बाँटे गये थे दिल्ली के उसी इश्तहार में कहा गया है कि बादशाही हुकूमत कायम होने पर अंग्रेजों का जालफरेब खत्म कर दिया जायेगा और हर चीज का व्यापार करने का अधिकार इस देश के सौदागरों को होगा। अपमा माल लें जाने के लिए भापसे चलने वाले जहाज और भाप से चलने वालो गाड़ियाँ सरकार उन्हें सुलभ करेगी। जिन

सोदागरों के पास अपनी पूंजी न होगी, उन्हें सरकारी खजाने सेसाहायता दी जायेगी। राजाओं और रईसों का शारा काम देशी कारीगरों को दिया जायेगा। गदर में इस बात पर बार - बार और दिया गया है कि वे अंग्रेजों की बातों पर भरोसा न करे परन्त, अब अंग्रेजी माया छल और घात दृष्टि में आने लगा क्यों कि हम लोगों को केवल अंग्रेजी भाषा ग्राप्त हुई परन्त, कला कोशल के क्षेत्र में हम लोग भलीभाँति अज्ञान सागर में निमग्न हुए हैं इसमें सन्देह नहीं। कृ किव- वचन - सुधा हु

गदर का उद्देश्य सारे देश के लिए स्वत न्त्रता प्रदान करना था। भारतेन्द्र ने 6 जुलाई 1874 की कवि - ववन - सुधा में लिखा " जिस प्रकार अमेरिका उप निवेशित होकर स्वाधीन हुआ वैसे ही भारत वर्ष भी स्वाधीनता लाभ कर सकता है।"

1857 के राष्ट्रीय संग्राम का प्रभाव न्यूना धिक देश के प्रत्येक भाग पर पड़ा था। कितपय विद्वानों का मत है कि देश का नवजागरण अंग्रेजी राज के नियामतों का नजीजा था, और गदर में सिपा ही और सामन्त अपने स्वायों के लिए लड़े। कुछ मार्क्सवादी विचारकों का कहना है कि अंग्रेज प्रानी पटित का नाश कर रहे थे और नयी पहित को जन्म दे रहे थे। प्रानी पटित के नाश से अनेकों कारीगर बेकार हो गये और उसी प्रातनवादी अर्थव्यवस्था के

लिए संघर्ष किया किन्तु ये किहान यह भूल जाते हैं कि यदि संग्राम का यही कारण होता है तो महाराष्ट्र, तिमलनाड़, और बंगाल में क्यों संग्राम नहीं हुआ क्यों कि इन प्रदेशों में अंग्रेजों का सासन पहले ही हो गया था। हिन्दी प्रदेश तो बहुत बाद में उनके साम्राज्य में मिलाया गया।

खेंग्रेजों ने प्रानी सामन्तवादी व्यवस्था नष्ट करके नयी सामन्ती व्यवस्था कायम की। प्रानी बड़ी - बड़ी रियासतों के राजाओं और नवाबों को उन्होंने अपनी कठण्डालियां बनाकर रखा और नयी जमींदारियां कायम कीं, जहां वे जमींदार को बेदखल कर सकते थे। माल गुजारी बहुत बढ़ा दी और किसान बुरी तरह कर्ज के बोक्ष से दब गये। भारत की सब्से बड़े जमींदार बन गये। अंग्रेजों ने साहुकारों और जमींदारों के तथा अपने हितों की रक्षा के लिए उन्होंने क्वहरी अदालत से लेकर पुलिस और पर्वेज तक सारे साधनों का पूरा उपयोग किया। इस प्रकार प्राने सामन्तवाद में किसान गरीब रहकर भी जिन्दा बने रहते थे। अंग्रेजी राज्य कायम होने पर ये किसान लाखों की संख्या में भूखों मरें।

हिन्दी नवजागरण का तीसरा चरण महार्वोर् प्रसाद हिवेदी के युग में प्रारम्भ होता है। जिसका निद्धान "सरस्वती पत्रिका " के प्रकाशन में होता है। आचार्य दिवेदी ने इस पत्रिका के माध्यम से पहला महत्वपूर्ण कार्यीक्या। कि भाषा परिष्कृत हो, किन्तु इसके साथ ही इस पत्रिका सामाजिक योगदान को भी भुलाया नहीं जा नकता । यथा योरप के क्रु मदान्त मन्ष्य सन्जंते हैं कि परमेशवर ने एशिया के निवासियों पर आधिणत्य करने को लिए दो उनकी मृष्टि को है। जिस एशिया ने बुढ़, राम, कृष्ण, ईशा और कन्फ्यूसियल, रबान्ट्रनाथ और जगदीश चन्द्र वसु कोउत्पन्न किया है, उसने दूसरों को गुलामों के ठेका नहीं है रहा।"।

छुआछूत नवजाशरण का दूसरा अंत्था। आचार्य हिवेदी ने इस पर अपनी जोरदार टिप्पणीपुस्तुत की दसदिनिया को सृष्टि एक ऐसे ईस्वर ने को है। जिसकी कोई जाति नहीं, जो उंच-नीच का कायल नहीं, जो ब्राहमण अब्राहमण, चाप्ठालों और कोड़े-मकोड़ों तक में अपनो सत्ता पुक्ट करता है। छुआछूत माने वालों को ऐसे भूष्ट ईस्वर का संसार छोड़ देना चाहिए।

नक्षागरण के प्रथम विन्दु के रूप में भारत की निर्धनता के कारणों पर िवार किया गया । इस समय लिखे गये शास्त्रों का मूख्य उद्देश्य है देश-दशा के प्रृंति शिक्ति जनों को मजग करना । "हिन्दुस्तान सम्पत्ति होन देश है। यहाँ सम्पत्ति को बहुत कमी है। जिधर आप देखेंगे उधर हो आँख को दिरद्वे-देक्ता का अभिनय किसो न किसो रूप में अक्ष्य हो देख पड़ेगा । परन्तु इस दुर्दमनीय दारिद्व को देखकर भी कितने आदमी ऐसे हैं जिनको उसका कारण जानने की उत्कण्ठा होती है। यथेष्ट भोजन-वस्तु न मिलने से करोड़ी आदमी जो अनेक प्रकार के कष्ट पा रहे हैं जून 1924 - सरस्वती

[ं] अंगस्त 1924 सरस्वतीं

गलो-क्वों में, सब किही, धनाभाव के कारण जो कार्राणक कुंन्दन सुनायी पड़ता है। उसके बन्द करने का क्या कोई इलाज नहीं १ हर गाँव और हर शहर में जो अस्थि वमिविशिष्ट मन्ष्यों के समूह आते-जाने देख पड़ते हैं उनको अवस्था उन्तत करने का क्या कोई साधन नहीं १ बताइये तो सहो, कितने आदमी ऐसे है। जिनके मन में इस तरह के प्रश्न उत्पन्न होते है। १

इस प्रकार नवजागरण का पृथम रूप भारतीय निर्धनता का कारण खीजा गया। इस निर्धनता का कारण क्षेणी राज माना गया। इस देश में बंग्रेजों के प्रधारते हो- उनको सत्ता का सूत्रपात होते ही- यहाँ की स्थिति में पेरपार शुरू हो गया। यहाँ की सम्पत्ति इंग्लेण्ड गमन करने लगो : हुइमत के बल पर इस देश के व्यापार की जड़ मेंक्राराधात होने लगा।

बंगुजों को आने भारत की सम्पूर्ण जमोन पर बंगुजो सरकारका कब्जा हो गया।
पहले जमीन को जोतने वाला को बहुत से अधिकार प्राप्त ये किन्तु ब्रिटिश सरकार
में उन्हों ये अधिकार छिन गये। "प्राने जमाने में, हिन्दुस्तान में, जमीन पर साजा
का स्वामित्व न था। हर आदमी अपनी जमोन का मालिक था। राजा सिर्ण उसकी
जमीन की पैदावार का छठा हिस्सा ले लिया करता था। बस राजा का सिर्ण इतना
ही हक था वह एक प्रकार का कर था, जमीन का लगान नही। "ईस्ट इण्डिया
कम्पनो के व्यापारियों ने जैसे व्यापार में अपना इसारा कायम किया था, वैसे
ही उन्होंने जमीन पर इसारा कायम िक्या। दोनों तरह के इसारे से पूँजीवादी

^{।- &}quot;सम्पति शास्त्र-महावीर प्रसाद हिवेदी, भूमिका।

^{2.} सम्प्रित शास्त्र, महावीर प्रसाद द्विदी।

विकास में बाधा पड़ती थी । अंग्रेज यहाँ की जमीन को अपनी जमीन सम्झने लो।" यहाँ की गवर्नमेण्ट ने जमीन पर अपना व्यलकर लिया है। वह कहती है यहाँ की जमीन उसी की है - वहीं उसकी मालिक है। "लगान न देने पर किसानों को बेद्धल किया जाने लगा।" इस परिवर्तन हारा ब्रिटिश विजेताओं की राज्य सत्ता, व्यवहार में, जमीन की आखिरी मालिक बन बैठी और किसान आसामियों के बराबर कर दिये गये. जिन्हें लगान न खदा करने पर बेदखल किया जा सकता था. अथवा उसकी जमीन उनसे छोनकर सरकार के नामजद जमींदारों को दी जा सक्ती थो. और इन जमींदारों को भी अपना हक राज्य से मिला था. और मालगुजारी न देने पर इन्हें भी देसे हो बेदबल किया जा सकता था।" भूमि व्यवस्था के प्रति एक किसान को प्रतिक्रिया एक औज से इस प्रकार की ।" साहब, जंगल पेड, पोधे, निदयाँ, क्रं, सारे गाँव, सभी तीर्थस्थान सरकार के हो गये हैं। उसने सब कुछ ले लिया है. हर चीज ले लो है। " जमीन पर अंग्रेजों को कर लेना चाहिए किन्तु लगान नहीं इस बात का विरोध तत्कालीन विद्वानों ने किया । किसान को ही जमीन का सच्चा मालिक महनने के पक्ष में में।

[।] सम्पत्ति शास्त्री , पृ० - 109

^{2.} इोण्ड्या दुडे, 1947, पृ० - 189

उ॰ लो प्सेण्ट्रल इण्डिया ड्येरिंग द रिनेलियन आफ 1857, एण्ड 1858

जमीन पर अंग्रेजों के इरारे का एक परिणाम हुआ कि ब्रिटिश सरकार ने किसानों से मनमाना लगान वसल किया । जिसके परिणामस्वरूप धनी किसान भी खाने भर के लिए भी अन्न नहां बचा पाते थे। आप देहात में जाकर देखिये । 100-50 किसानों में कहां एका ध आपको ऐसा मिलेगा जिसे रोटी. कपड़े को तकलीफ नहीं।" मालावार जिले में तो मालगुजारी 84,85 और 105 फीसदी तक वसूल की जाती थी। किसानों का ही शोषण सबसे ज्यादा होता था। अरीजों को मूल्य आमदनी यहाँ अपना माल बेचकर न होती थी. मूल्य आमदनी होती थी किसानों की महनत का फल छीनकर उसका उसना आहं। भी उनके लिए न छोड़कर जिससे वे जिन्दा रहते। शायद इसी से 1891 और 1901 के बीच मध्य पदेश में कोई दस लाए से भी अधिक आदमी भूखों मर गये।" बिटिश सरकार एक तरफ लगान बदाती थी दूसरी तरफ उसे वसूलने में सहती भी करती थी। भारतीय किसानों को लगान बदने के कारण हो कष्ट नहीं। बड़ी कड़ाई से लगान बदाने और वसूल किये जाने से भी उन्हें बहुत कब्ट मिल रहा है। "

[।] सम्पत्तिशास्त्र पृ० - । 36 , महावीर प्रसाद द्विदी ।

^{2.} वही प्0 - 132

उ॰ वही पृ० - 134

^{4.} ईरवरदास - अगस्त 1915, सरस्वती ।

लगान अदा करने के लिए किसान महाजन से कर्ज लेता है। ये महाजन मनमाना डंग से ब्याज तय करते थे ह्या कड़ाई से क्यूल करते थे। इस उगाही में सरकार महाजनों का साथ देती थी। इस प्रकार सूदखोर महाजन वर्ण का जन्म हुआ। लगान बदाने तथा उसे कड़ाई से क्यूल करने एवं उच्चेदर पर कर्ज देने का परिणाम होता था - मुख्मरी"। 1800 से 1825 तक सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत में दस लाख भारत-वासी भूखों मरे।"

जमींन पर इजारा औं जो था। इस इजारे से जो लूट का पैसा

मिलता उसमें से थोड़ा सा हिस्सा देकर अपनी मदद के लिए जमींदारों का एक

ताबेदार वर्ग तैयार कर लिया था। इस वर्ग के कारण किसानों का उत्पीक्न

और भी बद गया। अंग्रेज जो कानून बनाते थे उसमें जमींदार सर्व्या किसान होता

था। कियान पूरी तरह जमींदार का दास बनकर रहता था। वरना उसका

जीना दूभर हो जाता था। किसानी का मबसे बड़ा मन्त्र अपने जमींदार को

पुसन्त रखना है। " •••• अमींदार को सहानुमृति से किसान पर हर तरह की

रियायतें हो सकती है, पर थोड़ी सी अवड़ के कारण जमींदार के इशारे से,

[।] ईरवर दास, अगस्त 1915, की सरस्वती पत्रिका में।

^{2.} गंगाधर पन्त, जून - जुलाई 1918, सरस्वती पत्रिका में ।

किसान की जड़ खोदकर पेंकी जा सकती है।"

सरकार जमीदार, साहकार - ये सभी कियान की फसल में हिस्सा बॅटा ते ये। जो लोग कियानों के व्यवसाय से परिचित हैं उन्हें इस बात को बताने की आवश्यकता नहीं कि किस प्रकार एक ही बार 10 स्पया लेकर बेचारा कियान पृष्ठत दर पृष्ठत के लिए साहकार का गुलाम बन जाता है और ऐसी यंत्रणाएं केलता है कि मृत्यु की यन्त्रणाएं भी उनके साभने तुच्छ हैं। "कियानों के सामने समस्या थी यदि अच्छी खेती करते तो लगान बद्दा दिया जाता यदि अच्छी खेती न हो पाती तो लगान बेबाक हो पाना मृश्वकल हो जाता था। कर्ज लेना पड़ता। जिसे अदा करने में कियान के बेल-विध्या खेत सब बिक जाते थे। लोगों को भीख माँगने की नोब्स आ जाती थी।

शाही खर्च, सरकारो अफ्तरों की तन्द्रवाह, प्रोज तथा रेल बनाने हत्यादि कापूरा खर्च किसानों से ही वसूल किया जाता था। इस क्सूली का नाम था -होम वार्जेज। जो अधिकारी हंगलेण्ड वले गये थे उनकी भी फेंगन भारत से जाती थी। अंग्रेजों ने सिन्धिया से 1/2 करोड़ तथा हो कर से। करोड़ रूपये का कार्य लिया था तथा जब तक भारत में ब्रिटिश राज्य रहेगा तब तक हनको ब्याज मिलता रहेगा। यह धन किसानों से ही वसूल किया जाता था। नकजागरण का प्रमुख स्वर था - जमोन पर किसान का अधिकार हो।

अंग्रेजों के आने से पहले भारत प्रमुख नियातिक देश था । अंग्रेजों का अमेरिका उपनिवेश बन जाने के कारण ब्यापार प्रसार में सहायता मिली। ब्रिटेन और यूरोप के व्यापारियों ने पहले विश्व बाजार कायम किया, उसके बाद कारखान में मशीने चलायी। बाजार न होगा तो मशीनों से उत्पादन किसके लिए होगा। अंग्रेज पहले यहाँ का माल धरीद कर अपने यहाँ बेचते थे किन्त बाद में मशीनों के पयोग से सस्ता माल तैयार करके भारत में बैंचने लगे। भारतीय बाजार की वित की। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानी माल पर कड़ा से कड़ा कर लगाकर विलायत में उसकी आमदनी रोकी 2 और विलायती माल बिना कर. या बहुत थोड़ा कर लगा कर. हिन्दुस्तान में भर दिया । इसके परिणामस्वरूप भारत का स्थापार मारा गया । अंग्रेजों ने भारत का शोधण दो प्रकार से किया पहला - जमींदारी प्रथा के दारा तथा दूसरा पूँजीवादी प्रथा की द्वारा । जिसके अन्तीत विलायती माल भारत में बेचते थे। इसीलिए नवजागरण में दो प्रकार के निर्णय सामने आये लगानबन्दी और स्वदेशी आन्दोलन । एक तरफ किसान जमोन के लिए लड़े तथा दूसरी तरफ सारी भारतीय जनता विदेशी माल का विहिष्कार करे।

अंग्रेजों के व्यापार में कुछ भारतीय भी हिस्सा बँटाते थे। देश में विदेशी

[।] सम्पत्ति शास्त्र, - 281,-82, आचार्य महावीर प्रसाद दिवेदी ।

माल की खपत प्रतिदिन बद्दता जाता है। उसके बदले हिन्दुस्तान सिर्फ कृषि प्रसूत अनाज देता है। इस अनाज की यहां भी बड़ी जरूरत है क्यों कि भारत में बार - बार दुनिशा पड़ता है। दुनिशा के समय देश में आवाज अधिक हो तो जरूर ही सस्ते भाव बिके पर वह सात समुन्दर पार इंग्लैंग्ड भेज दिया जाता है और उसे पैदा करने वाले यहां भूओं मरते है। और भेजा न जाय तो हो क्या १ इंग्लैंग्ड की चीजों का अप जो बद्द रहा है, उसका बदला चुकाया किस तरह जाय।"

इस प्रकार पराधीन भारत में देश की औद्योगिक उन्नित क्सम्भव सी
लगने लगी। इंगलेग्ड की बनी हुई वीजों का भारत में बहुत अपत थी। इंगलेग्ड
में बनी हुई वीजों का यहां बेहद अप है। हित्दुस्तान का अधिकांश व्यापार
इगलेग्ड की मुद्रठी में है। •••• सूती हो नहीं उन्नी भी कपड़े, लोहे लक्डी और
चमड़े की चीजे, कागज, स्याहो, काँच का सामान, लिखने का सामान, किताबें
आदि सेकड़ों वीजों की स्था हिन्दुस्तान में है। इनका अप अधिक होने से इंगलेग्ड
का व्यापार दिनों दिन उन्नत होता जाता है और मुनाफे का अधिक उंश विदेशी
व्यापारियों को ही मिलता है।

सन् 1920 के असहयोग आन्दोलन में शारतीय उधोग धन्धों को विकसित होने का अवसर मिला । भारत के आधुनिक मजदूर वर्ग का जन्म भारतीय सवर्ष के

सम्पत्ति शास्त्र. 281. महावीर प्रसाद तिवेदी ।

कारण हुआ , अपना कच्चा माल डोने तथा भौजों को ले आने तथा ले जाने के लिए रेल्वे विभाग को स्थाना को । यदि भारतीय पूँजीवाद का विकास होता तो भारत को लाभ हो सकता था । मजदूर वर्ग के विकास में भी अग्रेज राज एक बड़ी बाधा थी । इसलिए मजदूरों का पहला क्तें व्या - भारत से अंग्रेजी राज का खातमा ।

ानवीं और 18वों सदी में अग्रेज व्यापारियों ने किन के कई देशों में व्यापार की परम्परा शुरू की । उत्पादन ब्दाने में आदिमियों की आक्रयकता थी । इसलिए अंग्रेजों ग्रेम्नानी और रोमन सौदागरों का अनुसरण किया जा कि गृलामों का व्यापार करते थे । पूर्तगाली इस धन्धे में सबसे आगे थे । गौरों को नस्ल शेष्ठ है, इस सिहान्त के साथ उसने वह धर्मान्धतता जोड़ दी कि ईसाई धर्म सब धर्मों से शेष्ठ है । और चूँकि गृलामों के गोरे व्यापारी ईसाई है, इसलिए ईसाई धर्म के अनुसार गृलामों का व्यापार करना वैध है । इस नरलवाद के शिकार अफ़ोको हबारी ही नहीं, भारत के आर्य और द्रिवड़ भी थे । यहो लोग कुली बनाकर दिक्षण अफ़ीका और अन्य देशों में दासों को तरह भेजे गये थे । गोरे और

[।] दिसम्बर । १। ३, सरस्वती , आचार्य महावीर प्रसाद हिवेदी

काले के देव ने वहाँ जो काण्य मवा रखा था उसे देखकर गाँधों को बड़ा दुइ हुआ । उन्होंने देखा कि उनके देशवासी गोरों को बस्ती में नहीं रहने पाते, उनके पास बाजारों में दुकाने नहीं खोलने पाते, होटलों और रेलों में उनके साथ नहीं बैठते पाते । पश्चव सम्भे जाकर उन पर नाना प्रकार के अत्याचार होते हैं । केंदियों के समान उन्हें अंगूठे का चिन्ह लगाना पड़ता है, गले में नम्बर लटकाना पड़ता है, 45 रूपये साल, नटाल प्रान्त में रहने के लिए टैक्स देना पड़ता है । जो लोग ठोके पर कुली बनकर वहाँ जाते हैं और खेतों और खानों में काम करते हैं उनकी दुर्गति का तो पारावार नहीं। "

इस रंग भेद नोति के खिलाफ गाँधो जो ने आन्दोलन चलाया । वहाँ की तथा विलायत की अंग्रेजी गर्वनमेण्ट से सब कुछ कहा गया, पर कुछ पल न हुआ । तब लाचार हो कर गाँधी और उनके साथियों तथा हजारों अनुयायिसी को फिर निष्क्रिय प्रतिक्षों करना पड़ा । इस समय गाँधी, उनकी स्त्री, उनकी लड़की , उनका लड़का – सारा कुटुम्ब हो जेल में है । हजारों हिन्दुस्तानियों से जेल भर गये हैं । त्यानों के बहाते जेलों में परिवर्तित कर दिये गये हैं । वहाँ के दियों को पेट भर खाने को नहीं मिलता । सुनते हैं, उन पर हन्हरों की मार पड़ती है, इस मार से एक आध आदमी मर भी गया है । तिस पर भी वे लोग वीरता से अनुचित कानून का प्रतिरोध करते हो चले बारहे हैं । हड़तालें हो रही हैं, भारतीय मजदूर काम धोड़ रहे हैं । सारी यातनाएं सहने को वे

को वे तैयार हैं। पर आत्म गौरव को वे नहीं छोड़ना चा इते। अन्यायपूर्ण कानून गोरे- काले का कृतिम भेद - नानना उन्हें स्वीकार नहीं। इंडे और जवान लियाँ और बच्चे तक उनका साथ दे रहे हैं। वे भी वेल में है। अन्य गांधी धन्य तुम्हारे साथी, अन्य तुम्हारे अनुयायी, धन्य तुम्हारा स्वामिशान, शारत में इस समय दक्षिणी अफ़ोका के इस पन्याय की बड़े स्नोर शोर से चर्चा हो रही है। वहाँ के पीड़ित देश - भाइयों के जिए वन्दे हो रहे हैं। उनकी मदद करना हमारा क्तें व्य है। नस्लवाद का जिरोध नवजागरण का प्रमुख अंग रहा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत के स्वतन्त्रता को लड़ाई अफ़ीका से हो श्रह्न हुई इसी समय 1913 में रवीन्द्रनाथ ानर को साहित्य के क्षेत्र में नोबुल पुरस्कार मिला इससे भारतीय जनता में आत्म सम्म न को भावना तेज हुई। जो वृही दिध्णी अफ़ीका में जाकर बस गये थे उन्होंने ही वहाँ पर हिन्दी भाषा का प्रवार किया। 1915 में दिया अफ़ीका के बर्नमाइट नगर में हिन्दी साहित्य सम्मेत्म का दार्किक अधिकान हुआ । इसके अतिरिक्त िका के गायना प्रान्त में भी दिन्दी का पुंचार हुआ। दिक्षणी अफ़ीका और गायना के मजदूरी ने हिन्दी को आत्म गोरव का प्रतीक माना।

[।] सरस्वती , 1913

इस पुकार हिन्दी का अन्तराब्द्रीय पुंसार हिन्दी पुँदेश के मजदूरों ने किया । मारिशस भी भारत के दास भेजे जाते थे । हिन्दुस्तानी दलाल गरीब अबलाओं को कलकत्ते पुसलाकर ले जाते थे । पित्र वहां से लोभ देकर मारिशस भेज दिये जाते थे । जिस अपमान के साथ हिन्दुस्तानी पुरुष और स्त्रियाँ 1834 से मारिशस में लायी जाती है , , उसका पूरी तरह से वर्णन करना मेरे लिए असम्भव है । इस समय मारिशस में पुत्र निर्मितियों का शासन था । अमेरिका में भी भारत-वासियों के साथ सौतेला व्यवहार हो रहा था । गोरे साम्रा ज्यवादी एशिया वासियों को निम्न पूँजी के मनुष्य कहकर उनसे धूणा करते थे । ब कहते थे, जहाँ हमारा राज्य नहीं, वहाँ आधुनिक सभ्यता का विकास नहीं हुआ ।

जापान और भारत का बहुत प्राना सम्बन्ध हैं। जापान अंग्रेजों की सहायता के बिना भी विकास कर रहा था, शिल्प, वाणिज्य, किनान और युद कला में जापान को बराबरी एशिया खण्ड में कोई भी देश नहीं कर सकता था। विदेशियों के प्रभुत्व से बचने के लिए जापान ने तय किया कि जिस बातों से ये विदेशी उससे बदे हुए हैं, उन्हें सीखना चाहिए। यह निश्चय करके जापान ने जाति- भेद को उठा दिया। सामाजिक दृष्टि से किसान और प्रधानमंत्री एक

जनवरी 1911 , "मयाँदा " िहन्दुस्तानी स्त्रियों की मारीशस में सोचनीय दशा
 डॉ० राम विलास शर्मा, महावीर पुसाद इविदी और हिन्दी नवजागरण. पृ०-48

हो गये। सब जापानी एक सूत्र में बंध गये। परस्पर शादी विवाह होने लो।" इससे भारतीयों ने महसूस किया कि इसी परम्परा के अनुसरण के द्वारा ही यूरोपीय का मुकाबला किया जा सकता है। मुद्ठी भर योरोपीय व्यापारी बड़े -बड़े महाद्रीपो पर अपनी वैज्ञानिक शेष्ट्रता के कारण अधिकार स्थापित किये थे अत: क्तिान की राष्ट्रीय शिक्षा भी नवजागरण की विशिष्टता बनी । भारतवासी यूरोप की ओर हमेशा नजर डाले रहते थे। कि कोन देश यूरोप से हार रहा है। और कोन जीत रहा है इस हार और जीत के क्या कारण हैं। जापान देश ने अपने विकास का मार्ग स्वयं खोजा । इसी का अनुसरण भारतवासियों ने भी शुरू क्या । देश भिन्त, कितान और स्वाधीनता की शिक्षा भारत ने जापानियों से गृह्य की । जापानियों और भारतीयों का सम्बन्ध बौद्ध धर्म के प्रचार - प्रसार के कारण था। जापानीयों तथा हिन्द्स्तानियों की समानता तथा असमानता का पता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के एक निबन्ध से लगता है " जापानियों के बराबर देश भक्त और कोई पृथ्वी की पीठ पर नहीं है।

देश अभिक्त से प्रेरित हो कर विद्या और किशान के बल पर वे असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं। जापपन भी पशिया में है। हिन्दुस्तान भी पशिया में है। अधिकाश जापानी बोट हैं और बोद मत के प्रवर्तक की जमीन हिन्दुस्तान ही है। प्राय: हिन्दुस्तानियों को तरह जापानी भी ठिंगने होते हैं। जापानियों और हिन्दुस्तानियों के रूप में, रंग में भी कुं साम्य है। हिन्दुस्तानियों के

समान जापानी भी निरूपद्रवी, सहनशील, परोपकारो, दयालु, माता-पिता के भक्त और सरल स्वभाव के हैं। परन्तु दोनों में असमानता भो है। जापानी स्वाधित हैं, हिन्द्स्तानी पराधीन। जापनी देश भक्त हैं, हिन्द्स्तानी देश भक्त नहीं। जापान में एकता है. हिन्दुस्तानियों में एकता का अभाव है। केहानिक शिक्षा के लिए सात समुद्र पार जाना जापानी लोग अपने और अपने देश के लिए गौरव समझते हैं, पर समुद्र पार जाना हिन्दुस्तानियों के लिए पाप है, क्यों कि उनका धर्म जाता रहता है। जापान में जाति-मेद का बहुत ही कमा विचार है हिन्दुस्तान में जाति-भेद का सबसे अधिक विचार है। जापान में सब लोग परस्पर शादी विवाह करते है, हिन्दुस्तान में अपने वर्ग में भी शादी करने में अनेक संझट पेदा होते है। जापान में छुआछुत नहीं. हिन्दुस्तान में इसकी पराका हुए है। ये बाते विचार करने लायक हैं पर विचार अरने वालों ही को यहाँ कमी है। विचार करे को नः

इस प्रकार भारताय नवजागरण पर जापान का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। जापान नियाँ की प्रेरणा में के निक शिक्षा के प्रति सजगता बदी। किन्तू इस के निक शिक्षा के भारत तभी लान ले सकता है जब वह अपनी पुरानो समाज व्यवस्था बदले, अपने अन्ध विश्वासों और रुद्यों से स्वयं को मुक्त करे। जब तक भारतीय समाज में पुरानो वर्ण-व्यवस्था, जाति-विरादारों का भेद-भाव छुआ छूत आदि क्रीतियाँ बनी हुई है, तब तकभारत प्रेगितिशोल आध्यनिक राष्ट्रं नहीं बन सकता। चीन समाचार पत्रों का जनक है। ये किन गजट "द्विनया के सब पत्रों में पुराना है।" भारत में अब्सर विद्रोह के बाद से चीनी पत्रकारिता का प्रभाव भारत पर पड़ा।

भारत से जो लोग विदेश जाते ये वे अधिकतर बैरिस्टरो सोखने जाते ये यानी अंग्रेजों की न्याय-व्यवस्था का अंग बनकर मृक्दमें वाजी में बुक्ति का चमत्कार दिखाकर पैसा कमाना उनका लक्ष्य था। ऐसे व्यवसाय, जिनसे देश का भला हो, सीखने की और उनका ध्यान नहीं था। देश की भलाई के लिए विदेश गमन जापान और चीन के छाल करते थे।

चीन में स्त्रियाँ पराश्चोन थीं। विवाह कन्या की इच्छानुसार नहीं होता था। बहु- विवाह की राक्ष्मी प्रथा वहाँ भी प्रचलित थी। पित के मरने पर स्त्रियाँ सती हो जातो थों। सुन्दरता बढ़ाने के लिए लड़कियों के पैर छोटे किये जाते थे। किन्तु नये प्रगतिशील विचारों के कारण परिस्थितियाँ बदल गयों। चीन में भो वर्ण्य व्यवस्था और जाति प्रथा थी। चीन के सामाजिक आन्दोलनों और शिक्षा का माध्यम चीनी था।

स्सी क्रान्ति स्वाधीनता आन्दोलनों की अगलो कड़ी थी। संसार के इतिहास में इतने बड़े परिवर्तन के समान आज पर्यन्त कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

[।] अप्रैल । १। ७. मयादा ।

प्रजाशिक्त को महिमा इसो सेपुक्ट होती है कि सून- खराबा भी नाम मात्र को हुआ और परिवर्तन कुछ घण्टों में ही हो गया । हम संसार को और विशेष कर स्म जाति को इस परिवर्तन का फल चक्छेगी ही किन्तु उसके साथ ही संसार के इतिहास और उसमें बसने वाली जातियों पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा ।

स्स की आर्थिक स्थित का सभी भारतवासियों ने खूब स्वागत किया।"
अब एक सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है। जिसने इस नारकीय
महाजनवाद या पूँजीवाद को जड़ खोदकर पेंक दी है।"

स्स में समाजवादी अनित हो गयो। पिछ्हा हुआ स्स विश्व की एक प्रमुख शक्ति बन गया। क्या भारत में भी किसानों और मजदूरों के संगठन से कुछ किया जा मकता है ? " उधर स्स को देखिये। वह बहुत बड़ा देश है। कई वर्ष पूर्व वहाँ के जार नाम धारी राजेश्वर का आतंक वहीं नहीं, भूमण्डल के अन्यान्य देशों में भी धाया हुआ था। उन्हीं सर्वेशिक्तमान मत्ताधीश को सत्ता हो का नहीं, उनके वैश तक का नामोन्सियन मिटाकर, स्स के किसान और सैनिक अब स्वयं हो वहाँ का शासन कर रहे हैं। यह सारो करामात संगठन की है। वहाँ के किसान और सैनिक अपस में गठ गये। उन्होंने कहा, जो जुल्म हम पर हो रहे हैं उनका एक मात्र कारण वहाँ को बिगड़ी हुई शासन व्यवस्था

^{। •} स्तिम्बर १९३६ • हैंस, " महाजनी सभ्यता " प्रेमचन्द ।

^{2· 1924,} लेबा ज्जिल - 168-169- महावीर प्रसाद किवेटी।

है। उसे तोंड देना चाहिए। यह निश्चय कर के उन्होंने अपना ऐसा संगठन किया। जिसकी बदौलत उनका साध्य सिंह हो गया।"

विदेश में मजदूरों के संगठन की क्या हालत है. अपनी माँगों को लेकर मजदर केसे संधर्ष कर रहे हैं. पूँजी और श्रम के छन्द को हल करने के लिए किस तरह के प्रयास किये गये हैं, इन बातों को और भारतीय साहित्यकारों का ध्यान शुरू से ही था। भारत में मजदूर वर्ग आकार में अभी बहुत छोटा था। अधिकतर वह मरकारी पतिष्ठानों में काम करता था ऐसे कारखानों में काम करता था जिसमें अधिवतर विदेशी पूँजी लगी हुई थी। आकार में जेटा होने पर भी. असंगठित रहने पर और किसो क्रान्तिकारी पार्टी के अभाव में भी उसने तब भी अपने जुलारूपन का परिजय दे दिया था। 20वों शदी के आरम्म में वह अनेक हड़ता ने कर चुका था । ये हड़ता ने सीधे अंग्रेजी राज के विरूट मजदूरों का संखर्ष थीं। " जो०आईं पी० रेल्वे और सरकारी तारघरों के तार - वालों का हड़ताल, बम्बर्ड के चिद्ठीरसों का हड़ताल, जमालपुर के रेलवे कारखानों के आरीगरों का हरताल ईं । आईं रेलवे के ट्राइवरों और गाउँ का इन्ताल और ककत्ते के महतरों का इस्ताल कभी बहुत दिन को बात नहीं है।"

व्यवसाय करने वाले व्यवसायी निष्यं प्रणालक के माध्यम से संगठित हो रहे थे पर मजदूरों के भंगठन नहीं थे। प्रमुन्स, जर्मनी, इगलेण्ड और । सम्मत्ति शास्त्र-202. महावीर प्रसाद दिवेदी। अमरोका का हवाला देते हुए महावीर प्रसाद तिवेदी ने बताया कि भारत में भी व्यापार समितियों का होना आवश्यक है। वहाँ लोहे, लक्ष्टी, चम्हे, कोयले, क्यें आदि के व्यवसायों में लो हुए अम जीवियों ने अपनी - अपनी समितियां बना रही हैं।

जब मजदूरों को दिन भर अम करने के बाद भी पेट भर भोजन नहीं मिलता तो ये इडता लें करते हैं। वहन वह इडता ला' की निन्दा करते हैं और मजदरीं पर दोध लगाते है। हड़तालों से कारण नों जालों और मजदूरों, दोनों को नुक्सान होता है। यूं नयन प्रामाज 🗸 को स्थापना से मजदूरी को दो ला 🤻 होते हैं। पहिला यह कि आपित्त काल में समाज हारा उन लोगों की सहायता की जाती है. जिनको कारधानों के मालिक काम पर मे अलग कर देते हैं। दूसरा यह कि जिस कार आने में वे काम अरते हैं वहाँ उनको अधिक तन हवाह दिलाने या काम के घण्टे घटाने का उधीग किया जाता है। और जब - जब मौका आता है तब - तब मण्डली अर्थात् समाज के पुबन्ध कर्ता अपने सभामदो की और से कारखाने वालों के साथ पत्र व्यवहार आदि करके भगभी का तसिपया कर लेते हैं। मण्डली के नियमानुसार पृत्येक मजदूर को जो सभासद होता है, हर महीने कुछ चन्दा देना पड़ता है।

^{। •} उप0 - 21

गरत में मभी कारखा भारकार की मदद से बनाये जाते हैं इसलिए कारखानों के पृति विद्रोह का अर्ग है। सरकार से सीधे संघर्ष। सारे मजदूर इसी मालिक की देख रेख में जाम करते हैं। ये मजदूर पेट भर भीजन के लिए दावा करते हैं पर राज्य सत्ता उनका दावा मंज़र नहीं करती। तब इसके बाद एक ही बात हो सक्ती है कि जनता के अन्य अगों के साथ मिलकर मजदर भी स्वाधीनता के लिए मंधर्ष करे। जैसे जमीन के लिए किमान को लड़ाई आजादी को लड़ाई की अंग बन जातो है। वैसे हो रोजी - रोटी के लिए मजदूरों का संधर्ष स्वाधीनता संगाम का अंग बन जाता है। स्वेदेशी आन्दोलन पूरी ताकत से चले इनके लिए जरूरी था कि मजदूर वर्ग अंग्रेजों के विरूट. उद्धतालों के माध्यम से. संधर्ष करें। हिन्दी लेखक स्वाधीनता आन्दोलन को सफलता के लिए सम्बने लो कि किमानों और मजदूरी का संगठन और उनका संघर्ष आ अस्यक है। "

भारतोय किसानों को वास्तिवक रिथित इस प्रकार थी। एक तरक भोपड़े में रहना वाला एक किसान में अपने बाल - बच्चों के, दो रोज से प्लाके कर रहा है और दूसरी और एक अमी! ऐय्याश अपने महलों में शराब के प्याले उड़ा रहा है। एक मनुष्य माध- पूस के जाड़ों में ठिउरा हुआ राम - राम करके रात काट देता है, और दूसरी महलमली गददे पर सोया हुआ स्वर्ग का सुख भोग रहा है।

डाँछ राम विलाश शर्मा, मंगवीर प्रसाद विवेदो और हिन्दी नवजागरण
 प्० - ४।

हिन्दी में भिमक जनता को वर्ग वेतना के अ-युदय का यह प्राथमिक रूप था।
1936 के बाद के प्रगतिस्रोल सा। हत्य में यह बातें विशेष रूप से कही गयी।

यूक्प और अमरोका के मजदूर संगठित हो रहे हैं, वे अपनी दशा के लिए पूर्व जन्म का ईरवर को जिम्मेदार नहीं मानते, वे इस दशा का कारण पूंजीवाद को मानते हैं, भारतीय लेखक वह सब देख रहे थे। हिन्दुस्तान के कियान और मजदूर जब तक पूर्व कर्म और भाष्य के भरोसे बेठे रहेंगे, तब तक उनकी गरोबो दूर न होगी। प्रानी व्यवस्था में जो जितना हो काम चौर था, उतना ही इज्जत काला समना जाता था अब नयी सामाजिक वेतना के प्रसार के साथ साथ सामाजिक मूल्य बदल रहे हैं, इज्जत -साबर के पैमाने बदल रहे है।

अमीर लोग गरोबों का दु भला क्यों समक्षेगे १ उन्हें कभी पेट को आग नहीं सताती। पर मध्य वर्ग के लोग जानों है कि गरीबो क्या होतो है। इमलिए उन्हें किसानों और मजदूरों से सहानुभूति होतो है और वे देश को उन्नित और समाज को सुधारने के कामों में अगुवाई करते है।"

देश को उन्निति क्सिके लिए, समाज सुधार किसके लिए, शिक्षा किसके

[।] जून, १९१४ - सरस्वती, हमारे गरीब किसान और मजदूर, जनार्दन भट्ट।

लिए इन तथ्यों पर क्रियेष रूप से बन दिया गथा । अंग्रेजी राज में कुछ कौसिनें बनायी गयो थीं। जिनमें किसानों के प्रतिनिधि बनकर ऐसे लोग जाते थे जिनका किसानों से कुछ भी सम्बन्धन था। साहित्यकारों को इन कौ सिलों और इनमें जाने वाले सदस्यों से काफी असन्तोष था । किसान संगठन की रूपरेखा" संगठन का प्रधान दफ्तर इला हाबाद में रहे। उसके अधीन हर जिले के सदर मुकाम में ही एक एक दफ्तर रहे। इसके सिवा हर जिले को हर तहसील में एक एक छोटा दफ्तर खोला जाय। फिर हर तहसील में एक - एक छोटा दफ्तर खोला जाय। फिर हर तहसील के समृचित विभाग करके पृत्येक विभाग का एक एक उपदेशक या एजेप्ट को बॉट दिया जाय। वह देहात में बराबर दौरा करता रहे। बाजारों. मेलों. और बड़े - बड़े गाँवों में वह व्याल्यान देकर संगठन के लाभ बतावें और किसानों को क्या करना चाहिए इस बात को सलाह दे जब वह देखे कि किसान संगठन का लाभ समझ गये हैं तब छोटे - छोट कई गांवों को मिलाकर किसी खाम गांव में. जहाँ कुछ पढ़े - लिखे और समजदार किसान रहते हो एक एक किसान सभा खोल दे और सभा को उसके क्रिंव्य ब्रतला दे। ये देहाती सभाए तहसील को सभा से सम्बद्ध रहे और तहसील को सभाएं जिले को सभा से जिलों को सभाएं इलाहाबाद की पृधान सभा से सम्मिलित रहेगा हो।"

[।] लेखान्ति - पृ० - 179-8, महावीर प्रमाद हिवेदो ।

किसान और मजदूर दो रेसी शिक्तयाँ हैं जो अंग्रेजों के खिलाफ सक्षकत हैं। किसान लगनबन्दों के दारा मजदूर हड़ताल के दारा। जमीन का असली मालिक किसान था लेकिन अंग्रेजों ने जो शृंबला तैयार को थी उसमें उसे कोई अधिकार नहीं दिया गया था। अधिकांश देश में जमीन के ठेकेदार राजे, महाराजे, तब ल्लेक्कार और जमोंनदार है। गर्वनमेण्ट ने जमोन उन्हीं को दे रख्यी है। बदले में वह उनसे माल गुजारी लेती है। ये ठेकेदार मनमाने लगान पर जमीन को दूसरों को बोने - जोतने के लिए देते हैं। लगान बन्दी और हड़तालों को स्वाधीनता आन्दोलन से जोड़ा गया।

श्रम जीवी तथा कृषकों का संगठन करके उनको जमोदारों तथा रईसों के अत्याचारों से बदाये। " प्रताप" सम्यादक गणेश शंकर जिधार्थी ने भारतोय स्वाधीनता संग्राम के समाजवादी विवारों को छापता था।

भारत के नवजागरण में प्रान्य तथा रूस को राज्य क्रान्तियों का प्रभाव पड़ा। इस समय लिंगे गये लेगों में कहा गया - अन्य देशों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, प्राचीन संस्कृति पर गर्व उरने वाले भारत में भी यह सब हो सकता है।

[।] जुलाई । १। ५, सरस्वती, महावीर प्रसाद द्विवेदी ।

उप० पृ०- १२४, बिस्मिल।

अंग्रेजी राज में नवीन नवजागरण के लिए लेखन को स्वतन्त्रता सर्वपृष्ट है। अंग्रेज राज का दमनकारी रूप नेखन को स्वतन्त्रता के कारण प्रकाशित किया गया। इसके लिए जहाँ - जहाँ अंग्रेजों को प्रथमा भी की गयी। हाथ में वफादारी का भण्डा उठाये जिना अंग्रेजो राज को असलियत क्यान करना सम्भव नहीं था, लेखन की स्वाधीनता माम्राज्य विरोधी वेतना के प्रसार के लिए ही आवस्यक नहीं था।

अर्न्तराष्ट्रीय वेतना का प्रसार करते हैं।

नवजागरण पर वैदान्त दर्शन का भी अत्यधिक पृभाव पड़ा १ यह दर्शन ब्रह्म को सर्वव्यापी बताकर सामाजिक विषमताओं को उसत्य और भूम सिद्ध करता है। किन्तु इसके साथ हो एक अन्य विचारधारा भी समाज में व्याप्त थी जो संसार को मिथ्या या सार नहों मानतो थी। व्यव्यवस्था तथा पुरोहित वर्ग को तोखी आलोचना करतो थी। भारत में जितने समाज सुधारक हुए, जितने सन्त और भक्त महाकवि हुए, उनकी मानवतावादी वाणो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्प में, वैदिक कर्मकाण्ड की आलोचना को दोहरातो है।

जिस देश में सामन्तो अवशेष बहुत दृ हो, जहाँ वर्ण- व्यवस्था संसार में सबसे प्रानी हो और कट्टर रूप में हो, वहाँ केश निक चिन्तन का प्रसार बहुत कम पढ़े - लिंधे लोगों में थो तो अन्ध विश्वास ज्यादा था । जैसे - जैसे ये जन - माधारण संगठित हो कर समाज व्यवस्था का निर्माण करते हैं, वैसे - वैसे परोध शिक्त पर उनका विश्वास मिटता जाता है । वे अपने अनुभव से अन्ध विश्वास मिटाते चलते हैं।

"भारतीय विवेक परम्परा और आधुनिक विकान " अंग्रेजों ने भारतीय रोति - नीति को अधिक जानकारों के लिए संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया। अनेक जज भी संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किये। विलियम जोन्स जो कि जज ये उन्होंने मनुस्मृति का अनुवाद भी किया " भारतवासियों को अपने धर्मशास्त्र के अनुसार न्याय कराने में तब से बहुत सुभीता हो गया ! शकुन्तला नाटक का भी अनुवाद किया गया । इस नाटक के अनुवाद से भारतीय जनता की स्थिति अंग्रेजों की नजर में बहुत अच्छी साबित हुई । शकुन्तला वह चीज है जिसकी कृमा से भारतवासो हैवान से इन्सान समन्ने जाने लो, पशु से मनुष्य माने जाने लो ।

इसके बाद पराधीन भारत से सेक्डों ग्रन्थ यूरोप वाले यहाँ से अपने यहाँ से अपने यहाँ दो ले गये। टार्विन की विचारधारा ने हो सारी दुनिया में धार्मिक अन्धिक्विसों की जड़े हिला दी थीं। श्याम जी कृष्ण वर्मा भारत के प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने आ क्सपनेर्ड किविविधालय से एम०ए० को पदवो पार्ड थी।

। 9 वो शता ब्दी के अन्त में हिन्दी पुदेश में जो नथजागरण आरम्भ हुआ, वह अन्य प्रदेशों के नवजागरण से कई बातों में भिन्न है। वह रहरयवाद और तर्क- विरोधी पुनरूत्थानवाद का समर्थंक नहीं है। वह प्राचीन संस्कृति पर गर्व करना सिखाता है। किन्तु उसके विवेकपूर्ण पूर्नमूल्यांकन पर जोर देता है।

सरस्वती - 1909

डा० राम विलास समा, महावीर पुसाद हिवेदी और हिन्दी बावजागरण
 143 ।

रूदियाँ अध्यात्मवादियों में ही नहीं, भौतिकवादियों में भी होती हैं। जैसे पहले लोग वेद और धर्मशास्त्र की दुहाई देते थे, वैसे हो भारत के अनेक भौतिक वादी नेता मार्क्स और लेक्ट्रिन के वाक्यों को पूजा करते हैं। इनमें भी मार्क्स से भले ही गलती हो जाय, लेनिन सभी प्रकार की गलतियों से परे माने गये हैं। जो लोग स्तालिन को व्यक्ति पूजा को सबसे अधिक निन्दा करते हैं, वे मार्क्स और लेनिन को व्यक्ति पूजा ही नहीं करते, उनके शब्दों को प्रमाण मानकर सूल पूजा भी करते हैं। "

"समय का प्रवाह अनिवार्य है किन्तु रिदयाँ अपने आपनब्द नहीं हो जातीं। आधुनिक किनान की प्रगति अंग्रेजी राज के अन्तंगत हो रहो थो। यह यह राज निरन्तर प्रयत्न करता था कि भारतीय जनता अपनी यथार्थ स्थिति को न पहचानने अपनी "अध्यात्मवादी" संस्कृति पर गर्व करती रहे और अंग्रेजों को अपना शोषण करने देती रहे। इस स्थिति में सामान्य शिक्षित जनों के बीच कैनानिक दृष्टि का प्रसार अत्यन्त किन कार्य था। जैसे - जैसे पूंजीवादी व्यवस्था अधिकाधिक संकट मुस्त होने लगो, वैसे वैसे कोशल में उन्नित करने पर भी जान का विकास गाय: अवस्ट हो गया। इसिल्प हिन्दी प्रदेश की नवजागरण प्रकृया अधूरी

डॉ० राम विलास शर्मा, - महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण
 पु० - 149

उसे पूरा करना बाको है। " मन्ष्य है लिए स्वाधीन चिन्तन और स्वाधीन भाषण का अभाव सबसे बड़ी विपत्ति है। यदि कोई सच्चा पूर्व अपने चारों और मन्ष्यों को बूठे विश्वासों और आचन्णों में पंसा हुआ देखता है, तो वह उन्हें इस अन्धकार से निकालने का प्रयत्न अवस्थ करेगा। निर्भय विचार - प्रकाशन के लिए स्वस्तात और ईसा शहीद हो गये थे। विचार - स्वाधीनता के लिए भाषण - स्वाधीनतादरकार होती है। मन में बहुत कुछ सोचकर चूप रह जाने से कोई लाम नहीं।"

बालस्य, भ्य, अन्धिक्रिवास और स्वार्थ मनुष्य के स्वतन्त्र चिन्तन में,
नये विवारों को ग्रध्ण करने में, बाधक होते हैं। हिदवादी समाजों में " नये विवार
खतरनाक सम्भे जाते हैं और वह मनुष्य बड़ा भ्यानक सम्भा जाता है जो पुराने और
बहुमून्य विवारों और सिहान्तों पर सन्देह करता है और उनके खिलाफ अपनी
बावरण उठाता है। " घटना एक तरह की हिद्वादी धारणायी कि ग्राचीन भारत
केवल अध्यात्मवादी था। जहाँ मौतिक संसार और विकान की बात आयी कि

सच पूछी तो हिन्दुस्तान की अधोगित का एक हेतू हमारा धर्म या मजहब भी हो रहा है, जिससे हम ऐसे जकड़ लिये गये हैं कि आगे को पैर कैला ही नहीं सक्ते। हमारे पण्डित लोग जो निरेक्षींद्र दास बने रहते हैं देश कालंको कुछ नहीं

 ^{ा॰} डा० राम विलाशमा, महावीर प्रसाद दिवेदी,और हिन्दी नवजागरण पृ०-150
 वहीं

समझते। उसका कारण भी यहाँ है कि जन्म भर संस्कृत के और कुछ उन्होंने पढ़ा ही नहीं, अटल विश्वास जमा है कि जो कुछ है सो सब हमारे वेद और संस्कृत हैं इसलिए हम सर्वंत हैं। आधुनिक सभ्यता की बातें सून कोवाते हैं कि यह तो हमारी पोथियों में हुई नहीं, यह सब मिथ्या है।"

हिन्दी साहित्य की मृध्य धारा यथार्थ जगत की और उन्मृत है, वह धार्मिक अन्ध विश्वासों का खण्ड करने वाली है, कहीं उग्र स्वर में, कहीं नर्म स्वर में, कहीं सम्मात रूप से, कहों अन्तिविरोधों के साथ पर जिसे आज धर्म निरपेक्ता कहा जाता है, उससे यह विचारधारा बहुत अधिक प्रगतिशील है वह धार्मिक रुदियों और अन्ध विश्वासों से तटस्थ नहीं रहती, छिपकर उनका राजनीतिक उपयोग नहीं करती, वरन् सिक्य रूप से उनका खण्डन करती है।"

सत्युग सम्बन्धी धारणाएं विभिन्न रुपों में अनेक देशों में पृचलित रही है। इसका एक सामाजिक कारण है। गम समाज वर्ग हीन होता है, वहाँ व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं, राज्य सत्ता हारा एक वर्ग का दूसरे वर्ग पर शासन नहीं सब के। मिलकर श्रम करते हैं और अपना अपना भाग पाते हैं। सामन्ती व्यवस्था में व्यक्ति—गत सम्पत्ति है। श्रम विभाजन है, धनी और दिरद्र का भेद है, वर्ग व्यवस्था है, दण्ड विधान है, स्वर्ग और नरक है। इस व्यवस्था को देखकर जनसमुदाय पूराने। महावीर प्रसाद हिवेदी, सरस्वती।

गप - समाज के दिनों को याद करता है। वे दिन सम्मूच उसे आदर्श सूझ और मनुष्य की पिक्तता के दिन जान पड़ते हैं। व्यवस्था के खिलाफ उसने चीं-चपड़ की तो इस जन्म में ही नहीं, अगले जन्म में भी उसे पूर्व कमों का फल मिलेगा।

सही प्रत परतुत करना स्वयं में एक उपलिख है। ऐसे पुरत परतुत करने का अर्थ है पुराने इतिहास लेखन की बालीचना करना । इस बालीचना का अर्थ है नये इतिहास लेउन की जमीन तैयार करना । जैसे - जैसे इस देश में गाँधी वाद का प्रभाव बढ़ा, वेसे - वेसे बुद्धिवाद, स्वतन्त्र और निर्भीक चिन्तन, धार्मिक और सामाजिक रुदियों की आलोचना मन्द पड़ती गयी । अप्रैज कहते थे, हिन्दुस्तान के लोग आपस में एका कर लें, हम उन्हें सारे अधिकार देकर वापम चले जायेंगे। इसलिए भारत के नेताओं ने कहा, सभी धर्म अच्छे हैं, अछ्तो द्वार तो होना चाहिए लेकिन मन्दिर भी रहेंगे, पूजारी भी रहेंगे, वर्ग हीन समाज अच्छा है, उसमें पूँजी-पति भी रहेंगे, भूस्वामी भी रहेंगे केवल वे बब जनता के ट्रस्टी बन जायेंगे। देश में ऐसे नेताओं और धर्माचार्यों की कमी नहीं जो इन व्याधियों को व्यक्तिगत प्रयत्न से दर करने पर जोर देते हैं।

भारतीय समाज के बाधुनिक समाज बनने में यहाँ सबसे बड़ी बाधा जाति-प्रथा रही है। सेक्डों जातियां, उपजातियों, ने अपने संघ बनाये हैं और इनके

^{। े} डा॰ राम विलास शर्मा, महावीर प्रसाद हिंदेवी और हिन्दी नवजागरण-। 59 $2 \cdot a$ ही 1, 160

चोधरी जनतन्त्र के मूज्य आधार बन जाते हैं। पढ़े - लिखे लोगों में अपद जनता से कुछ अधिक हो जाति विरादरी जाली संकीर्णता मौजूद है।

इस देश में सामन्ती अवशेश इतने सुदृ हैं, सामाजिक आधार के नष्ट हो जाने पर भी उनके संस्कार लोकमानः में ऐसे गहरे जमे हर हैं कि पदे - लिखे लोग बड़ी उदारपंथी बाते करते के बावज़ः उनसे उबर नहीं पाते । बड़े - बड़े शिक्षा केन्द्र जाति - बिरादरी के आधार पर निहायत गंदी और संकीण गृटबन्दियों के केन्द्रं बन गये हैं । साठ साल सहले यह कहने का साहस बहुत कम लोगों में था कि हमारी सारी सामाजिक क्रीतियों की जड़ वर्ण - व्यवस्था है ।

चाहे समाज शास्त्र हो, चाहे साहित्य और भाषा किनान, इस देन के किन विकास नयी विचारधारा से, नये सामाजिक सांस्कृतिक आन्तोलनों के केन्द्र नहीं बने। इसका मुख्य कारण यह है कि शास्त्र से जनता के व्यवहार को नहीं जोड़ा गया। यह शास्त्र पहले ब्रिटेन में बनता था, अब अमेरिका में उसका सबसे बड़ा कारखाना है और शिक्षा - संस्थानों के ग्रन्थागार इन शास्त्रों से जु पटे पड़े हैं। इनका अध्ययन अध्यापन करते हुए औरत वृद्धिजीवियों की जो छेप निक्रम रही है, वह इस देश के जीवन को बदलने या प्रभावित करने में असम्ध है।

^{ा॰} डा० राम विलास शर्मा, महावीर पुसाद दिवेदी और हिन्दी नवजागरण, 164वही, 165

सत्य शोधक प्रतापी शासकों के जीवन क्रम में ध्यान हटाकर उसे सामाजिक परिस्थितियों पर के न्द्रित करने को कहते हैं। इसितहास के प्रति यह एक नया और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

इतिहास समझने के लिए समाज की सभी परिस्थितियों को जानना जरूरी है। इसके आगे पुरुन यह होता है कि इन परिस्थितियों में मूख्य भूमिका क्निकी है। मार्क्वादी ने इस प्रत्न का उत्तरदिया था; मूख्य भूमिका आर्थिक परिस्थितियों की है। उसने यह भी बताया था कि इन परिस्थितियों का कि लेका बेसे करना चाहिए । िस्ती भी समाज व्यवस्था में उत्पादन कौर कितरण की पद्गति किस प्रकार की है. इस पर उसका आर्थिक दाँचा निर्भर होता है। इस पहित की छान-बीन करके हम आर्थिक परिस्थितियों को पहचानते हैं सत्य शोधक राजनीति पुगति, स्थापार और उद्योग - धन्धों की उन्नीत तथा अवनित के नियमों का पता लगाने को तो कहते हैं. वे इनके साथ धर्म को भी शामिल करते हैं। यानी अर्म की उन्नति और अवमति वैमे ही एक साभा जि पुक्रिया है जैसे उधोग-धन्धों की उन्नति और अवनति । किस ऐतिहासिक कुम में धर्म का अभ्यदय होता है, कब उसका हास होता है, विज्ञान और धर्म का क्या सम्बन्ध है ? इन सब बातों का जिल्ला वह करते तो बहुत रोचक होता।

डा० राम विलास शर्मा, महावीर प्रसाद हिवेदी, और नवजागरण पृ०- 166

त्यापक सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा पुसार

बत्यन्त आक्सयक था। गाँवों हैं मदरसे बहुत कम हैं, जितने हैं, उनमें बहुत कम लड़के जाते है। सरकार हर आदमी के पीछे, जनसंख्या को देखते आठ डाने भी नहीं खर्च करती। "यह स्थिति बहुत ही शोक जनक है। चाहिए था कि प्रारम्भिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य कर दो जाती। पर वह तो दूर रहा फीस लेकर भी और अपने बच्चों को शिक्षा देना या न देना माता- पिता की इच्छा पर छोड़कर भी, शिक्षा प्राप्त का यहाँ यथेष्ट सुभीता नहीं। "

रिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अंग्रेज शासकों का प्रयत्न यह था कि यहाँ के विभिन्न धर्मों को मानने वालों के बीच खब विद्धेष पेक्शाया जाय और ऐसी संस्कृति का विकास न होने दिया जाय जिसमें विभिन्न सम्प्रदायों के लोग भाषी-दार हो । यहाँ दो सबसे बड़े सम्प्रदाय हिन्दुओं और मुसलमानों के थे। उन्होंने मुसलमानों को अलग संस्कृति, अलग भाषा में दीदित करने का पूर्ण प्रयत्न किया

उन्होंने नियम बनाया कि जहां भी 20 मुसलमान लड़के पटना चाहेंगे "वहां एक इस्लामिया स्कूल खोज दिया जायेगा ऐसे स्कूलों में अध्यापक भी मुसलमान ही होमें •••• संयुक्त प्रान्त भरंके बिर एक सुनिश्चित मुसलमान इन्संपेक्टर रक्खा

डा० राम विलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण पूण-168 सरस्वती ,मई 1915, महावीर प्रसाद द्विवेदी ।

जायेगा । प्रत्येक म किम्हनरी में यक मुसलमान डेप्यूटी इन्सपेक्टर इस निमित्त रखा जायेगा कि वह किम्हनरी भर के सलामिया स्कूलों की मक्तब करेटी डाइरेक्टर साहब बनावेंगे।

उनके अपने देश में एई ही ईसाई धर्म वाले प्रोटेस्टेन्टों ने रोजन कैथिलिकों पर जो बत्वाचार किये थे, उन्हीं के अनुस्य वे भारत में दो सम्प्रदायों के लोगों को फिडाने की नीति पर चल रहे थे।

वेद पदने का अधिकार मुसलमानों को न था। हिन्दुओं में अद्भूनों और सभी वर्णों की स्त्रियों को वेद पदने की मनाही थी। दिवेदी जी मुसलमानों, अद्भूतों सभी में शिक्षा प्रसाद के सम्पंक थे। भारत के नविनिर्माण का अर्थ है सार न्ती व्यवस्था के अवशेषों को समा स करके स्त्रियों, अद्भूतों, मुसलमानों अन्य मतावलि स्वयों को मिलाकर केनानिक दृष्टि वाले नये समाज का निर्माण और इस नवीन भारत में उन कवी जों का भी महत्वपूर्ण स्थान होगा जो सामन्ती व्यवस्था में पूरी तरह कभी शामिल नहीं हुए। यह तभी सम्भव होगा जब शिक्षा प्रसार का कार्य उच्च और मध्य वर्ण के थोड़ें से लोगों तक सोमित न रहेगा इसलिए सबसे पहले आवश्यक था कि

सरस्वती - 1913

डाँ० राम विलास शर्मा, -महावीर प्रसाद द्विदी और हिन्दी नाजागरण,

^{90 - \$66}

जनसाधारण की निरदारता को दूर किया जाय। "पक्को शिक्षा दीजिए, पर साथ ही निरदारता कम करने के साधनों को भी बढ़ाते जाइए। जिस गाँव में 100 आदमी रहते हैं उसमें पक्की शिक्षा पाये हुए केवल।। आदमियों से अविशिष्ट 39 का नाम नहीं चल सकता। वे यदि कच्ची ही शिक्षा पावें और अपने घर का हिसाब रखने और पत्र लिखने पढ़ने यो य्य हो जाँय तो यह इतना ही लाभ उनके लिए बहुत समिथिये ••• सरकार का यह क्रिंब्य होना चाहिए कि प्रजा की शिक्षा का वह पूराप्तरा प्रबन्ध करें, एक आदमी को भी अशिक्षित न रहने दें। शिक्षा के साधन सबके लिए सुलम कर हैं। "

भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र से लेकर महावीर प्रसाद द्विवेदी तक हिन्दी जागरण के नव सूत्रधार पुराने वर्धें क्यें वाले भारत का स्वप्न नहीं देखते । वे देश देश में आधीनः उद्योग - धन्धों के विकास के पक्षपाती हैं। गाँधीवादी विकारधारा से हिन्दी नवजागरण का यह भेद उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी नवजगारण के जिर वैज्ञानिक शिक्षा आवस्यव है साथ ही शता ब्रियों से बली आती हुई रुदियों की जड़ काटने के लिए, इतिहास और मानव सम्बन्धों को सही - सही समझने के लिए, प्रकृति के रहस्यको जानने के लिए अवक्षवस्यक है। यह नवजागरण अतीत के प्रतिभावक्षा, पुनरूत्थानवाद और रहस्यवाद भी दृष्टि नहीं

सरस्वती मार्च 1915

नहीं अपनाता । इसीलिए हिन्दी में अहैतवाद, उपनिषदों और खीन्द्रनाय के रहस्यवाद की चर्चा 1920 से पहले कम होती है । हिन्दी नवजागरण मूलतः बढ़िवादी और रहस्यवाद- विरोधीहे । कुछ समय के लिए रहस्यवादी धारणाएं उस पर हावी होती दिखायी देती हैं पर पूरी तरह नहीं । ऐमचन्द अपनी जगह अंडिंग रहते हैं और उनका साहित्य अकेंक महारिष्यों के सिम्मिलित कृतित्व में बढ़कर है । नये रहस्यवाद का मूल म्रोत बंगाल है । उद्योगीकरण और आधुनिक विकान का किरोध करने वाली विवार धारा का म्रोत गुजरात है ।

19वीं सदी के उत्तराई में और 20वीं शदी के प्रारम्भिक दसकों में समाज सूधार के बान्दोलन अनेक प्रदेशों में वालू हर । इनके समान हिन्दी नवजागरणभी समाज का ढाँचा बदलना चाहता था । पूराने रीति- रिवाजों, संस्कारों और समाज के पूराने ढाँचे को कायम रखने वाले सामन्ती तत्व थे जिनका संरक्षक अंग्रेजी राज था । इसलिए सामन्त वर्ग से टक्कर लिये बिना समाज - सूझार की योजनाए पूरी न हो सकती थी । हिन्दी पृदेश में समाज सूझार के ये आन्दोलन पृग्धर रूप से सामन्त विरोधी हैं, इसके साथ, अंग्रेजों की सरवक भूमिका के विरोधी हैं। इसका श्रेष्ठ निदर्शन पृक्षवन्द्र का साहित्य है।

डॉं० राम विलास वर्मा, महावीर प्रसाद हिवेदी, और हिन्दी नवजागरण पू0 - 180

वर्तमान बुडिजीवी वर्ग जिना ही किसान जनता से अगल - थलग रहता है, शहर में रहते हुए मजदूर वर्ग से कटा रहता है, उतना हो हिन्दी नवजागरण का महत्व समझने में असमर्थ दिखायी देता है।

डा० राम विलास शर्मा, महावीर, पुसाद हिवेदी, और हिन्दी नवजागरण पू० - 180

नवजागरण एवं शरतचन्द्र

साहित्य किसी भी साहित्यकार के जीवनगत अनुभवों एवं कत्यना औं का संवाहक होता है। दूसरे शब्दों में इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जब साहित्यकार को तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, साम्कृतिक तथा बार्धिक परिवेश कुछ ज्यादा ही झक्झोरने लगते है। और वह इन सामा जिक मृत्य मान्य-ताओं का मौन अनुयायी नहीं रह पाता. उसके अन्दर के सकेंग अपनी अभिव्यक्ति पाने के प्यास करने लगते हैं तभी साहित्य का जन्म होता है। सामाजिक, वार्थिक, राजनैतिक, धार्मिक इत्यादि पहलुओं का सीधा सम्बन्ध मानव जीवन से होता हे इसिन्द्र साहित्यकार इन मृत्य मान्यताओं के उतार-च्दाव से जल्दी प्रभावित होता है। यही कारण है कि हर साहित्यकार इन्हीं मददों को अपने साहित्य का मध्य उपजी व्य बनाता है। इस प्रकार तत्का लीन परिवेश ही साहित्य-कार के साहित्यिक जीवन का निर्माण करते हैं।

रचनाकार की सभी रचनाएं समाज में समान रूप से समाद्त नहीं हो पाती हैं केवल वे ही रचनाएं ज्यादा प्रेरणादायक होती हैं जो उसके निशी जीवन की अनुभूतियों के परिणामस्वरूप सृजित होती हैं। ज्यादा कत्मना से बोधिल रचनाएं

है कि वह जिन घटनाओं को अपने भाहित्य के माध्यम से चित्रित करना चाहता ही उसका वह प्रत्यसदशीं हो. स्वयं भो क्ता हो शायद यही कारण है कि आदि-कालीन कवि अपने आश्यदाताओं के साथ यह - क्षेत्र में जाकर वीर रस परक रचनाएं लिखा करते थे। भिक्तकालीन कवि भी जनता के बीच में जाकर अपने किवारों को पृष्टि प्रदान करते थे। रीतिकालीन कवि तो सर्ज -सजाए दरबार में मधुपान से रक्त अरूणिमा वाले नर्तिकयों के अधरों को देखकर शृंगार युक्त रचनगर र किया करते थे। किन्तु धीरे - धीरे साहित्य में इस प्रवृत्ति का कुन्हा: लोप होता चला गया । रचना केवल कत्यना की वस्तु रह गयी । ज्ञायद यही कारण है कि वर्तमान साहित्य में अपेकाक्त कम पेष्णीयता पायी जाती है। यूँ तो सभी साहित्यकारों में कत्मना एवं यथार्थं का अदभूत सामन्जस्य पाया जाता है। किन्त कतिपय रचना कार इस प्रयार्थ की अभिव्यक्ति करने में कुछ ज्यादा ही समल हर हैं। इस पुकार रचना कार और उसके कर्म के बीच धनिष्ठता परमा वस्यक सी लगती है। घटनाएं अति यथार्थं के चित्रण के कारण नग्न सीन होने लो इस दोष से बचने के लिए उसमें करपना का समावेश किया जाता है। उसने परिवेश के चित्रण में वही रवनाकार सपल होता है जो ज्यादा समाज गत अनुभवों को सचित करता है।

वंग साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर शरवान्द्र तथा हिन्दी साहित्य के के प्रधान शिल्पी प्रेमचन्द अपने इसी यथार्थ चित्रण में सिद्र हस्त है।

सामाजिक दृष्टिकोण:

" नवजागरण की पृष्ठभूमि" में हम देख चुके हैं कि तत्कालीन समाज क्री-तियों, अन्ध विश्वासों, भेद-भावों, आडम्बरों तथा अशिक्षा की मजबूत जजीरों में जकड़ा हुआ था। समाज दिन - प्रतिदिन अवनित को और अग्रसर होता चला जा रहा था। धर्म के नाम पर तमाम पुकार के सामाजिक अत्याचार समाज पतियों द्वारा पारम्भ हो गये। इन अत्याचारों का शिकार समाज का निम्न वर्ग तथा नारी हुई। नारी को अपना जीवन पुरुष वर्ग पर निर्भर कर देना पड़ा। उनके उपर उनमेल विवाह, बाल- विवाह, सती- पृथा, अशिक्षा, वेश्यावृत्ति इत्यादि अमानवीय एवं ध्रिणत परम्परा औं को थोप दिया गया । ये शोका की दीवारे इतनी मजबूत बनायी गयीं कि नारी - जोवन के लिए इसे तोड़ पाना असम्भव सा लगने लगा । इस शोषण को तत्कालीन नारी समाज ने अपनी नियाति मान ली। अपने जीवन की सायकता पुरुष वर्ग को सेवा, उनकी वासना की शानित, तथा पति के देहान्त के बाद उसके शव के साथ स्वयं को जला देने में समझी । जिस कों के उपर इतना शोषण, अत्याचार होता हो उस को का उत्थान हो पाना नितान्त आश्चर्य जनक बात है। जब समाज का आधारभूत वर्ग, हेनारी वर्ग है इतने शोषणों को क्षेल रहा हो तो समाज का उत्थान हो पाना जिल्कुल ससम्भव है। शायद यही कारण है कि बंगाल के नवजागरण के प्रारम्भिक आन्दोलन नारी सधार आन्दोलन से जड़े थे।

शरतचन्द्र को लेखिनी समाज को इन क्रीतियों से टकरायी और उन्होंने अपने साहित्य में नारी वर्ष को महत्वपूर्ण स्थान दिया । नारी के पति उनकी व्यापक सहानुभृति परिलिक्त होती है। नारी जीवन के लाभा पत्येक आयामों को उन्होंने स्पर्श किया है। विधवा-विवाह का समर्थन, उनमेल-विवाह के वृष्परिणाम, नारी शिक्षा का अमर्थन, नारी जीवन में स्वतन्त्रता की सथापना तथा पुरुष वर्ग की विलासिता की वस्तु के स्थान पर एक मानव के स्प में स्थापना तथा केरयावृत्ति का उन्मूलन कर उनको सम्मान जनक स्थान दिलाना इत्यादि कार्य उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया । उनके व्यक्तित्व का मानव पक्ष अत्यन्त विकसित था । भारत की दीन - दुखी जनता, गाँव के अपद और निम्न वर्ग. वर्ग व्यवस्था के शिकार नर न नारी उनके विशेष स्नेह भाजन थे। इसलिए उनके अधिकतर उपन्यास इसी भावना से पेरित हो कर लिखे गये हैं। उनके नारी परक उपन्यासी में "दोदी", "स्वामी", गृह दाह, "बेक्एठ का दान- पत्र", "नव- विधान", "परिणिता", "वन्द्रनाथ", "श्रीकान्त", देना-पावना ", "।बन्दों का लड़का", "ब्रांलमण की बेटी", "शुभदा," तथा "आरक्णीया" है।

इन उपन्यासों के नारी पात्र भिन्न - भिन्न नक्जागरण कालीन
पुवृित्तयों का संवाहन करते हैं। उनके विध्वा समस्या पर लिखे हुए उपन्यास

मृख्यतः निम्न है:-

बड़-दोदी:-

इस उपन्यास के शरतचन्द्र ने परम्परागत सती- पृथा के समर्थन स्यान पर नारी - जीवन को सम्मान जनक जिन्दगी जीने की मान्यता स्थापित की है। बड़ - दीदी के रूप में माध्वी नामक स्त्री पात्र परि-किमत की गयी है जो विधवा है। वह न्यायालय, अदालत हर जगह अपनी पेरवी करने के लिए अपने भानजे के साथ जाती है। इस पुकार परम्परागत दिक्यानूसी मान्यताओं का खण्डन करती है। उपन्यास के अन्त में हम पाते हैं कि सूरेन्द्र नाथ जिसके एक बार माधनी के कमरे में पुवेश करने पर माधवी के शरीर में लज्जा से कम्पन होने लगा था, विधवा होने के कारण पर - पुरुष का दर्शन निष्कि था, वही माधवी परम्परा को तोड़कर खुले दिल से सुरेन्द्र नाथ को स्वीकार कर लेती है। "सन्ध्या" के बाद सुरेन्द्र नाथ को होश जाया। जाँखे खोलकर वह माधवी की ओर देखता रहा. माध्वी के चेहरे पर धुध्य नहीं है, सिर्प माथ पर कुछ और आँवल से दंका दुवा था। गोदी में सुरेन्द्र का सिर लिये बैठी थी माधवी। इस पकार विधवा जीवन के मक्त आकाश में विचरण करने की पक्धारता

इस उपन्यास में मिलती है।

[।] शरत समग्र: ५० - 32

इसी प्रकार विधवा प्रेम का समर्थन "चरित्रहीन" उपन्यास की विधवा सावित्री के चरित्र द्वारा भी परिलक्षित होता है।

शरतचन्द्र ने बड़ी -दोदी उपन्यास में विधवा के शर सात्विक प्रेम को दशाया है किन्त विधवा- विवाह का समर्थन नहीं कर पाये हैं। शुभदा नामक उपन्यास में ललना शुभदा को बड़ी लड़की जो कि बाल - विधवा है, उसके साथ सुरेन्द्रनाय शादी करने को तैयार हो जाते हैं। वे कहते हैं कि -

" लेकिन तुम बतला दो कि अगर शादी के द्वारा ही सुझे हो सको तो में तुम्हारे साथ शादी करने को तैयार हूं। जाति कुल, इतने प्रतिष्ठित क्या की म'यादा को तरफ में जरा भी ध्यान न दूंगा।"

इस प्रकार इस उपन्यास में विध्वा जीवन के पृति सद्भावनायें इतनी ज्यादा बद जाती है कि उसे पृण्य सूत्र में बाँधकर सम्मानजनक जीवन जीने की मान्यता स्थापित करते हैं।

इसके अतिरिक्त शरतचन्द्र के कुछ उपन्यासों में विधवा पति की मृत्य के बाद भी पति का गृह त्याग नहीं करती, जैसे - "गृह दाह" उपन्यास की विधवा

शस्त समग्र प्०- 124, भाग - 3

"मृणाल"। तथा "ब्राह्मण" की बेटी" उपन्यास को विध्वा "कानदा"!

इस प्रकार शरवचन्द्र के उपन्यास में विधवा नारी के प्रति तीन प्रकार के दृष्टिकोण परिलक्षित होते हैं:-

- । विधवा प्रेम सम्बन्धी।
- 2· विधवा विवाह सम्बन्धी।
- 3. परम्परागत दंग से पति के धर में जीवन व्यतीत करने सम्बन्धी।

शरतचन्द्र की सहानुद्भित सम्पूर्ण विधवाओं के प्रति बहुतायत से पायी जाती है। विधवा प्रेम तथा विधवा विवाह सम्बन्धी उपन्यास परम्परागत प्रातन प्री मान्यताओं से हटकर लिखे गये हैं। सती- प्रथा का समर्थन किसी भी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता है। जो विधवायें परम्परागत मान्यताओं के अनुसरण पर अपने पति के घर में पड़ी रहती हैं उनके प्रति भी शरतचन्द्र का सम्मानजनक दृष्टिकोण पाया जाता है। वे विधवायें तिरस्कार को पात्र न हो कर सम्मानजनक स्थान पाती है।

2. केया - सम्बन्धी दृष्टिकोण:

नारो जोवन का सबसे त्रासद रूप शायद वेहया का है। वह शायद समाज का सबसे निश्चदृत तबका है। पुरुष वर्ग के शोषण और तिरस्कार का नग्न रूप यहीं देखने को मिलता है। उसे कैवल वासना को तृष्ति का भाजन मात्र समझा जाता है। उसके जीवन में सम्मान और प्रेम का कोई स्थान नहीं, पैसे के बल पर उसके व्यक्तित्व को खरीदा जा सकता है। वह सबको अपनाने के बावजूद भी सबसे तिरस्कृत है। अपना सर्वस्व पृरूष वर्ण पर न्योछावर कर देने पर भी सम्मान या प्रेम का असमात्र भी नहींपाती। वह प्रूष्ण के हाथ का खिलोना मात्र है, जिसे जब तब पैसे के बल पर खरीदा जा सकता है।

शारत चन्द्र को प्रतिमा इस वर्ग के उत्थान में विशेष रूप से मृन्खरित हुई है। वेश्याओं के प्रति सम्भान जनक नजरिया उनके उपन्यासों में देखने को मिलता है। जैसे - "श्रीकान्त" उपन्यास को राजल्थमी, जो कि प्यारी बाई बनकर गाने का काम प्रारम्भ कर लेती है। उसे श्रीकान्त अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है। राजलक्ष्मी में मानवता कूट - कूट कर भरी है। वह गरीब बस्तियों में विद्यालय खुलवाती है तथा चिकित्सालय का भी प्रबन्ध करती है।

इस प्रकार शरतचन्द्र की वैश्यायें अब समाज को उपेधित और तिरस्कृत तबका न होकर समाज को गतिशील बनाने में सहायक हैं।

शिक्षा प्रसार पर बल:

अशिक्षा देश के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है। अशिक्षा के कारण अनेक प्रकार की कुरोतियाँ समाज में जन्म लेती हैं। यदि सर्वतीरूप से

देश का विकास करना है तो दिशा का प्रसार व्यापक पैमाने पर करना होगा। देश में केनानिक चिन्तन का प्रसार करना होगा। इसीलिए नवजागरण कालीन सभी सुधारवादी संगठनों ने शिक्षा के प्रसार पर विशेष बल दिया। राजा राम मोहन राय ने बुम्ह समाज के माध्यम से पाइचा त्य शिक्षा को प्रोत्साहित किया तो स्वामो दयानन्द सरस्वती ने परम्परागत वैदिक शिक्षा पर बल दिया। ईश्वर चन्द्र विधा सागर ने नारी शिक्षा को विशेष स्प से प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार शिक्षा के प्रचार - प्रसार ने भारत से सम्पूर्ण कुरीतियों, अत्याचारों, शोषणों एवं मिथ्यावाद का अन्त करके नये तर्कवाद को जन्म दिया। इसी तर्कवाद के परिणामस्वस्प सुधारवादी आन्दोलन सफल हुए।

शरतचन्द्र के उपन्यासों में शिक्षा प्रसार को मुख्य जिन्दु बनाया गया है। उनके क्छ उपन्यासों में पाश्चात्य शिक्षा के प्रिताहन मिलता है तो क्छ में नारी शिक्षा को विशेष स्प से महत्व प्रदान किया गया है। इसके साथ हो साथ किसानों को भी शिक्षित्त करने के लिए प्रयास किया गया है। "ब्राह्मण की बेटी" में पाश्चात्य शिक्षा पर जल अरूण के इस कथन से मिलता है:- " जोला, यदि विलायन जाने से जाति जाती है तहें जाये, मेरे लिए वहीं जच्छा।"

^{। •} शरत समग्र भाग -3, प्०- 333

" नव विधान " उपन्यास में भो इसो दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं। विभा सोमेन्द्र को जो कि शैलेश्वर का लड़का है, विलायत पढ़ने के लिए भेजना चाहती है। " उसको बड़ो इच्छा थो कि सोमेन्द्र विलायत में जाकर पढ़े और मनुष्य बने।"

"दत्ता" उपन्यास का नरेन्द्र कैशानिक चिन्तन का प्रचार - प्रेसार करता है।

" नरेन्द्र कहता है निक - हम लोगों के देश में वास्तिविक किसान नहीं है। ऐसी करना पैतृक" व्यवसाय है, इसलिए लोग समय -असमय दो बार हल चलाकर बोज छिड़क कर आकाश को जोर मुख बाए देख्ते रहते हैं, इसे ऐसी करना नहीं कहते, यह तो लाँटरो का एक ऐल है किस जमकेन में कब खाद देनी चाहिए, खाद किसे कहते हैं, यह सब वे जानते ही नहीं। साथ यह विह्या भो सीख आया है। अच्छी बात है, किसी दिन जाइयेगा उसका स्कूल देखेने। मेदान में वृक्ष के नीचे बाप-बेटा-बाबा सब मिलकर जहाँ पाठशाला में बैंठते हैं वहीं पर। "

श्रीकान्त की राजन्थमो स्वदेशी शिक्षा का प्रवार- प्रसार करती है। "पण्डित जी" उपन्यास में सार्वजनिक शिक्षा पर बल दिया गया है। "आजकल सभी लोगो"

शस्त समग्र ,भाग - 2, पृ० - 297

^{2.} शरत समग्र, भाग - 2, प्0 - 27

ने समझ लिया है कि देश में कोई करने यो ग्य काम है तो वह सर्वराधारण के बालकों को शिक्षा देना है। शिक्षा देने के सिवा हम चाहे और जितने काम करें, वे सब व्यर्थ हैं।

" विमुद्दास " उपन्यास में नारी शिक्षा पर बल दिया गया है। वन्दना जो कि पढ़ी - लिखी लड़की है उसे इंगित कर दयामयो कहती है - "पढ़ी - लिखी लड़कियों" को बात ही कुछ और होती है। यदि त्म साथ न होती तो आज सभी को हतना विमदा में पड़ना पड़ता।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि शरतवन्द्र पाइचात्य शिक्षा, वैज्ञानिक चिन्तन के प्रसार, नारी शिक्षा एवं सार्वजनिक शिक्षा पर विशेष बल देते हैं।

छ्याङ्त समस्या और शरतचन्द्र का दृष्टिकोण:

छुआ छूत से ग्रस्त बंग सभाज पगु हो गया था। मानव -मानव में भेदभाव की परम्परा ने देश के सामने एक ऐसी समस्या पैदा कर दी कि उसमें सदासयता का रह पाना असम्भव सा लगने लगा। समाज में छुआ छूत के उन्मूलन

शरतचन्द्र, भाग -3, प्० · 272

² शस्त समग्र., प्0 - 156

के लिए नक्जागरण सुधारवादी आन्दोलन में मुख्य मृद्दा बनाया गया । सभी सुधारवादी संगठनों ने इस ऋष्या को अतार्किक एवं अमानवीय घोष्टित किया । सभी व्यक्ति एक समान है । इस भावना को प्रथय मिला ।

शरतचन्द्र के अधिकांश उपन्यासों में इस क्षाया के उन्मूलन पर बल दिया गया । कुछ उपन्यासों में इस क्षुया का चित्रण कर उसके प्रति धृणा पैदा करने का प्रयास किया गया है "पय के दा वेदार " उपन्धास में अपूर्व के वर्मा जाने के प्रश्न पर उसकी माँ कहती है - तू पागल हो गया है। उस देश में कोई आदमी नहीं जाता । वहाँ जात-पात. छूत-छात. आचार - विचार व्छ नहीं. में तुझे वहाँ नहीं जाने दूंगो। इसका धिनोना रूप भारती तथा तिवारी के बीच इस वार्ता में मिलता है " सहसा भारती बोल उठी. अच्छा एक बातप्छती हूँ आपसे। मेरे हाथ का पानी पीने से तिवारी को जाति तो मारी गयी। इस पर तिवारी ने निष्ट्रचय किया " कि कलकरता जाकर वह अपने घर चला जायेगा, वहाँ गंगा स्नान रकरके, छिपकर गोबर आवर और किसो बहाने बाह्मण भाजन कराकर वह अपने देह को किसो प्रकार शृह कर लेगा।"

शस्त सम्गः भाग - ।, प्० - 156

^{2·} शस्त सम्ग्र: भाग - 1, पृ0- 198

इस प्रकार कुछ उपन्यासों में छुआ छूत का नग्न रूप प्रदिशित करके पाठक के मन में इस क्षुधा के प्रति घृणा पेदा करना चाहा है।

"गृह दाह " उपन्यास से " राम बाबू " कहता है कि -

= इस छूत-छात के भूत से ही तो देश धीरे - धीरे रसातल को जा रहा है, क्यों कि इसकी जड़ में घूणा है और घूणा का कभी अच्छा परिणाम नहीं होता। ्रक¦

"शेष पुरन " श्रीकान्त " तथा "चरित्र हीन " उपन्यास में इस क्युथा का तर्क्मूण देंग से ख्मडन किया गया है। शेष पुरन का नायक अजित कहता है - " अपने को बड़ा मानकर जो लोग अपमान करके, अपपको दूर रखना चाहते हैं, जो लोग अकारण ग्लानि करते फिरने हैं, वे तो आपके पाँव छूने यो य्य भी नहीं। संसार में देवी का आसन अगर किसो के लिए हो तो वह आपके लिए है।" "चिरंत्र डीन" उपन्यास में भी इसी पुकार की भावना पायी जातो है, "किरणमयो कहती है " हम इंसान नहीं है 9 या हमारे शरोर में इंसान का रकत नहीं है।

⁾कः शस्त समग्रभाग −2, पू० - 206 ो• शस्त समग्र:, वतुर्थं पर्व: 163

पैचम खण्ड , 126

"श्रीकान्त" उप यास की मुख्य महिला पात्र - राजलक्ष्मी जो कि प्यारी बाई के नाम से गाने का काम करने लाती है, कमल लता के साथ एक ही विस्तर पर शयन करती है। तथा श्रीकान्त से उसका विवाह सम्पन्न होता है।

"श्रीका त्त" उपन्यास में छुआ दूत पर स्थान -स्थान पर कुठाराधात किया गया है। जिस समाज में लोग "रख" को अछूत मान्हों हो अथवा "समाज विहिष्कृत व्यक्ति के धर में देह- त्यागने के कारण उसका शव -अछूत समभा जाए, उस समाज का भविष्य क्या हो सकता है १ " बोला इन्द्र, मरे हुए को जाति क्या १ यह तो वैसे हो है जैसे हमारी यह डोगी, आम या जामून जिस किसी की बनी हो उन्द तो इसे डोगी छोड़कर को ई भी नहीं कहेगा कि यह आम है या जामून।" उसी तरह है यह भी।"

इस प्रकार छुआ छूत के सन्दर्भ में शरत चन्द्र ने इस क्षुया के प्रति घूणा वैदा करके इसका तर्कपूर्ण धण्डन प्रस्तुत किया है।

शरत समग , चतुर्य पर्व, प्० - 470

दहेज पृथा और शरत चन्द्र का दृष्टिकोण

शास्तवन्द्र के सामाजिक उपन्यासों में दहेज पृथा एवं अनमेल 'विवाह जा विरोध भी किया गया है। "परिणिता" नामक उपन्यास में इन क्रुथा का विरोध परिलक्षित होता है। "समाज कहता है कि लड़की की उम्र हो चुकीं है, ब्याह कर दो, लेकिन ब्याहने का इन्तजाम नहीं कर सकता। ठीक हहते हो गिरीन, मुक्कों हो देखों न, मकान तक गिरवी रूप देना पड़ा, दो दिन बाद वाल - बच्चों को लेकर राह का भिखारी बनना पड़ेगा - समाज नब यह थोने हो कहेगा कि आओ हमारे घर बाध्य ले लो।"

इस प्रकार शात चन्द्र ने दहेज प्रथा से होने वाले दुष्परिणामों को और संदेत किया है।

अनमेल दिशाह और शरत चन्द्र का दृष्टिकोण

अनमेल जिवाह के परिणामस्वरूप नारी जीवन का सच्चा वेवाहिक सुख समाप्त हो जाता है। किसी तरह जिंदगी काटनी पड़ती है। अनमेल विवाह के परिणामर रूप बाल विद्यवाओं की वृद्धि बहुत सम्भव है। इसिंग्य नवजागरण सुधारवादी आन्दोलन में इस बुधुश का विरोध किया गया ।

शस्त चन्द्र, भाग -2, ६० - 330

शस्त चन्द्र के उपन्यास में भी इस क्षुया का विरोध मिल्हा है। "किध्वा की बेटी" उपन्यास में संध्या, गंग्लोम चटर्जी जी व कि उसके नाना की उम्र के हैं। से कहती है - " कहा है कि घाट के मूर्दें के गले में क्टे जूतों की माला बनाकर पहनाउँगी।"

इस प्रकार अनमेल विवाह के प्रति शास्तवन्द्र का बड़ा - कड़ा रख देखने को मिलता है।

शास्त चन्द्र के राजनैतिक विद्यार :

बंगाल का सुधारवादी आन्दोलन प्रारम्भ में भाववादी रहा । केवल समाज तथा धर्म में परिम्कार कर आत्मा को उन्नित पर बल दिया गया । किन्तु शीघ्र ही इस आन्दोलन ने राजनेतिक केलेवर धारण करना प्रारम्भ कर दिया । राजनीति , के देन्न में गांधी जो के असहयोग आन्दोलन का प्रभाव सम्पूर्ण देश पर पड़ने लगा । किन्तु साथ ही क्रान्तिकारी विद्वार धाराएं भी कम प्रभावकालो नहीं रहीं । साम्प्रदायिक एकता, देश प्रेम, किलान जागरण को भावना भी बलक्ती हुई । जब सम्पूर्ण देश इस वातावरण से धुब्ध शा, शरदवन्द्र भो इससे अञ्चल नहीं रह सके ।

[।] श्वरत समग्र ,भाग -3, पु०- ३६।

साम्प्रदायिक एक्ता सम्बन्धी विचार :

शस्त चन्द्र ने साम्प्रदायिक्ता के परिणाम को गम्भीरता से महसूस किया । जोर हिन्दू -मृस्लिम एकोकरण को भावना पर विशेष बल दिया । उनके साम्प्रदायि एका भावना में ब्राह्म समाजियों से भी सामन्जस्य दिखाया गया है । इस पृकार एकोकरण के दो पृमुत्र रूप परिलिखित होते हैं । पृथ्म ब्राह्म समाजियों से एकीकरण दितीय हिन्दू मृस्लिम एकोकरण "गृह दाह " उपन्थास की नायिका अचला ब्राह्म समाजी है तथा महिम हिन्दू नव्युव्क है । अचला को श्वादो महिम के साथ सम्पन्न होती है । इस पृकार ब्राह्म समाज एवं हिन्दू समाज के समन्वय पर बल दिया गया है । यही भावना " दल्ता " उपन्यास में भी परिलिधित होतो है । विजया जो कि ब्राह्म समाजो लड़का है, उसकी शादी नरेन्द्र के साथ हिन्दू रीति से सम्पन्न होती है ।

बु हम समाज तथा हिन्दू समाज की एकता तक ही शास्त चन्द्र की दृष्टि केन्द्रित नहीं रहो । उनके उपन्यासों में हिन्दू मृस्लिम एकोकरण के प्रयास भी मिलते हैं । "ग्रामाण समाज उपन्यास में रमेश हिन्दू मृस्लिम एका की भावना से ओत पूरीत है । उसी के परिणाम स्वरूप " वहाँ हिन्दू मुसलमाना ने आपस में माई चारा स्थापित कर लिया है । दोनों एक मन और एक प्राण हैं ।

शस्त समगु भाग -।, प्० - 394

"गृह दाह " उपन्यास में केदार बाबू के इस वक्तव्य में भो साम्प्रदायिक एक्ता को भावना पायी जातो है " किसी धर्म से उन्हें बैर नहीं क्यों कि संसार के सभी धर्म मूलत: एक हैं। हिन्दू के राम और मुसलमान के अल्लाह एक ही है।

"श्रीकान्त" उपन्यास में भी यही भावना स्पष्ट हुई है। श्रीकान्त गौहर से कहता है " तुम मुसलमान को मन्तान कभी नहीं हो। ऐसा लाता है कि तुम्हारे शरीर में शुट्ट ब्राइसण का रक्त प्रवाहित है।

इस प्रकार शास्त चन्द्र के कुछ उपन्यामों में ब्राह्म समाज तथा हिन्दू समाज से एकोकरण की भावना पायी जाती है तो कुछ उपन्यासों हिन्दू -मुस्लिम एकीकरण की भावना पृष्टि हुई है।

स्वदेश प्रेम और शरत चन्द्र की दृष्टि:

स्वदेश प्रेम के तारा ही देश का कत्याण सम्भव था। मातृश्चिम की सेवा में अपने जीवन का उत्सर्ग ही नवजागरण का मूल मन्त्र था। देश प्रेम के सामने अपने स्वार्थ तुन्छ हैं इसलिए देश प्रेम की भावना को विशेष रूप से प्राल्लिवत किया गया है।

[ा] शरत समग्र, भाग- 2, प्० - 220

^{2·} वही, भाग - क्तुथं पर्व, पृऽ - 507

शरत चन्द्र के उपन्यासों में भी देश प्रेम को यह भावना पायी जाती है " पथ के दावेदार " उपन्यास में यह भावना क्लिष स्प से मूर्जरत हुई है। अपूर्व के प्रवासी जावन के समय के चिन्तन में इसकी प्राप्ति होती है " हे अनागे देश के शिक्तहीन लोग। जिस पेश्वर्य शालिनी भूमिका भार तुम लोग सम्हाल नहीं सकते, इस पर व्यर्थ का लोभ किसलिए १ स्वतन्त्रता का जन्मजात अधिकार केवल मनुष्यत्व को नहीं। तुम केवल अपनी क्षुद्र इन्द्रियों को ही मनुष्य समअ बैठे हो। इससे अधिक आ त्मधाती प्रवृत्ति और क्या हो सक्ती है। अपूर्ष आगे कहता है कि हम पराधीन राष्ट्र के हैं भारतो। न अप्रैज हैं और न प्रांसीसी, अमेरिकी भी नहीं।

मातृश्चिम के प्रति प्रेम न केवल पुरुष पात्रों में परिलक्षित होतो है।

महिला पात्र भी इससे युक्त है। "ग्रामीण समाज " उपन्यास में मिंडला पात्र
क्रिकेट कर रमेश को प्रोत्साहित करतो हुई करती है " जिस रास्ते पर तुमने पैर

रखा है, सिर्फ वही एक रास्ता है। इसोलिए तो में तुमसे बराबर कहती हूँ कि

क्रिका अपनी इस जन्मभूमि को किसी तरह भो छोड़कर न जाना।"

शस्त समग्र, प्o - 182

शास्त समग्र, प्० - 198

शरत समग्र, प्० - 373

देश प्रेम की यह भावना "शोकान्त" उपन्यास में भी दृष्टव्य है "यह सोने की भूमि किस तरह धीरे - धीरे ऐसी शुष्क, ऐसी रिक्त हो गयी, केसे देश की समस्त सम्पदा विदेशियों के हाथ में पड़कर धीरे - धीरे विदेश में चली गयो किस तरह मातृ भूमि को समस्त भेद भजा और रक्त को विदेशियों ने शोषण कर लिया, मगर हां देश का सेवा करना भो हम लोगों का एक द्वत है।

इस प्रकार शरत चन्द्र के उपन्यासों में कहीं - कहीं आत्म बिलदान की भावना के तारा देश प्रेम दिखलाया गया है तथा किन्हों - किन्हों स्थलों पर देश के शोषण तथा विदेशियों द्वारा दो हन पर भी चिन्ता व्यक्त की गयी है।

गाँधीवादी विवारधारा

देश के राजनेतिक मंच पर गाँधी जी के आ जाने से क्रान्तिकारी परिकर्तन
परम्भ होता है। उन्होंने बद्धत उड़ी श्रन्थता की समाप्ति को। देश को सही
दिशा निर्देशन दिया। साहित्यकार उनके असहयोग तथा स्वदेशी आन्दोलन एवं
मातृ भाषा प्रयोग से विशेष प्रभावित हुए।

^{। •} शस्त सम्ग्र, भाग - 93 वृ प्0 - 425

गांधी वादी विचारधाराओं का प्रभाव शस्त चन्द्र में भी देखेने को मिलता है। " जागरण " उपन्यास में गांधी जो के विचारों का पूरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस उपन्यास में असहयोग आन्दोलन का बड़ा प्रभाव है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र अमर नाथ असहयोग आन्दोलन का समर्थन करता है, वह कहता है - " तुम लोग भार काट मत करों, किसी व्यक्ति विशेष या अंग्रेज के पृति विशेष भावना अमने अन्दर न आने देना! लेकिन इस दूराचारी अध्या परायण और असत्य प्रिय मौजूदा सरकार से किसी प्रकार का सम्पर्क मत रखों। नौकरी की लालव में पड़कर इसके आगे नाक मत रगड़ों, विधा प्राप्ति के लिए स्कूल कॉलेज के हाते के अन्दर पैर मत रखों। इन्साफ की आशा से इसको अवहरी की और मत बढ़ों।

स्वदेशी आ न्दोलन का प्रभाव भी इस उपन्यास में देखने को मिलता है " अमर प्र " बाबार में विदेशी क्यड़ों" को बिक्री गुण्डों ने रूकवा दी है।

कृषक, श्रीमक एवं महदूर जागरण

राजनैतिक सुधारवादी आन्दोलनों में कृषकों एवं श्रीमक मजदूरों को जगाने का प्रयास किया गया था। इसके परिणामस्वस्य इन वर्गों में संगठन की भावना

शस्त समग्र, भाग -3, प्० - 377

वही, " प्० - 381

पैदा हुई । पूँजोपतियां हारा स्थापित के क्टारयों एवं कारखानों में हड़ताल एवं आगजनी हुई । पूँजीपति वर्ग श्रीमक वर्ग का शोधण करता, है, यह भावना श्रीमक एवं मजदूरों में कूट- कूट कर भरी गयो । कृषक जीवन के उत्थान का शी प्रयास किया गया ।

शास्त चन्द्र के उपन्यास "दत्ता " में नरेन्द्र ऐसी की जानकारी किसानी' को देता है। किसान जब तक देवा भिम्द्रजी रहेगा, तब तक उसका विकास सम्भव नहीं, यह भावना नरेन्द्र में समाहित है।

श्रीमक एवं मजदूर जागरण को भावना "पथ के दावेदार " नामक उपन्यास
में क्लिप स्प से पायी जातो है। श्रीमक एवं मजदूर वर्ग के संगठन को आव्हरयकता
अतिश्रमता से महसूस की गयो - "एक बार सब मिलकर एक साथ छहे हो कर कही कि यह अत्याचार हम लोग और अधिक सहन नहीं करेंगे। केवल एक बार तुम लोग
अपने सच्चे बल को पहचान लो, पित्र देखों वे केसे तुम्हारे बदन पर हाथ उठाते हैं।
जोर से चिल्लाकर सबको सुना दी जिए कि सध्वा हुए बिना तुम लोगों के उदार
का कोई भी उपाय नहीं है। कारखानों के मालिकों ने आज हम लोगों का जेसा
अपमान किया है, तुम लोग "यदि अपने को मनुष्य समझते हो तो उसका बदला
अवहरय लेना।

शास्त ममगु, प्०- 229

अमर नाथ असहयोग जान्दोलन से प्रभावित होकर लगान बन्दी करवाता

जमोदारो उन्मूलन को भी भावना इस उपन्यास में दृष्टव्य है - "पुण को मन: स्थिति में भारी परिवर्तन आ गया है। अब वाहे यह शिक्षा का परिणाम हो, वाहे युग का धर्म हो, वाहे जमीदारो अत्याचारों का ही नतीजा हो, जनता अब जमीदारी पृथा का नारा चाइती है। दो रोज पहले हो या दो रोज बाद, जमीदारी मिटेगी जरूर। जमीदारों को विदा होना होगा, तुम किसो तरह बचा नहीं सकोंगे।"

" विश्रद्वास" नाम क उपन्यास में भी जमीदारो उन्मूल पर बल दिया गया है - " इस एक साधारण देहाती जमीदार का इतना भय, यही तो हमारे दिश्मन है, हमारा छून निरन्तर कूप रहे हैं, हमारा असली आक्रमण तो इन्हीं के विरू हैं।"

"पथ के दावेदार " नामक उपन्यास में मातृभाषा से प्रेम दिखाई पड़ता है। इसो उपन्यास में पृगंस कृतिन के समय उद्घोषित स्वतन्त्रता, समानता तथा विश्व बन्धुत्व का स्वर भी सुनाई पड़ता है। इसो भावना को चरिताय करने के लिए पथ के दावेदार " नामक क्रान्तकारी संघ का निर्माण होता है। तथा नवतारा, सुमित्रा एवं भारती जैसी महिलायें इस हदल को सदस्य बनती हैं।

शरत समग्र, भाग -3, प्०- 407
 वहीं भाग -4, प्०-।।

मानव्तावाद की भावभूमि पर प्रतिष्ठित शास्तवन्द्र के उपन्यास सामः जिक सुधारवादी आन्दोलनों से ज्यादा पृभावित दिखाई पड़ते हैं। जिसके बर्त्तगत नारी उतार, सामाजिक कुरी नियों का अन्त, शिक्षा का प्रसार, पाश्चात्य शिक्षा पर समर्थन पर विशेष बल दिया। राजनैतिक क्षेत्र में गांधी जी के प्रभाव से ज्यादा प्रभावित दिखलायो पड़ते हैं। जिसके कारण असहयोग आन्दोलन नथा स्वदेशी आन्दोलन को अपने उपन्यास में स्थान दिया।

मानयतावाद

नक्जागरण की बुनियाद मानक्तावाद पर हो पड़ी थी। इसिल्ट नक-जागरण कालीन सभी बिन्दुओं पं मानक्तावाद समाहित है। सारे सुधारवादी प्यास मानक्तावाद के हो परिणाम थे। मानव सेवा को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया। गरीब, असहायों, निर्बल वर्गों तथा रोगियों के पृति सहानुभूति की भावना को हो मानक्तावाद कहा जा सक्ता है।

शरतचन्द्र के उपन्यास में यह मानव्तावाद सर्कं दृष्टिगोचर होता है।
"बड़दीदी" उपन्यास में एक विध्वा को सती होने के स्थान पर उसे सामाजिक
हित के कार्यों में नियोजित करने का उपदेश निश्चित रूप से मानव्यावादी चिन्तन
है। मरणासन्न योगेन्द्र नाथ अपनो पत्नो माध्यी से कहते हैं।" माध्यी, जिस
जीवन को तुम मेरे सुझ के लिए अर्थण करती, उसे सबको सुख देने के काम में लगाना।

जिसके चेहरे पर तुम्हें मायूसी नजर आये, उसे खुरा करने की कोशिश करना ।"

"दत्ता " उपन्यास की विजया कहती है " हम लोगों के शास्त्र में लिखा है दरिद्र भगवान की विशेष मूर्ति है उनको सेवा का अधिकार सभी को होगा।"

मानवतावाद "गृहदाह " उपन्यास के मुख्यात्र सुरेश के क्षाकृत्य में पिरलिक्त होता है जब प्लेग तथा आग की लमेट में आये फेजाबाद में आकर वह मरीब, असहाय, एवं मरीजों को सेवा करता है।"

"उस दिन शहर के गरी बों के मेहले में जो रों की आग कला गयी।

एक तो प्लेग पैला है, तिस पर यह दृष्टिंना लो गों के कष्ट की कोई सीमा न

रही। कुछ दिनों से सुरेश नाम के एक भद्र युवक यहाँ सावर रूपये, पैसे, दवाई और
शारी रिक श्रम लगा कर रोगियों को सेवा कर रहे हैं।

"सुरेश " अपनी सारी जायदाद गरी छो के कार्य के लिए दे देता है। इस प्रकार मानवता वादी विचारधारा सुरेश में अत्यध्कि है।

शरत समग्र, पृ० - 8

वही भाग, -2, पृ० - 27

वैहो " पृ0- 132

"परिणिता" नामक उपन्थास में "गिरीन्द्र " और "शेखर ऋणग्रस्त "गुरुचरण" को सदैव मदद करते हैं।

"श्रीका त्त" उपन्यास में इन्द्रना थ, श्रीका त्त तथा महिलाओं में स्नन्दा राजल्थमी मानवतावादी विचारधारा नाबालिंग बच्चे को तुम उसकी सम्मत्ति से विचत रखंकर जिन्दगी भर के लिए राह का भिखारी बना दोगी। तथा "यह जायदाद जिसकी है उसे अगर आप वापस नहीं देंगे तो में जोते जो इस महापाप के अन्न का एक दाना भी अपने पित पुलों को न खिला स्कूंगी।"

"अरक्षाया " उपन्यास में अतुल जाति युत जानदा को मानवतावादी भावना के परिणामस्वरूप अपनाता है। " देना-पावना" उपन्यास की षोडसी कृष्ठाश्रम में जाकर रोगियों की सेवा करती है। निर्मल अपने ससूर के विपरीत मानव सेवा को ही अपना धर्म समझते हैं, लेकिन जो पीड़ित है जो अस्वस्थ है, उनको रक्षा करना हो तो हम लोगों का पेशा है - माँ।"

"शभदा "उपन्यास का मदानन्द - शुभदा के पति हराण चन्द्र के परिवार

[।] शरत समग्र , भाग दो - पृ० - ४४३

^{2·} वही भाग - तीन, प्o - 444

वही, भाग - तोन, पृ० - 92

का पालन- पोषण करता है। छलना को शादी स्वयं अपने पैसे से करता है।
ललना शुभ्दा की बड़ी लड़की परिवार संयोजन के लिए कलकत्ता जाकर सत्यन्त
धृणित कार्यं करने के लिए तैयार हो जाती है। इस प्रकार यह उपन्यास मानवतावाद से ओत- प्रोत है। "जागरण" उपन्यास का मुख्य पात्र अमरनाथ मानवतावाद
का संवाहक है वह कहता है-इसदेश में अपंग, कमजोर, अयो य- अकर्मण्य को भी
रोटी - कमड़ा पाने का हक है। "

"चरित्र होन " उपन्यास में मुफ्त दवाधाना खुलवाया जाता है। हैजे की रोक थाम की व्यवस्था की जाती है " इधर - उधर को कुछ बातें सीखंकर अपने गाँव के मकान पर एक बिना पैसे वाला मुफ्त दवाखाना खोल दूँमा। चिकित्सा के अभाव से देश गाँव के गरीब दुखो हैजे की बोमारी से उजड़ते जाते हैं उन लोगों की विकित्सा करना हो मेरा उद्देश्य है।"

" विष्रदास " उपन्यास में गरीब लोगों के प्रति महानुभूति व्यक्त की गयी है " देश के पंचानवे प्रतिक्षत लोगों को एक समय भी भरपेट खाना नहीं मिलता । प्रात: से सन्ध्या तक परिश्रम करने पर भी नहीं - और बिना हाथ -

शस्त समग्र, भाग -3, प्०- 391

^{2.} वही, भाग-पंचम खण्ड प्०- 18

पेर ड्लाये हो मेरे लिए मेवे- पकानों का प्रबन्ध है। पाप का यह दाना मुझे नहीं भाता। इस प्रकार मानवताबाद का प्रमुख स्वर शास्तचन्द्र के प्रत्येक उपन्यास में पह्या जाता है। यह मानवताबाद नारी तथा प्रष दोनों पात्रों में समान रूप से है।

ईरवरवाद सम्बन्धी दृष्टि

नवजागरण आन्दोलन में ईरवर सम्बन्धो धारणाएं वई प्रकार की परिलिक्त होती है। समाज सुधारवादो संगठन ईरवर के सम्बन्ध में जलग -अलग धारणाएं रख्ते थे। जैसे - ब्राह्म समाज में एकेश्वर वाद पर बल दिया गया। आर्थ समाज में मूर्ति पूजा का विरोध किया तथा अन्य सामाजिक संगठन ईश्वर को उपासना में विश्वास करते थे।

ब्राह्म समाज तथा अर्थ समाज जैसे सुधारवादी संगठन मूर्ति पूजा का विरोध कर रहेथे, किन्तु जिस देश की जनता को भावना मूर्ति पूजा में लग गयी है वह उस विचार को क्यों मानेगो जिसके द्वारा उसकी भावनाओं को ठैस पहुँचती हो "निस्पयोजन अपने पड़ोसी के धर्म विषयास पर आप आधात करेंगे -

[।] सरत समग्र, भाग - 4, प्० - 18

इस पर विश्वास न करना ही तो स्वाभाविक है।

"जागरण" उपन्यास में मूर्तिपूजा का समर्थन मिलता है। " अमर नाय कहता है " देवी - देवताओं पर तुम्हारा विश्वास नहीं, उन्हें विचत करो यह में नहीं होने दूंगा। " "चिरत्र हीन " उपन्यास का नायक "मिहम" आर्य समाजी विचारधारा से प्रभा वित लगता है जिसमें मूर्तिपूजा तथा ब्रह्म का विरोध किया गया था। केवल देदों को महत्व दिया गया था। मिहम कहता है - छोटा सा निराकार ब्रह्म मानां, या हाथ पावधारी तैतीस करोड़ देवताओं को ही स्वीकार करें - कोई मुक्ति नहीं लगती। "

 $x \times x \times x \times x$

। शरत समग्र, भाग -2, प्० - 17

- 2 शस्त समग्र. भाग -3, प० -- 385
- 3. शस्त समग्र, पंचम खण्ड- प्०- 15

चत्र्यं अध्याय

"नक्जा गरण एवं प्रेमवन्द"

सामाजिक सुधार

- नारी उद्वार:
 नव्यागरण का शायद सबसे महत्वपूर्ण प्रयास नारी सुधार
- था। बंगाल का नवजागरण भाववादी था तथा राजनैतिक कम । हिन्दी
 पुदेशों में नवजागरण का पुक्ट स्प । 857 को क्रान्ति से माना जाता है । इस
 क्रान्ति में हिन्दू मुसलमान दों तों सम्प्रदायों के बीच एकता के दर्शन हर '
 सम्पूर्ण भारत में एकोकरण का प्रयास किया गया । बहादूरशाह जफर को
 सर्व सम्मति से राष्ट्रीय नेता के स्प में स्वीकार किया गया। यह पहला
 क्रव्सर था जब इतने बड़े पेमाने पर संगठन के प्रयाम किये गये, अप्रैजी शासन
 के विस्तृद जनता में भावना भरो गयी, देश प्रेम तथा साम्प्रदायिक एकता
 जिसे कि अप्रैजों ने तहस नहस कर दिया था, सम्पूर्ण देश में फिर से पैलायो

इस प्रकार हिन्दी प्रदेशों के राजनेतिक सुधारवादी आन्दोलन प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से हो माने जा सकते है।

बंगाल के समाज सुधार आन्दोलन भी हिन्दी प्रदेशों में समाहित किये गये। "भारतेन्द बाबू हरिशचन्द्र" बंगाल के इतिहास प्रसिद्ध सेठ था। इसके साथ ही ईरवर वन्द्र किया सागर भो बनारस आया- आया करते थे। "भारतेन्द्र बाबू हरिश्चन्द्र " का उनके माथ सौ हार्द्रपूर्ण सम्बन्ध था। चूँ कि ईश्वरचन्द्र किया सागर सुधारवादी आन्दोलन के प्रमुख नेता थे इसलिए उनके व्यक्तित्व का प्रभाव सिन्नक्ट के व्यक्तियों का प्रभाव सिन्नक्ट के व्यक्तियों का प्रभाव सिन्नक्ट के व्यक्तियों तक पहुँचना स्वाभाविक था। भारतेन्द्र बाबू हरिश्चन्द्र भा इससे अञ्चल नहीं रहे। उन्होंने उनके नारी - उतार सम्बन्धी प्रयासों का अपने साहित्य में चित्रण किया।

देश में अग्रेजों को आर्थिक शोधन नीति के किल्ह द्विटिश साम्राज्य-वाद तथा पूँट डालों राज्य करो, की नीति के विल्ह आचार्य महावीर प्रसाद हिवेदी ने अपने लेखों के माध्यम से आवाज बुलन्द की। "निराला" जी का सीधा सम्बन्ध बंगाल से था, इसलिए उनके भी साहित्य में नवजागरण के भाव पंरिलक्ति होते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी भी बंगला साहित्य से विशेष रूप से प्रभावित हुये।

इस प्रकार हिन्दो मा हित्य के प्रबुह लेखकों ने नवजागरण को अपने साहित्य में स्थान दिया । प्रेमचन्द ने नवजागरण के सामा जिंक सुधारवादों दोनों स्पों को आत्मसाद किया और नवजागरण कालीन निम्न बिन्दुओं को स्थान दिया । नारो सुधार के बिना संशाज सुधार की परिकल्पना सर्वथा गलत है। इसलिए नारो उद्यार का प्रयास नवजागरण आन्दोलन में किया गया था। नारी उतार के लिए विध्वा - विवाह का समर्थन, अनमेल विवाह तथा बाल- विवाह पर रोक बहु - विवाह पर रोक, नारी- शिक्षा पर बल, दहेज - प्रथा पर रोक सती प्रथा का विरोध, वेद्या वृत्ति का विरोध किया गया।

"गोदाम " उपन्यास में भी विधवा विवाह का समर्थन प्र जोर दंग से किया गया है। "होरी" का लड़का "गोबर" "ज़िन्या" नामक विधवा को अपनी पत्नों के रूप में धर लाता है। " गोदान" उपन्यास

[&]quot;प्रेमा" प० - 80

का ही एक अन्य पात्र 'शोभा भी एक नोहरी नामक विधवा से शादी कर लेता है।

इस पुकार "गोदान "उपन्यास में विध्वा विवाह को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। "संजोग से एक जवान विध्वा मिल गयी जिसके पति का देहान्त हुए केवल तीन महीने हुए थे, एक लड़का भी था। भोला को लार ट्यक पड़ी, झट- पट शिकार मार लाये। जब तक सगाई न हुई उसका घर खोद डाला।"

अनमेल विवाह का विरोध

अधिक आयु के पूरुष के साथ जब कम अवस्था की लड़को की शादी को जाती है तो इस प्रकार के विवाह को अनमेल विवाह कहते हैं। कभी - कभी बाप - नाना को अवस्था वाले प्रष के साथ 12 या 13 साल को लड़को की शादी हो जाती थो जिसके कारण लड़को का जीवन कंटका - कीण हो जाता था । उसका जोवन उदासीनता से परिपूर्ण हो जाता था । ऐसे विवाह का यह भी परिणाम होता था कि वह शीछ ही विधवा हो जाती थो । नवजागरण में ऐसे विवाह का विसोध नारी उनार का

ही एक स्प था।

गोदान " प्० - 297

"प्रेमचन्द के उपन्यास " निर्माला" में इस क्ष्मथा का विरोध किया गया है।
" निर्माला" जो एक अल्प व्यस्क लड़को है उसकी शादी तोता राम से होती
है जो उसके पिता को उम्र वे हैं। इस पर प्रेमचन्द का विचार है "बेजोड़
विचाह हो जाने से वह चाहे किसी को और आँखे उठाकर न देखे, पर
उसका चित्त दु: थी रहता है।"

"गोदान" उपन्यास मं रतन का पति एक वृह है। वह इभी भी उसके साथ वैवाहिक जीवन का आनन्द नहीं प्राप्त कर पाती। होरो की बेटी हपा को शादो राम सेवक से होती है। राम सेवक हपा से उम्र में बहुत ही बड़ा है। हपा के जोवन का चित्रण विवाह के बाद नहीं हो पाता है। पिलहाल, निर्मेला" उपन्यास में इस अनमेल विवाह का त्रासद हप दिखलाई पड़ता है।

दहेज प्रया पर रोक: =-

दहेज पृथा सामान्य रूप मं उस वस्तु या उपहार को कहते हैं जो शादी के समय लड़की के पिना को तरफ से वर पक्ष को दिया जाता है। यह पृथा इननी

निर्मेला, पृ० - 93

कुस्सित होने लगो जिसके कारण लडिक्याँ अभिशाप समझी जाने लगो। कितनी लड़िक्यों का जन्म लेते हो क्ध कर दिया जाता था। अनमेल जिजाह को बदावा मिला। लडिक्यों की त्रासदों का चित्रण प्रेमचन्द के उपन्यास में देखने को मिलता है। "निर्मेला" उपन्यास में भाल चन्द्र कहता है " बस चले तो दहेज लेने वालों और दहेज देने वाले दोनों ही को गोलो मार दूँ, चाहे पगंसी क्यों न हो जाए। पूछों आप लड़के का जिजाह करते हैं या उसे बेचते हैं ? "

"गोदान " उपन्यास में भी दहेज प्रथा का यही विरोध होरी की बेटो सोना के इस वक्तव्य में परिलक्ष्त होता है " में तो सोनारी वालों से कह दूंगो, अगर तुमने एक पैसा भो दहेज लिया, तो में तुमसे व्याह न करेंगो।"

इसो उपन्यास का ुरुष पात्र मथुरा जिसके साथ सोना की शादी होती है वह भी इस दहेज का विरोध करता है।

अनमेल विवाह के मूल में यही दहेज प्रथा ही है, जिसके कारण स्पा को शादी राम सेवक नामक अधिक उम्र के व्यक्ति में होती है।

[।] निर्मेला, पृ० - 20

गोदान, प्० - 292

वेशयावृत्ति का अन्त:-

नारी सुधारवादी केने में के यावृत्ति का अन्त एक ऐतिहासिक कदम था। नारो जीवन को जिल्लासा तथा पुरुष के शोधम से बचाने का यह सही रास्ता था। इस क्षु था के कारण नारियां केवल पुरुष के आमीद - प्रमोद तथा भोग विलास की वस्तु बनी रही। उसके दिल में प्रेम नहीं, मानक्ता नहीं, आत्म सम्मान नहीं। अपना सब कुछ वह पुरुष वर्ष पर न्यों छा - वर करती है मात्र पैसे के लिए।

प्रेमवन्द ने अपने उपन्यासों में इस क्षुधा के अन्त उरने हेतु प्रयास किया । "गबन" उपन्यास में " जो हरा " जो कि एक नाचने गाने वाली देश्या है उसमें मानद्वावाद का गृण भरा हुआ है । वह "रमा नाथ " के संसर्ग में आने पर अपना पेशा त्याग कर रमानाथ के साथ प्रयाग टा जाती है । रमानाथ स्वयं कहता है " जालपा के त्याग , निष्ठा और सत्यप्रेम ने मेरी आंधे खोली और उससे भी ज्यादा जो हरा के सोजन्य और निष्व्यट व्यवहार ने । में इसे अपना सौभा य सम्भता हूं कि मुने उस तरफ से प्रकाश मिला जिध्य औरों जो अंध्यार मिलता है । विश्व में मुने सुधा प्राप्त हो गया । "

[।] गबन , प्० - 279

"गोदान" उपन्यास में नो यहां भाजना देखें को मिलती है। दिग्वजय सिंह की पत्नी मीना की इस ऋ या का अन्त करने का प्रयाम करती है " जे या अभी तक कोने में दलकी छो थी। अब उसका नम्बर आया। नोना भी हटर तानकर जमाना हो चाहतो थी के के या उनके पैरों पर गिर पड़ी और रोकर बोलो - दुलहिन जो, आज आप मेरी जान बर हा दें। में पिर कभी यहाँ न आ जंगी।"

वेश्यावृत्ति समस्या पर लिखा हुआ " सेवासदन " नामक उपन्यास वेश्या जीवन के चित्रण एवं उनका ख्दय परिक्तन करने में काफी सपल हुआ है। एक सामान्य नारी किस प्रकार वेश्यावृत्ति अपनाती है तथा उसका ख्दय परिक्तन किस प्रकार किया जा सकता है। इस उपन्यास में विणित है।

विद्ठलदास तथा पदमा सिंह जो कि इस उपन्यास के मुध्य पात्र हैं इस क्षुया को मिटाने का प्रजोर प्रयास करते हैं। विद्ठल दास कहते हैं "मेरा पहला उद्देश्य है कि वेश्याओं को सार्वजनिक स्थान से हटाना और दूसरा, वेश्याओं के नाचने - गाने को रस्म को मिटाना।"

गोदान, पृ० - 364

^{2.} सेवा सदन, प्० - 89

पदम सिंह के इस वक्त व्या में वेशया वृक्ति के विरोध का स्वर स्नायी देता है " ऐसी अवस्था में व्या यह सम्भाना कठिन है कि सैकड़ों स्त्रियों जो हर रोज बाजार में अरोशों में ढेजी दिशायी देती हैं, जिन्होंने अपनी ल्जा और सतीत्व को नष्ट कर दिया है, उनके जीवन कर सर्वनाश करने वाले हमों लोग है। वह हजारों परिवार जो आये दिन इस क्वासना को भंधर में पड़कर विलुप्त हो जाते हैं, ईशवर के दरबार में इमारा ही दामन पक्तेंगे, जिस प्रथा में इतनी बुराइयां हो उसका त्याग करना क्या अनुवित है।"

नारी स्वतन्त्रता :

नारी उदार सन्दर्भ मं सभी प्रयास निर्मूत साजित होंगे, यदि उन्हें स्वतन्त्रता के अधिकार से वीचत कर दिया जाये। इसिल्य नारो - स्वतन्त्रता भी आवश्यक है। उन्हें स्वतन्त्रता, समानता तथा आत्म सम्मान का ज्ञान नवजागरण आन्दोलन में कराया गया। प्रष वर्ग के पृति परमुखा- पेवी प्रवृत्ति को समाप्त किया गया। नारी स्वतन्त्रता की भावना प्रेम चन्द के उपन्यासों में पायी जाती है।

सेवा सदन, पृ० - 107

"गबन" उपन्यास में वकील कहता है " यह समक्ष लीजिए कि

जिस देश में स्त्रियों की जितनी अधिक स्वाधीनता है वह देश उतना

ही सभ्य है। स्त्रियों को केंद्र में परदे में या प्रक्षों से कोसों दूर रखने
का ता त्यर्य यहां निकलता है कि आपके यहां को जनता इतनी आचार
मृष्ट है कि स्त्रियों का अपमान करने में संकोच नहीं करती ।" "गोदान"

उपन्यास की महिला पात्र " मालती " का व्यक्तित्व नारी स्वतन्त्रता
का ही प्रतीक है वह कहती है - " हम प्रवां से सलाह नहीं मांगती,
अगर वे अपने बारे में स्वतन्त्र है तो स्त्रियां भी अपने विषय में स्वतन्त्र
है । "

इस प्रकार मालती के चरित्राक्त हारा प्रेमचन्द ने नारी स्वतन्त्रता की स्थापना को है।

नारो महिमा की स्थापना :

नारो जीवन में समृचित परिवर्तन करके उनको महत्वमूण रियान दिया गया। अब नारो उपेक्षा और अपमान को पोछे दकेल कर सम्मानजनक

^{। ।} गबन, पृ० - १।

गोदान, पृ० - 175

जिन्दगी जीने की और अप्रसर हुई । नवजागरण आन्दोलन ने नारी
गरिमा को विशेष रूप से प्रतिष्ठित किया । उन्हें देवो की उपाधि से विशेषित
किया । इस प्रकार सारी जो अभी तक उपेदा का जीवन बिता रही थी, सम्मान
को पात्र बनी ।

प्रेम वन्द अपने उपन्यासों में नारी जोवन को विशेष रूप से महिमा मण्डित करते हैं। "गबन" उपन्याम में "रमानाथ" अपनी पत्नी "जालमा" से कहता है - "जिस उँचाई पर तुम मुझे ले जाना चाहती हो, वहाँ तक पहुँचने की मुझमें शिक्त नहीं है। वहाँ पहुँच कर शायद चक्कर खाकर गिर पटुँ। में अब भी तुम्हारे चरणों पर सिर भुकाता हूँ।"

- " काया कत्य " में " ध्वाजा" कहता है " उसने हर एक लड़की के लिए नमूना पेश कर दिया । खुदा और रसूल दोनों उसे दुआ दे रहे है । फरिस्ते उसके कदमों का बोसा ने रहे है । "
- " कर्मभूमि " उपन्यास में "मुन्नी " का पित तथा "अमर" दोनो नारी
 महिमा की भावना से ओत प्रोत है। "मुन्नी " का पित कहता है " में
 आपसे सत्य कहता हूँ बाबू जी, वह अगर बरी हो जाये तो में उसके चरण धो-

^{।• &}quot;गबन" प्। - 26

धोकर पीउँ और धर ने जाकर उसकी पूजा वह ।"

" सेवा -सदन " उपन्यास में विद्oल दास पुबल दंग से नारी
को महिमा मण्डित करता है। वह " स्मन" से कहता है - " स्मन", त्म सच
कहती हो, हम बेशक हिन्दू जानि अधोगित को पहुँच गयो और उच्च तक वह कभी
नब्द हो गयी होतो, पर हिन्दू हिन्यों हो ने उभी तक उसकी मर्यांदा को रक्षा
को है, उन्हीं के सत्य और स्-जीतिं ने उसे बच्चाया है। केवल हिन्दुओं की
लाज रखें के लिए लाखों स्त्रियाँ आग में भरम हो गयी, यही वह विलक्ष्ण भूमि
है जहां स्त्रियाँ नाना पुकार के कब्द भोग कर अपमान और निरादर सहकर प्रूषीं
की कूरताओं को चित्त में न लाकर हिन्दू जाति का मूख उज्जवल करती थी।
यह साधारण स्त्रियों का तो पूछना ही क्या।"

"रंगभूमि" उपन्यास में पृत्र के लिए बलिदान को प्रेरणा देने वाली जा हनवी को सम्बोधित करके " विनय" कहता है - " माता तुम्हें धन्य हैं स्वर्ग में बैठी हुई राजपुतानियों की बोर जात्माएं तुम्हारी आदर्शवादिता पर गर्व करती होंगो।"

^{। &}quot;कर्मभूमि" पृ०- ४६

मेवासदन , पृ0- 63

^{3· &}quot;रगभूमि "प्० - 427

ध्आद्त का विरोध ÷-

इस क्षुया के कारण मनुष्य- मनुष्य में धूणा पैदा हो गयी था। इसलिय समानता का नारा नवजागरण सुधारवादी आन्दोलन में दिया गया।

पुम बन्द के उपन्थाम में यह स्वर विशेष रूप से मुर्रित हुआ है।
"गबन" उपन्तास में देवीदीन को बुदिया कहती है " आदमो पाप से नीच होता
है। खाने - पोने से नीव नहीं होता है। प्रेम से जो भोजन मिलता है, वह
पिक होता है। उसे तो देवता भी खाते हैं।"

"निर्मला" उपन्यास में भालवन्द्र धुवा इत को उको मला बताता है। इसो प्रकार "गोदान" उपन्यास में धनुष यक के साथ सभी जाति का धर्म के लोग एक साथ बैठकर भोजन किए। इसी उपन्यास में माता दोन तथा सिलिया का जोवन पति-पत्नो स्प में व्यतीत होना भी छुआ इत का विरोध हो लगता है क्यों कि मातादीन पण्डित के पुल्येज बिंक 'सालया चमार की लड़को थी। माता दीन कहते है "नहीं सिलिया जब तक भाण है, तेरी शरण में रहूंगा। तेरी ही पूजा करेंगा।"

^{। ।} गबन, पृ । । । । । । । । ।

थ गौदान, पृथ - 388

" कायाकत्य " उपन्यास में मनोरमा धुआ छूत का विरोध करती हुई कहती है। दिल से यह भाव बिल्कुल निकाल डालिए कि वह नोची है और आप उच्चे हैं। इस भाव का लेश भी दिल में न रहने दोजिए।"

"अर्मभूमि" उपन्यास का अमरकान्त, शान्तिकुमार तथा नेना के व्यक्तित्व में इस अधुथा का विरोध परिलक्षित होता है। शान्तिकुमार कर् हते हैं तुम्हारे ही उपर समाज थड़ा है पर तुम अधूत हो। तुम मन्दिर में नहीं जा सकते। ऐसी अनीति इस अभागेकेश के सिवा और कहां हो सकती है १ क्या तुम सदैव इसी भाति पतिल और दिलत बने रहना चाहते हो।"

इस प्रकार प्रेमचन्द ने उपन्यासों के माध्यम से इस क्युथा का

रुदि एवं क्षु याओं का विरोध:

प्रेमचन्द के उपन्यासों में रूटियों एवं क्सुथाओं का विरोध भो मिलता है।
" प्रेम " उपन्यास की विध्वापूर्णा कहती है।" गगर चाहे क्छ हो, में इन बालों
को मुडवाकर मुण्डी नहीं बनना चाहती। ईश्वर ने सब ऋं तो हर लिया, अब
क्या इन बालों से भी हाय धोऊं।"

^{1.} कायाकत्प, भाग-2, पू० - 37

^{2.} कर्मभूमि, प्० - 116

विरोध का यह स्वर "गोदान "उपन्यास में ज्यादा म्खर हुआ है
मेहता कहते हैं "हम व्यर्थ का भार अपने उपर लादकर रुद्रियों और विश्वानों के इतिहासों के मलवे ने नी वे देवे पड़े हैं, उठने का नाम लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही, जो शक्ति जो स्पूर्ति मानव धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिए थी, सहयोग में, भाई चारे में, वह प्रानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का क्षण चुकाने की भेट हो जातो, गोदान उपन्यास की ही नारी धिनया स्थान - स्थान पर रुद्ध और क्ष्म्थाओं के विरोध में यही होती है।

" सेवासदन " में भो ली नामक देश्या के व्यक्तित्व में भी विरोध का यह स्वर सुनायो पड़ता है। वह कहती है " यह बेहूदा रिवाज यहीं के लोगां में है कि औरत को इतना जलील समक्ते हैं, नहीं तो सब मुल्कों में औरतें आजाद हैं, अपनी पसन्द से शादी करती हैं और जब उससे रास नहीं आती तो तलाक दे देती हैं लेंकिन हम सब वही पुरानी लकीर पीटे चली जा रही हैं।"

गादान उपन्यास में सदस्वोरी तथा नशाबन्दों का भी विरोध किया गया है। मेहता कहते हैं " आए आपके सामने पृतिका करता हूँ कि शराब की एक बूँद भी अप्र के नीचे न जाने दूँगा।"

[।] गोदान, पृ, - 217

सेवा सदन, पृ० - 40

^{- ----}

"भिक्षा वृत्ति " का उन्मूलन भी समाज सेवा का एक आं था। प्रेमचन्द ने भी इसके उन्मूलन पर बल दिया। "रंगभूमि" में सूरदास कहता है " सुनता हूँ, अधे कुर्सी, मोदे, दरो, टाट बुन सकते है, यह काम किसके सी खू, कुछ भो हो अब भीख न मागूंगा।

राजनैतिक सुधारवादी दृष्टिकोण:

राजनीति के कि में भी नवजागरण के परिणाम स्वस्प सुधार

प्रारम्भ ह्य । अंग्रेजों ने जो साम्प्रदायिकता का बीज सम्पूर्ण देश में बोया था ।

उसका बन्त करना बहुत ही आवश्यक हो गया । इसिल्य साम्प्रदायिकता का

विरोध किया गया । देश - प्रेम, अंग्रेजी नीति का विरोध , स्वतन्त्रता पर

बल दिया । प्रेमचन्द के उपन्यासों में राजनीति के ये सुधारवादो बिन्द पाये

जाते हैं।

👔 🖟 साम्प्रदायिकता का विरोध ⊱

" कायाक त्य " उप न्यास में सा मुदायिकता का सबसे ज्यादा विरोध मिलता है। हिन्दू - चकु धर, वागोशवरी तथा मुसलमान ख्वाजा साहब इसके मुख्य संवाहक है। चकु धर कहता है" हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौह सभी सत्कर्म

४कं रंग भूमि, प्० - 65

और सद विवार की शिक्षा देते है। हमें कृष्ण, राम, ईसा, मृहम्मद, बुद सभी महात्माओं का समान आदर करना चाहिए। ये मानव जाति के निर्माता है जो इनमें से किसा का अनादर करता है था उसको जुलना करते बेउता है। वह अपनी मृद्धीं का परिचय देता है।

इसी उपन्यास को मिलना पात्र वागोशवरी कहती है " नित्य समझाती रही, इन झगड़ी में न पड़ी । न मुसलमानों के लिए दुनिया में कोई दूसरा ठोर- ठिकाना है, न हिन्दुओं के लिए । दोनों इसो देश में रहेंगे और इसो देश में मरेंगे। पिर आपस में क्यों लड़ मरते हो, क्यों एक दूसरे को निगल जाने पर तुले हुए हो ९ न तुम्हारे निगले पे निगले जायेंगे, न उनके निगले तुम निगले जावोंगे। मिलन जुलकर रहो, उनहें बड़े हो कर रहने दो, तुम औट ही हो कर रहो, मगर मेरी कोन सुनता है।"

इसो उपन्यात के एक अन्य मुसलमान के का में भी साम्प्र
दायिक एकता की भावना दिखायों पड़ती है, वह कहता है - " मेरा तो यह

कौल है कि हिन्दू रही, चाहे मुसलमान, युदा के सच्चे बन्दे रही । सारो ख़िबियाँ

किसी एक कौम के हिस्से में नहीं आयी । न सब मुसलमान पाकी जा है, न सब

हिन्दू देवता, इसी तरह न सभी हिन्दू का पिर हैं न सभी मुसलमान मो मिन ।

1. का याकत्य, पुथम भाग, पु० - 193

जो आदमी दूसरी कोम से जितनी नम्भत करता है, समझ लीजिए कि वह खुदा से उतनी ही दूर है।"

प्रेम चन्द जी के "कर्मनूमि" उपन्यास में भी साम्प्रदायिक एक्ता की भाजना परिलिक्त होता है। इस उपनास के "हापिज हलीम " जो कि "सलीम " का पिता है, कहता है - " आइये, हम और आप गलै मिल कर उस देवी को रह को दुश कर जो हमारी सच्चो रहनुमा, तारोको में सुबह का पैगाम लाने वालो सुपैदी थी, शुदा हमें तौपनिक दे कि इस सच्चे शहीद से हम हक्मरस्तो और ध्विस्त का सबक हासिल करें।"

"रंगभूमि" उपन्यास में भी साम्प्रदायिक एकता को भावना दृष्टिगोवर होती है। इस उपन्यास की महिला पात्र सोपिया कहती है - " ईसा और कृष्ण में कितनी समानता है, पर उनके अनुवरों में कितनी विभिन्नता। कौन कह सकता है कि साम्प्रदायिक भेदों ने हमारी आ त्माओं पर कितना अत्याचार विध्या है।

[।] कायाकत्य, भाग - दो, प्० - 162

^{2.} कर्मभूमि, प्0 - 219

रंगभूमि, पृ**० - 1**06

इसी उपन्यास की " जाहनवी " में भी साम्प्रदायिक एकता की भावना अलकतो है, वह कहतो है - " क्या कहा १ मुसलमान है। क्टीं व्य के क्षेत्र में हिन्दू और मुसलमान का भेद नहीं, दोनों एउ ही नाव में बैठे हुए हैं, ड्बेंग, तो दोनों ब्रेंगे, बेंगे, ब

रंगभूमि उपन्यास में सो फिया तथा विनय की शादी होती है। सो पिया ईसाई लड़को है तथा विनय हिन्दू युवक है। इस प्रकार ईसाई तथा हिन्दू धर्म में एक्ता की भावना दशायों गयो है।

कृषक एवं श्रीमक एकता :

कृषक एकता प्रेमचन्द के "गोदान " उपन्यास में पायी जातो है। "भोला " "होरी" से कहता है - " हम लोग " तो बेल है और कितने के लिए पैदा हुए हैं उस पर एक दूसरे को देश नहीं सकता। एका का नाम नहीं, एक किसान दूसरे के थेत पर न बढ़े तो जाफा असे करें, प्रेम को संसार में उठ गया।"

रंगर्भू म , पृ० - 538

^{2. &}quot;गोदान" प्0 - 21

इसो उपन्यास के "राम सेवक "नामक पात्र में कृष्क एकता को भावना विशेष रूप से बलवतो हुई है। "राम सेवक "कहता है - "मैंने गाँव भर में डोड़ी पिटवा दो कि कोई बेसा लगान न दो और न देत छोड़ो, हमको कोई कायल कर दे, तो हम जापन देने को तैयार हैं। लेकिन जो तुम चाहो कि वे किसानों को पीसकर पी जाये तो यह न होगा।"

कृषक एको करण को भावना "रंगभूमि " नामक उप न्यास में भी देखेंने को मिलती है। " दीवान साहब " कहते हैं = " कोई को टें में कृषकों को सभाएं बनाता पिरता है कोई बोका नेर में बेगार को जड़ धोदने पर तत्पर हो रहा है कोई मारवाड़ में रियासत के उन करों का जिस्ती धं कर रहा है जो परम्परा से क्सल होते चले आये हैं।"

शमिक जागरण के परिणामरक्स्प शमिक मजदूरों में अपने अधिकारों के प्रति जागरकता बड़ो । शो बण के खिलाफ आवाज उठाये, फैक्टरियों में, कारखानों में हड़ताले हुई "गोटान "उपन्यास में भो वोनो मिल में हड़ताल एवं आगजनी

गोदान, पृ० - 394

^{2. &}quot;रंगभूमि" प्0 - 213

की घटना वर्णित है। "मजदूरी का संघ हड़ताल करने को बेठा हुआ था इधर मज़री घटों और उधर हड़ताल हुई, उसे मज़ूरी में छेले की कटौती भी स्वीकार न थी।"

देश - प्रेम :-

नवजागरण आन्दोलन का प्रारम्भ हो देश प्रेम की भावना से अभिभूत होने का परिणाम है। इसलिए देश प्रेम की भावना हर सुधारवादी संगठनों में देखने को मिल्ती है।

प्रेमचन्द इस भावना से भरे हुए हैं, उनमें देश प्रेम मर्वोपित है।
" कायाक्त्स " नामक उपन्यास में "चक्रधर " "मनोरमा" में कहता है - "सारा देश गुलामों की बेंडियों में जक्का हुआ है, पिर भी हम अपने भाइयों को गर्दन पर धरों करने से बाज नहीं आते इतनी दुदेश पर भी हमारी आँधे नहीं खुलती.
जिनसे लझ्ना चाहिए उनके तो तल्वे चाटते हैं, और जिनसे गले मिलना चाहिए उनकी गर्दन दबाते हैं।"

[।] गोदान " पृ० - 316

^{2. -}कायाकल " भाग - पृथम, प्० - 315

"गोदान" उपन्यास में "राय सा हव " "ओं जारनाथ "सम्पादक से कहते हैं - " आप बनते तो हैं आदशैं और सिटान्तवादी पर अपने अपने परयदे के लिए देश का धन विदेश भेजते हुए आपको जरा भी खेद नहों होता १"

औं कारनाथ "भी अपने वक्त व्य में देश प्रेम पर प्रकाश डाल्ते हैं वे कहते हैं - "में जन्ता की सेवा करने आया था और यथाशिक्त किये जाता हूँ, राष्ट्र का कत्याण हो, यहां मेरो कामना है।"

" सेवा सदन " उपन्यास में गायनाचार गाता है - " दयामयी भारत को अपनाओं।

सीये आर्य जाति के गौरव जनि

पेर बगाओ

दुलड़ा पराधोनता स्पी बेंडो काट बहाओ ।"

"रंगभूमि " उपन्यास में स्वदेश प्रेम " सो फिया" " प्रभुतेवक", "विनय", "जा हनवी" कुंवर सिंह, के व्यक्तित्व में परिलक्ति होता है। "सो फिया" कहती है - " में

गोदान, प्० - 63

गोदान, पू० - 187

मेवा सदन, प्० - 23।

धड़ी होकर कह दूं, में अपने को भारत सेवा के लिए समर्पित करती हूं। देश प्रेम की भावना " उगबन " उपन्यास में भी पायो जाती है - देवीदीन कहता है - " जिस देश में रहते हैं, जिसका अन्न- जल आते है, इनमें लिये इतना भी न करें तो जीने को धिक्कार है, दो जवान बेटे इसी स्वदेशों को भेट कर चुका हूँ। भैंड्या। " धूद्ध

गाँधी वादी विचारधारा :

गाँधों जो के राजनीति में आ जाने से बुहिजीवी वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ । रचनाकारों ने उनकी रणजनीतिक विचारधारा को अपनी रचनाओं में स्थान दिया । प्रेमचन्द भी इससे विच्ति नहीं रह सके । उनमें जो साम्प्रदायिक एकीकरण तथा छुआ हुत विरोध की भावना पायी जातो है वह गाँधीवादो विचारधारा का हो परिणाम है ।

" रंगभूमि" उपन्यास में सूरतास के माध्यम से ग्रामीण बस्तियों को तहस-नहस करके कल-कारखानों की स्थापना का विरोध किया जाता है। यह निश्चित

 [&]quot;रगभूमि, पृ० - 38

^{2• &}quot;गबन" प्0 - 150

स्प से गाँधीवादी विवारधारा का हो परिणाम है।

कलकारखानों का विरोध करते हुए "जमूनी" कहती है - " मूड़ी काटे कारखाने बनाने चले हैं, दुनियाँ के उजाड़ कर अमना घर भरेगे ।"

गांधों जी के स्वदेशी आन्दोलन का भी प्रभाव प्रेमवन्द के उपन्यासों में परिलिक्त होता है। "गबन" उपन्यास में देवी-दीन स्वदेशी पर बल देता है। वह देश भातों को जलाहना देता हुआ कहता है "गरोबों को लूटकर विलायत का घर भरना तुम्हारा काम है इसोलिए तुम्हारा इस देश में जनम हुआ है। हां रोये जाव, विलायतो सराबे उड़ाओं, विलायती मोटरें दोड़ाओं, विलायतो मुख्बे और अवार चक्जो, विलायती बरतनों में खाओ, बिलायतो दवाइयाँ पियों, पर देश के नाम पर रोये जाव। "

"रंगभूमि" उपन्यास में जान सेवक विदेशी वस्त्रों के उपयोग का विरोध तथा स्वदेशी पर बल देते हैं " में इसी विचार और उद्देश्य से जाउँगा कि रबदेशी व्यापार की रक्षा कर सकूँ। में प्रयत्न करूँगा कि विदेशी वस्तुओं पर बड़ी कठो रता में कर लगाया जाए।"

रगभूमि, प्० - 502

² गबन, पृ0 - 150

उ॰ रंगभूमि , प्० - 386

स्वतन्त्रता पर बल .-

"कायाक ला" उपन्यास में हिरिसेवक सिंह जिशाल सिंह से चकु भर के विचार समभाता हुआ कहता है "ये लोग सबसे कहते पिशते हैं कि ईश्वर ने सभी मनुष्यों को जराबर - बराबर बनाया है, जिसी को तुम्हारे उपर राज्य करने का अधिकार नहीं है, किसो को तुमसे बेगार लेने का अधिकार नहीं।"

"रंगभूमि " उपन्यास का नायक जिनय कहता है " में उचन और कर्म में इतनी स्वतन्त्रता अनिवार्य सम्भता हूं, जो हमारे आत्म सम्मान की रक्षा करें।

बिना स्वतन्त्रता के नवजागरण का सपना अध्ररा था। इसलिए स्वतन्त्रता,समानता, तथा विश्व बन्धुत्व के। विशेष स्प से प्रोत्साहित किया गया। यह प्रशन्स को राज्य क्रान्ति के परिणाम स्वस्प देश में समान स्प से समाकृत हुई।

धार्मिक स्धार के बिन्द

ऐकेशवरवाद को स्थापना:

" नवजागरण" आन्दोलन के परिणामस्वरूप एकेशवरवाद की स्थापना हुई । प्रेमचन्द भी इससे अङ्गत नहीं रहे । " काया कत्य" में चक्रधर कहता

2 रंगभूमि प0 - 522

^{1.} काया जत्म, पृ० - 124

है "में एक खुदा का कायल हूँ। वहीं सारे जहान का खालिक है और मालिक है। फिर और किस पर ईमान लाउँ।"

प्रेमचन्द का यह एकेश्वरवादी विधार ब्राह्म समाज में प्रभावित लगता है मिस्टर सेवक कहते हैं "धर्म हमारी रक्षा और कत्याण के लिए है। उगर वह हमारी आत्मा को शान्ति और देह को सुक नहीं प्रदान कर सकता, तो में उसे प्राने कोर को भाति उतार पेकना पसन्द करंगा जो धर्म हमारी आत्मा का बन्धन हो जाया करता है, उससे जितनी जल्द हम गला छुड़ा ले, उतना ही अच्छा।"

शिक्षा पर बल:

सम्पूर्ण सुधारवादो संगठन बात से आश्वस्त थे कि शिक्षा के प्रवार-प्रसार के बिना नवजागरण सम्पूर्ण देश में नहीं पेलाया जा सकता है। इसलिए शिक्षा प्रसार पर बल दिया गया।

" कर्मभूमि" उपन्यास में डाक्टर कहता है " तालीम में भी खैं ज्यादा करी, ज्यादा उँचा ओहदा पाओंगे। में चाहता हूँ उँची से उँची लियाकत हासिल कर सके और उँचा से उँचा ओहटा पा सके। यूनोवर्सिटी के दरवाजे में सबके लिए

^{2.} रंगभूमि, प्0 - 548

खेले रखना चाहता हूँ।

अशिक्षा हो सभी क्यु या औं को जननी है। "सेवा सदन " में सेठ बलभद्र कहते हैं। " कोई क्यु या उपेक्षा या निर्दयता से नहीं मिस्ती। उसका नाहा शिक्षा, कान और दया से होता है।

इस पुकार शिक्षा के पुचार - पुसार पर भी बल दिया गया है। मानक्तावाद:

मानवता वाद नवजागरण का मुख्य सन्देश था। गरोब उसहायों के प्रति प्रेम, रोगियों को सेवा भावना इसी के परिणाम स्वरूप प्रचलित हुर।

प्रेमवन्द का सम्पूर्ण साहित्य इसी भावना से ओत-प्रोत है। "गबन"
उपन्यास की नायिका जालमा- दिनेश के घर जाकर उसके बाल-बच्चों तथा बूटी
माँ की सेवा करतो है। क्यों कि रमाना व ने उस दिनेश के खिलाफ झूठी गवाही
दी थी।

"प्रेमा" उपन्यास में "अमृत राय " का जीवन मानवतावाद से भरा हुआ है। "कायाक्रत्य" उपन्यास का नायक "वश्र्यर" तो समाज में समानता लाने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है। मामाजिक असमानता पर वह कहता है कि-। क में भूमि, प्0 - 45

सेवासदन , प्० - 127

यह कोन सा इन्साफ है कि कोई तो दुनियाँ के मजे उड़ाये, कोई धके खाये १ एक जाति दूसरी का रक्त चूसे और मछों पर ताव दें। दूसरी कुवली जाये और दाने - दाने को तरसे। यह अन्यायमय संसार ईश्वर की सृष्टि नहीं तो सकता।

"गोदान" उपन्यास में "धिनया, मानकावादी विवार के कारण ही सामा जिक रूप से निक्किट अपनी बहु को अपने घर में रखती है तथा "सिलिया" को भी शरण देती है। इसा उपन्यास के "राम साहब " अपने मानव्तहवादी विधार को, व्यक्त करते हुए कहते हैं - " में इसे स्वीकार करता हूँ कि किसी को दसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नहीं है, उपजोवी होना घोर लजा की बात है। कर्म करना पाणो मात्र का धर्म है। समाज को ऐसी व्यवस्था जिसभें कुछ लोग मोज करे और अधिक लोग फिसे और रोये, कभी सुख्द नहीं हो मक्ती। पूँजी और शिक्षा जिसे में पूँजी का हो एक रूप समझता हूँ, इनका किला जितनी जत्द टूट जाये. उतना हो अच्छा है। जिन्हें पेट की रोटो ऋयस्सर नहीं. उनके अफ्तर और नियोजक दस - वृस. गाँच-गाँच हजार फटकारे यह हास्यास्पद है और (जज्जारपद भी।" " मालती अपने जीवन को समाज सेवा में हो नियोजित करती है।

[।] काषाकत्प , भाग -।, पृ० - 193

o "ਸੀਟਾਜ" ਧਨ - 57

" कर्मभूमि" उपन्यास में " अमरकान्त" तथा मुन्नी" दोनों का व्यक्तित्व मानक्तावाद से भरा हुआ है। इस उपन्यास की मिल्ला पात्र मुन्नी कहती है - " जिसे देखों, गरीबों का हो रक्त चूसने को तैयार है, हम जमा करने को नहीं माँगते, न हमें भोग - विलास की इच्छा है, लेकिन पेट को रोटी और तन टाँक्ने को कपड़ा तो वाहिए।"

"सेवा - सदन " में " पदम सिंह " अपने भाई को समझाते हुए कहते हैं - आप तीन सो को जगह पाँच सो रूपये के केवल लेकर अमोला के दीन -दिख्यों" में बाँट दोजिए तो केसा हो १ कम से कम दो सो मनुष्य आशीर्वाद देंगे और जब तक केवल का एक - एक धागा भी रहेगा आपका यश गाते रहेंगे और यदि यह स्वीकार न हो तो अमोला में दो सो रूपये को लागत से एक कुआँ बनवा दी जिए।

इस प्रकार प्रेमचन्द के सम्पूर्ण उपन्यास मानवतावाद का प्रतिनिधित्व करते

प्रेस के विकास पर बल:

नवजागरण आन्दोलन का प्रचार - प्रसार समाचार पत्र और और पत्रिकाओं के माध्यम से होता था। नवजागरण के सदेश प्रसारण के लिए पत्र-

[।] कर्मभूमि, प्० - 187

थे सेवा सदन, पृ० - 108

पत्रिकाओं को वृद्धि आवश्यक थी म इसलिए प्रेस - विकास पर बल दिया गया ।

"गोदान" उपन्यास में 'प्रमचन्द इसी भावना की पृष्टि करते हैं। इस उपन्यास के ओंकारना व "नामक एक पात्र कहते हैं - खेद यहां है कि पत्रों की ओर से जनता कितनी उदासीन है। स्कूल और कालेजों और मन्दिरों के लिए धन को कमी नहीं है पर आज तक एक भी ऐसा दानी न निकला जो पत्रों के प्रचार के लिए दान देता, हालाँ क जन- शिक्षा का उददेश्य जितने कम खर्च में पत्रों से मूरा हो सकता और किसो तरह नहीं हो सकता जैसे किक्षालयों को संस्थाओं इतरा सहायता मिला करती है ऐसे ही अगर पत्रकारों को मिलने लगे तो इन बेचारों को अपना जितना समय और स्थान कितानों को भेट करना पड़ता है वह क्यों करना पड़े 9

मातृभाषा से प्रेम .

नवजागरण आन्दोलन में मातृभाषा के प्रति लगाव तथा उसके व्यवहार पर बल दिया गया था । " सेवा - सदन" उपन्यास में प्रेमचन्द मातृ- भाषा के पक्ष में अपना विचार प कट करते हैं। इस उपन्यास का पुछ्य पात्र

गोदाम पृ – 187

कुँवर ठाँ० श्यामाचरण से कहते हैं; "इसका प्रायश्चित यही है कि आप मित्रों से अपनी मातृभाषा का व्यवहार किया की जिए। आगे फिर कहता है - "जब तक आप जैसे विद्वान लोग अंग्रेजी के भक्त बने रहेंगे, कभी एक सार्वदिशिक भाषा का जन्म न होगा, मगर यह काम कष्ट साध्य है, इसे कोन करें १ यहाँ तो लोगों को अंग्रेजी जैसे समुन्तत भाषा मिल गयी, सब उसी के हाथों विकाये।"

युक्तिवादी विन्तनधारा :

नक्जागरण आन्दोलन को प्रगतिशील एवं लोकप्रिय बनाने

में यु कितवादो चिंतनधारा ही समाहित है। सम्पूर्ण सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक

चिन्तन धाराओं के पोछे युक्तिवादी चिन्तनधारा का हो प्रमूख योगदान है।

किसी भी परम्परा जो आत्मसात करने तथा उसका त्याग करने का निर्णय लेने

को अमताहो यु कितवादी चिन्तनधारा कहो जा सक्ती है।

प्रेम चन्द्र भो इस तर्कवाद से प्रभावित हुए उन्होंने " सेवा सदन " ना मक उपन्यास में इस विचारधारा का क्रियान्वयन क्रिया है। "पद्म सिंह" कहते हैं -

मेवा सदन, पृ० - 174

^{2.} सेवा सदन, प्० - 174

" यह कितनो निर्देयता है कि जिस समय हमारा आ त्मोय युवक ऐसा किज्न व्रत धारण कर रहा हो, उस समय हम आनंदों त्व मानाने बैठे। वह इस गुरु त्तर भार से दबा जाता हो और हम नाच - रंग में मस्त हों। अगर दुर्भाग्य से आजकल यही उन्ती प्रया चल पड़ो है तो क्या यह आवश्यक है कि हम भी उसो लकीर पर चले १ शिक्षा का कम से कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्जों को प्रसन्ताओं को प्रधान न समकें।"

स्वसंस्कृति परगर्वः

अपर्य समाज ने देदों को ओर चलों " का नारा दिया था।
अपनी प्रानी संस्कृति पर गर्व किया। पाश्चात्य संस्कृति का विराधिकिया।
प्रेमचन्द के उपन्यास क सेवामदन में भी यह भावना परिलक्षित होती है। कुँवर
कहते हें " हम सबैंके राजा हो या रक, गुलाम है, हम अगर अपद, निर्धन, गंवार
है तो थोड़े गुलाम हैं - हम अपने राम का नाम लेते हैं, अपनी गाय पालते हैं,
अपनी गंगा में नहाते हैं और हम यदि विदान, उन्नस, ऐश्वर्यवान हैं तो बहुत
गुलाम हैं, जो विदेशों भाषा बोलते हैं, कुत्ते पालते हैं और अपने देश वामियों को

[।] सेवा सदन, प्० - 109

नीच सम्अते हैं।

इस प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यास में नवजागरण सुधारवादी आन्दोलन के सामाजिक, राजनैतिक, तथा धाः मिंक क्षेत्र के मुख्य जिन्दु पूर्ण रुपेण व्यवहर्यापित हैं।

XXXXXXX

मेवा सदन, प्0 -172

शरतवन्द्र एवं प्रेमचंद के उपन्यामों में साम्य एवं दृष्टि भेद

शास्तचन्द्र बंग नवजागरण के प्रमुख संवाहक हैं। सामाजिक रीति-नीतियों का पूर्ण से निर्वाह उन्होंने अपने उपन्यासों में नहीं किया है। वे सामाजिक मान्यतायें, विचार धाराएं उनके उपन्यासों में समाद्त नहीं हो सकी हैं, जो उनके अनुसार अतार्किक एवं अव्यावहारिक है। मानवतावाद का यदि कहीं कोई भो बिन्द् दिखाई पड़ता है तो शस्त चन्द्र इसे आत्मसात कर लेते हैं। चाहे वह समाज के किसो भी अर्ग में विद्यमान हो। इसोलिए उनके उपन्यासों में वेश्यायें तथा कई अन्यान्य बद्धा जातियां भी सम्मानजनक स्थान पाती हैं।

प्रेमचन्द हिन्दो नवजागरण के मूच्य उन्तायक हैं। प्रेमचन्द मानवता की सृद्ध भाव भूमि पर स्थिर हैं। हिन्दी नवजागरण, जंग नवजागरण को अपेक्षा राजनेतिक कुछ ज्यादा हो रहा, इसलिए प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी अपेक्षाकृत राजनीतिक पृद्ध कुछ ज्यादा हो देराने को मिलते हैं। सामाजिक उपन्यासों में भारत की दीन दुखो जनता, गाँव के अपद और भोले किसान, शहर के शोषित मजदूर, निम्न वर्ग के अस्थ्य भीमक वर्ग हो उनके अध्काश उपन्यासों के नायक हैं। इसके अतिरिक्त उच्च वर्ग के राजा, उद्योग पित, जमीदार और हुक्गम के साथ हो व्यवसायिक, प्राणपंथी पिंडत के भी चित्रण होते हैं। किन्तु इन सबमें प्रेमचन्द को सहान्भूति समाज के निम्न वर्ग एवं शोषितों के प्रति ही रही। शरतचन्द्र और प्रेमचन्द में नक्जागरण का लीन दृष्टि बहुत कुछ समान रूप से पायी जातो है।

।. सामाजिक दृष्टि.

विधवा विवाह समर्थंक - नवजागरण सुधारवादी आन्दोल समाज में परिष्कार करना चाहता था। एक ऐसे समाज के निर्माण की कलाना की गयी जो मानवता - वादी हो, तार्किक हो, शोषणम् इत हो, भाई - चारे की भावना से ओत- प्रोत हो।

इस प्रकार शोषण मुक्त तमा अ के दर्शन दो साहित्यकारों के उपन्यासों में परिलक्षित होते हैं। समाज का सबसे शोषित तबका नारी है। उसमें भी कियाएं और विध्वायें पुरुष के शोषण के अस्वाचारों की सबसे अध्विक शिकार हुई। हैं। शरतवन्द्र ने इस वर्ग के उत्थान के लिए अपने उपन्यासों के माध्यम से बहुत प्रयास किया है। माध्वी सुरेन्द्र नाथ नामक युक्क से अपना प्रणय सम्बन्ध स्थापित करती है। तथा अपने पित योगेन्द्र नाथ को जमीन में हिस्सा लेने के लिए न्यायालय और क्वहरी का चक्कर लगाती है। "शुभदा " नामक उपन्यास में ललना जो कि बाल विध्वा है, उसकी शादो सुरेन्द्रनाथ से हो जाती है।

इस प्रकार शास्त चन्द्र के उपन्यास में वातावरण विध्वाओं के लिए युक्त है। वह पर पुरुष से प्रेम भी कर सकती है तथा विवाह भी, एवं सम्मानजनक जिन्दगी भी जी सकती है।

पेमचन्द भी नारी जीवन को इस त्रासदी से परि चित थे। उन्होंने विध्वा औं को मुक्त आकाश प्रदान करने का प्रयास किया । प्रेमचन्द्र को नारियाँ प्रधो को तुलना में कहीं अधिक तार्किक लगती हैं। विधवा के प्रति प्रेमवन्द की व्यापक सहानुभूति है। विध्वाएं भी समाज के सम्मानजनक और बेहतर दंग से जीवन जी सक्ती है। ऐसा विचार प्रेमवन्द का था। वे न केवल सिनान्त रूप में इसे स्वीकार करते हैं बल्कि उसे व्यवहार रूप में भी उतारते हैं। उन्होंने स्वयं एक जिथ्वा से विवाह किया था। "गोदान "उपन्यास को जिथ्वा "भूनिया" को शहदी "गोबर" नामक युवक से जोती है। " गोबर" समाज भय से लक्ष्मक भाग जाता है। किन्तु भूनिया अपने सस्र "होरो" सास "धनिया" के साथ जोवन बिताने लगती है। इस प्रकार प्रेमवन्द विध्वा जीवन को सम्मानक स्थिति प्रदान करने में सफ्ल होते हैं।

" प्रेमा" उपन्यास में विधवा जीवन के अभिशाप्त एवं तिरस्कृत जीवन को चित्रित किया गया है तथा विकास विवाह का भी समर्थन किया गया है। लक्षी, रामकलो तथा पूर्णा एवं प्रेमा को शादो विध्वा विवाह का ही समर्थन है। शरतवन्द्र ने समाज को उपेकि विध्वा औं को समान जनक स्थान दिया है। तकालीन समाज में विध्वा के लिः सम्मानजनका जन्दगी जोना असम्भव था। उसे या तो पति के साथ विद्या में जलका पड़ता था या फिर पिता के घर में एक त्रासपूर्णजीवन जोने को मजबूर जिया जाता था। पर पृष्ट्य से प्रेम तो क्या दश्ति भी करना पाप समन्त्रा जाता था। किसी भी माँगलिक अवसर पर उनकी उपस्थिति असुभ सूचक मानी जातो थी। अधिकाश विध्वायें काशी जाकर अपना जीवन एक सन्याहिनी के रूप में विताया करती थीं।

शरतचन्द्र ने इस अमानवीर ऋषथा के विरोध में अपनी लेरिक्ती उठायी।
उनके उपन्यासों को विध्वायें मुक्त रूप से प्रेम भी करती हैं तथा शाटी भी करती
हैं। पित की जायदाद में हिस्सा लेने के लिए न्याज लगों और क्वहरियों का ६ कर
भी लगाती हैं। " बड़ दोदी " उपन्यास की नामिका " माध्वी " का जीवन
इसी प्रकार का है।

"गोदान" उपन्यास में "नोंहरा" नामक जिध्वा की शादी "शोना " नामक व्यक्ति से होती है। इस प्रकार उपन्यास साहित्य के सशक्त हस्ता वर प्रेमचन्द तथा शरतवन्द्र दोनों में विध्वा विवाह का समर्थन पाया जाता है। किन्तु शरतचन्द्र को कुट विध्वायें पर म्परावादी प्रवृत्ति को नहों छोड़ सकी है, वे या लो पति के धर में ही रहने को जिवश है अथवा समाज से पलायन कर देती हैं।

"ब्राह्मण को बैटी " उपन्यास की विध्वा " ज्ञानदा " पित के घर में हो अपना जीवन बिला देती है। " चरित्र होन " उपन्यास की विध्वा किरणम्यी " दिवान्र " को लेकर समाज से बाहर चलो जाती है।

इस प्रकार शरतचन्द्र की विध्वाओं के कई रूप हैं। कुछ तो सध्वा के रूप में जीवन व्यतोत करती हैं, कुछ ससूर के घर जोवन व्यतोत करती हैं, कुछ समाज के बाहर चली जाती हैं। लेकिन ज्यादातर विध्वायें सध्वा के रूप में अपना जीवन व्यतीत करता चाहती हैं।

इस प्रकार शरतचन्द्र और प्रेमचन्द दोनों साहित्यकारों की दृष्टि में किवा विवाह तर्क संगत एवं मानवीय है। इसी कारण विधवा विवाह का समर्थन : दोनों रचनाकारों की रचनाओं में मिलता है।

वेशयावृत्ति उन्मूलन परक दृष्टि:

समाज में सबसे तिरस्कृत जीवन व्यतीस्त करने वाली वेशयायें

उन्हें अपना कहने वाला कोई नहीं होता । शोधण तथा अपमान इनकी नियति बन गयी होती है । समाज का पुरुष वर्ष इन्हें अपने आमोद- प्रमोद तथा वासना वृष्ति का साधन मात्र सम्भता है । जीवन में सम्मान उनको कभी मिलता ही नहीं।

शास्तवन्द्र केया जीवन को विकासता से पूर्ण परिक्ति थे। उन्होंने महसूस
किया कि केया थे अपना पेशा छोड़कर सामान्य नारी का जीवन व्यतीत करना
वाहती है किन्तु समाज उन्हें स्वीकृति नहीं देता। इस अमानवीय कुप्रथा का
अंत करने के लिए शास्तवन्द्र ने अपना सशक्त उपन्यास " श्रीकान्त " लिखा।
"श्रीकान्त " में " राजलदमी " जो कि प्यारी बाईनाम से गाने बजाने का कार्य
करती है। उसकी शादी " श्रीकान्त " से सम्पन्न होती है। प्यारी बाई अनेक
शैक्षणिक संस्था थें खुनवाती हैं। चिकित्सालयों की स्थापना करवाती है। इस प्रकार
उसे सामाजिक मर्यांदा प्राप्त होती है।

"गबन" उपन्यास में जो त्रा रमानाथ के साथ कलक त्ता से प्रयाग आ जाती है तथा अपना पेशा धनाचने-गाने का द्र समा त कर देती है। जिसकी प्रशास रमानाथ मुत्त कंठ से करता है -

" जालपा के त्याग, निष्ठा और सत्यप्रेम ने मेरी आँखे खोली और उम्मे भी ज्यादा जोहरा के सोजन्य और निष्कमट व्यवहार ने, में इसे अपना सोभास्य सम्भता है कि मुले उस तरप से प्रकाश मिला जिल्हा औरों को अंश्रेकार मिलता है।

विव में मुले सुधा प्राप्त हो गयी।"

इसी प्रकार "गोदान " उपन्यास में " दिग्दिक्य सिंह " की पत्नी
"मीनाधी " के डारा प्रताड़ित किये जाने पर देश्या अपना पेशा छोड़ने का वचन
लेती है। देश्याओं के नाचने - गाने की रस्म को मिटाने तथा सार्वजनिक स्थान
से हटाने का उपक्रम " सेवा- सदन " नामक उपन्यास में किया गया है। एक
साधारण नारी के देश्या बनने एवं देश्याओं के हदय - परिदर्शन का सुन्दर चित्रण
इस उपन्यास में किया गया है। विद्ठलदास " कहते हैं - मेरा पहला उद्देश्य
है कि देश्याओं को सार्वजनिक स्थान से हटाना और दूसरा देश्याओं के नाचने
गाने की रस्म को मिटाना।" "सुमन" का पित "गजाधर" भी सुमन को
देश्यावृत्ति त्यागने पर बल देता है।

इस प्रकार प्रेमचन्द देश्या वृत्ति का अन्त करके उसे एक सामान्य जीवन में नियोजित करने का प्रयास करते हैं। उसे सम्मानजनक जिन्दगी प्रदान करते हैं। यही कार्य शरतचन्द्र भी अपने उपन्यासों के माध्यम से सम्मन्न करते हैं।

गबन, प्0-279

भेवीसदन, पृ० - 89

इस आधार पर शास्तचन्द्र एवं प्रेमचन्य दोनों साहित्यकारों में वेशया वृत्ति उन्मूलन की बलवती भावना पायी जाती है।

अनमेल विवाह का विरोध सम्बन्धी दृष्टि:

अनमेल विवाह नारो जोवन में दुख का बोज बोता है। स्वाभाविक वैवाहिक आनन्द का लोप हो जाना है। नारी न तो आनन्दपूर्वक जीवन जी पाती है और न ही जीवन का परित्याग हो कर पातो है। असमय में ही वृह हो जाती है।

शरतवन्द्र के उपन्यासों में इस कुष्ट का विरोध किया गया है। "विधवा की बेटी " नामक उपन्यास में "संध्या " गोलो क वट जों जो उसके नाना की उझ्न के हैं, से इस अनमेल जिवाह का कठोरता पूर्वक विरोध करती है। प्रेमवन्द भी इस कुष्ट को समा प्त अरने के लिए प्रयत्नशील रहे। उन्होंने " निर्मला " नामक उपन्यास में इसका विरोध किया है। " निर्मला" तथा " तोताराम" का जोवन कंटक पूर्ण हो जाता है। " निर्मला" अपने पांत " तोताराम " के । जो उसके पिता की उम्र के हैं, के पित का सा खार देने में संकोच करती है।

"गोदान "उपन्यास में " रतन" तथा वकोल साहब को शादी भी अनमेल विवाह का उदाहरण हो सब्दा है। रतन का पति वकील रतन का प्यार नहीं दया पाता है। अन्त में असमय में ही "रतन" को छोड़कर स्वर्ग वासी हो जाती है। इस प्रकार शरतचन्द्र और प्रेमचन्द दोनों में अनमेल विवाह के निष्धे की भावना देखी जा सकती है।

दहेज प्रया सम्बन्धी दृष्टिकोण :

नारी जीवन को उपयुद्ध स्थान पर न पहुँचाने का श्रेय दहेज प्रथा को हो है। इस प्रथा के कारण नारियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार भी प्रारम्भ होते हैं। शादी ऐसे लोगों के साथ हो जानी है जिनमें मानवीय सवैदनाओं का अभाव होता है।

शरतवन्द्र का ध्यान इस क्षुया की और भी गया । उनमें उपन्यास परिणिक्ता में इस क्षुया का विरोध परि-लिखा होता है, जिसमें उन्होंने विवाह के लिए मकान गिरवी रखने के लिए तथा अन्तत: भिखारी बनने को बात भी कहनवायी है और इस दहेज प्रथा के लिए उत्तरदायी यह हमारे ममाज को ही माना है। "समाज कहता है कि लक्की की उम्म हो चुकी है, ब्याह कर दो, लेकिन ब्याहने का इंतजाम नहीं कर सकता, ठोक कहते हो गिरोन । मूलको हो देखों न, मकान तक गिरवी रख देना पजा, जो दिन बाद बाल बच्चों का लेकर राह का भिखारी बनना पड़ेगा । समाज तब यह थोड़े ही कहेगा कि आओ हमारे धर आश्रम ले लो।

शस्त बमग्र, भाग - 2, पृ० - 330

इस प्रकार शरत चन्द्र ने दहेज प्रथा ने दुष्पिरिणामों को चित्रित किया

है। प्रेमवन्द्र ने भो "निर्मला" उपन्यास में दहेज प्रथा का विरोध किया है।

इस उपन्याम का एक पात्र "मालवन्द" कब्ता है - " बस चले तो दहेज लेने वालों और दहेज देने वाले, दोनों को ही गोली मार दूँ, चाहे फाँसी क्यों न हो जाये।

पूछो, आप लड़के का विवाह करते हैं या उसे बेचतें हैं 9"

"गोदान "उपन्यास में भी प्रेमचन्द ने इस अप्तया का विरोध किया है।
"होरी "की बेटो "सोना "कहतो है - "में तो सोनारो वालों से कह दूँगी,
अगर तुमने एक पैसा भी दहेज लिया तो तुमसे व्याह न कहँगो।"

इस प्रकार शरतचन्द्र और प्रेमचन्द दोनों रचना कारों में इस ऋष्या के प्रति विरोध प्रकट किया है।

छुआद्भा समस्या पर दृ हिटकोण .

यह एक ऐसी सामाजिक ऋथा है जिसने मानव न मानव जो बाँट दिया है।
एक वर्ग दूसरे वर्ग पर इसका संबल लेकर शो काका शिक्ता रचता है। एक वर्ग को
शिका, सम्मान, आंधिक उन्नति धार्मिक उन्नति इत्यादि मानवीय अधिकारों से

^{। &}quot; निर्मला" पृ० - 20

^{2. &}quot;गोदान " पृ० - 202

वींचत कर देता है।

नव्यागरण आन्दोलन में इस समस्या पर विशेष रूप से चिन्ता पुन्ट को गयी । वेदों और उपनिषदों का सहारा लेकर इसे अतार्किक, अबोहिक तथा अधार्मिक धों बत क्रिया गया । शरतवन्द्र एवं प्रेमवन्द दोनों ने ही इसका जोरदार उम से विरोध किया तथा इस क्ष्र्या को मानने वालों के प्रति धूमा पैदा को गयो, इसका तर्कपूर्ण धम्छन किया गया ।

बंग समाज में छुआ छूत अन्य प्रदेशों की अपेका कुछ च्यादा ही पायी जात है। इसलिए इस क्षुथा से बुब्ध हो जाना शरतचन्द्र के लिए स्वाभाविक ही था। उनके उपन्यास "पथ के दावेदार "में "अपूर्व" को मां उसे बर्मा जानेन से उआ छूत के कारण ही रोक्ती है तथा ईसाई लड़को "भारती" वारा "तिवारी" को छू-हेने पर काशी जाकर प्राथ्मश्चित करने का विचार इस क्षुथा के प्रति स्वाभाविक आक्रोश पेदा करता है।

"शेष प्रन " उपन्यास में भी इस कुषा का विरोध किया गया है।
"विरत्न हीन " उपन्यास को महिला पात्र किरणमयो" तर्कपूर्ण दंग से इस कुषा का
बिरोध करती है। "श्रोकान्त" उपन्यास को "राजलक्ष्मी" जो प्यारो बाई के नाम
से गाने - बजाने का कार्य प्रारम्भ करती है, कमल लहा के साथ एक हो जिस्तर

जो कि एक युवा है एक शव के जोगों हारा अध्य वहने पर उपना मत इस प्रकार प्रकट करता है। " मरे हुये को जाति का १ यह तो वैसे हो है, जैसे हमारी यह डोंगी, आम या जामून जिस किसी को उनी हो, अब तो डोंगी डेंगडकर को ई भी नहीं कहेगा कि यह आम है या जामून, उसी तरह है यह भी।"

प्रेमचन्द के उपन्यास इस क्ष्युथा के प्रबल विरोधी हैं। "गोदान "
"कायाकल्प", "कर्मभूमि", तथा " निर्मेला" में इस अप्या का प्रबल विरोध किया
गया है। "गोदान "उपन्यास में पण्डित दातादोन के लड़के "मातादीन" ने
"सिलिया" नामक अद्भत युक्ती को पत्नी के स्प में स्वीकार किया। इस प्रकार
दुक्ता इस की भावना को इस उपन्यास में समा पा करने का प्रयास किया गया है।
"सिलिया" का पिता "मातादीन" से कहता है - " तुम हमें ब्राइमण नहीं बना
सक्ते, मृदा हमें तुम्हें चमार बना सक्ते हैं, हमें ब्राइमण बना दो, सारी बिरादरो
बनने को तैयार है, जब यह समर यनहों है तो तुम भी चमार बनों, हमारे साथ
थाओ- पियों, उठों- बैठों, हमारो इज्जत लेते हो तो अपना करम हमें दो ।"

[।] शरत समग्र, पंचम अण्ड, पृ० - 126

^{2· &}quot;गोदान " पृ० - 392

"काया कर्य " में अआ इत का विरोध किया गया है। "मनोरमा " कहती है - " दिल से यह भाव जिलकुल व निकाल डालिये - कि वह नो चो है और आप उँचे हैं, इस भाव का लेश भी दिल में न हरने दी जिए।"

"कर्मभूमि " उपन्यास में इस भावना के विरोध का सबसे प्रबल रूप "अमर-कान्त" और "शान्तिकुमार " मैं पाया जाता है।

"अमर कान्त " कहता है -

"क्यों खान-पान मं, रस्म-रिवाज में, धर्म अपनी टाँग अझाता है। में चारी अरू, धुन करें, धोखा दूं, धर्म मुजे अलग नहीं में कर सकता , अरूत के हाथ से पानी पी लूं, धर्म धूं मन्तर हो गया।"

इसो उपन्याम के एक पात्र "स्मान्ति कुमार " कहते हैं " तुम्हारे ही उपर समाज रुझा है, पर तुम अर्क्त हो, तुम मन्दिर में नहीं जा सकते,
ऐसी अनोति इस अभागे देश के सिवा और उहाँ हो सकती है १ क्या तुम मदैव
इसो भाति पतित और दिरद्र बने रहना चा हो हो । " नयना " कहती है भगवान ने तो किसो को उँचा या नीचा नहीं बनाया।

कायाकल्प, भाग -2, पृ० = 37

^{2.} कर्मभूमि, प्० - 55

वहों, प्0 - 116

इसी 9कार को भावना " निर्मला" उपन्यास के "भालवन्द्र " नामक युक्क में पायी जाती है। इस प्रकार दुआ द्वा के सम्बन्ध में भी शास्तवन्द्र सौर प्रेमवन्द्र के दृष्टिकोण में समानता प्राप्त होतो है।

राजनैतिक दृष्टिकोण.।

नवजागरण का "शुभारंभ समाज सुधार से प्रारम्भ हुआ । सामाजिक क्रीतियों तथा धार्मिक आडम्बरों का तर्कपूर्ण एम्डन करके लगमाजिक गतिशास्ता प्रान करना ही मृत्य उद्देश्य था । ऐसा महसूस किया गया कि बिना आतमा को उन्नित के नवजागरण का सपना पूरा नहीं हो सकता, इसलिए पहले सामाजिक भाववादी मुधार ही प्रारम्भ हुए ।

किन्तु राजनें तक सुधारवादो आन्दोलन भी वलाये गये। देश को भीजों के बंगूल से मुक्त कराने के लिए राष्ट्रीय भावना को महती आक्रयक्ता महसून हुई। भीजों को भगाने के लिए देश प्रेम, राष्ट्रभाषा ने प्रेम, स्वदेशी अस्तुओं से प्रेम तथा हिन्दू मुस्लिम एक्ता को अत्यध्धिक आव्ययक्ता थो, इसलिए नवजागरण के पुरोधाओं ने इन तत्वों के विकास पर बल दिया,। महात्मा गाँधों के राजनेतिक मंद पर आ जाने में सत्य - अहिंसा, असहयोग आन्दोलन, स्वदेशों आन्दोलन तथा माम्प्रदायिक एकता कथा स्वर मुख्य रूप से मुखरित हुआ। प्रबुह वर्ग ने महात्मा गाँधी को

एक स्वर से अपना नेता माना तथा इन सिद्यान्तों को स्थापना अपनी रचना जो में करने लो । राजनेतिक आन्दोलन का क्रान्तिकारो पक्ष भी कम सिक्र्य नहीं रहा । भारतीय युवा वर्ग इस भावना से ट्रेरित इर और उन्होंने क्रान्ति का आह्वान किया । स्थान - स्थान पर अमिक, मजदूर मंगठन बनने लो । किसान मंगठन बनने को प्रेरणा दो जाने लगो । मिलों में आगजनी प्रारम्भ हुई ।

इस प्रकार पूँजोपितयों हे प्रति, शो को के प्रति, अंग्रेजी हुकूमत के प्रति, मशक्त ज्ञान्ति का आह्यान हुआ।

शस्तवन्द्र और प्रेमचन्द दोनों रचनानार एक जागश्व सां हत्यकार के तप में समाज के सामने पृक्ट हुए और इन मुद्दों पर अपनी - अपनी हैिस्नी चलायां। तत्कालीन राजनानक मुध्य रजादो आन्दोलन के मुख्य रजन्द्र दोनों रचना कारों के उपन्यासों में पाये जाते है।

साम्पदायिक एकता सम्बन्धी द्रिध्ट .

अंग्रेजों ने भारत में बांटो और राज्य करों "को नोति का बीज डाला या जिसके पोरणाम स्वरूप लम्बे अरसे से साथ साथ रहने जाले देश के दो प्रमुख साम्प्रदायों शहन्द्र - मुस्लिम शुजापस में ईच्या त्वेश से भर गये, एक दूसरे के प्राण के भूखे हो गये। इस दिन्तिनीय स्थिति है निपटने का प्रयास शरत वन्द्र ने स्पने उपन्यास में किया है। " ग्रामीण समाज " नामक उपन्यास में "रमेश " हिन्दू मृश्तिम रक्ता की भावना है औत-प्रोत है, उसी के परिणाम रक्त्प " वहाँ हिन्दू -मुसलमानों ने अपास में भाई - वारा स्थापित कर लिया है, दोनों एक मन और एक प्राण हैं।"

साम्प्रदायिक एउटा की भाउना "गृहजाह "उपन्यान के " केतार बाढ़ " के इम वक्तव्य में भी दृष्टव्य है - " किसो धर्म ने उन्हें बेर नहों, श्यों कि संसार के सभी धर्म मूलतः एक हैं, िहन्दू वे राम और मुमलमानों के अल्लाह एक हो हैं। " " भीकान्त "उपन्यास में "भोजान्त " और गोहर से दोस्तो भी इसो साम्प्रदायिक एउता का प्रयास है। तत्कालीन बंग समाज में यह भेदभाव न केवल मूमलमानों ने ही था। वित्क बृह्म समाजियों ने भी इसी प्रकार का व्यवहार था।

शास्त चन्द्र के उपन्यास "गृह दाह " की नायिका "अवला" की शादी "महिम" नामक हिन्दू से सम्मन्न होती है।

^{। •} शरत समग्र , भाग -। , प्० - 394

^{2.} वहां. भाग -2, 90 - 220

इस प्रकार साम्प्रदायिक एकता के जिन्द शस्त वन्द्र के उपन्यास में बहुतायत से पाये जाते हैं।

प्रेमवन्द साम्प्रदायिकता और उसके दृष्परिणाम से भली पृकार अवगत

थ। यदि व्यक्ति सम्पूर्ण देश का नागरिक न हो कर केवल हिन्दू या मुसलमान

हो जाता है तो देश निरन्तर निर्बल होता ह जाता है। देश हो सही दिशा
देने के लिए इस साम्प्रदायिकता का अन्त आवश्यक है।

"कायाकल्प "उपन्यास में "चक्रधर ", "आगोशवरी", तथा "श्वाजा" में साम्प्रदायिक एकता के जिन्दू पाये जाते हैं। मृस्लिम मोहल्ले में कुर्जानी के लिए तत्पर भोड़ के बक्कि में हिन्दू और मुसलमान दोनों को समान रूप से चक्रधर समजाता है - "में तो यही इहूँगा कि मुसलमानों को लोग नाहक बदनाम करते हैं, फँसाद से वे भी इतना हो उरते हैं जितना हिन्दू, शान्ति को हच्छा भी उनमें हिन्दुओं से कम नहीं है। लोगों का श्याल है कि मुसलमान लोग हिन्दुओं पर राज्य करने का स्वप्न देख रहे हैं, जिलकुल गल्त है। मुसलमानों को केवल यह शंका हो गयी है कि हिन्दू उनसे प्राना बैर चुकाना चाहते हैं और उनकी हस्ती को मिटा देने को फिड़ कर रहे हैं।"

 [&]quot;कायाकल्प "भाग -।, पृ० - 49

हिन्दू मुस्लिम, सिख और ईमाई धर्मों में समान्ता को बात
चक्रधर के इस वक्तव्य में दृष्टव्य है - "हिन्दू- मूमलमान, ईमाई , बोन् सभी
मत्कर्म और सदिविचार को शिक्षा देते हैं। हमें कृष्ण ,राम, ईसा, मोहम्मद,
कुर मभी महात्माओं का समान आदर करना चाहिए । ये मानव जाति के
निर्माता हैं। जो इनमें से किसा का अनादर करता है या उनकी तुलना करने
बैठता है वह अपनी मूर्धता का परिचय देता है। बुरे हिन्दू से अच्छा मुसलमान
उतना ही अच्छा है, जितना बुरे मुमलमान से अच्छा हिन्दू । देखना यह चाहिए
कि यह आदमो है, यह कि किस धर्म का आदमी है। संसार का भावी धर्म
सत्य, न्याय और प्रेम के आधार पर बनेगा । हमें अगर संमार में जीवित रहना
है तो अपने ह्दय में हमें इन्हीं भावों का संचार करना पटेगा।"

साम्प्रदायिक एक्ता की भावना न केवल पुरुष पात्रों में पग्नयी जाती है बिल्क नारी मात्रों में भी इस प्रकार की भावना भरी हुई है "यशोदा-नन्दन, की पत्नी " वागीशवरी" कहतो है - " नित्य समजाती रहो, इन जाड़ों में न पड़ो, न मुसलमानों के लिए दिनया में कोई दूसरा छोर ठिकाना है न हिन्दुओं के लिए। दोनों इसी देश में रहेंगे और इसी देश में मरेंगे, फिर

^{·।} का**का** कत्य, भाग -2, पृ0 - 199

आपस में क्यों लंड - मरते हो ७, क्यों एक दूसरे को निगल जाने पर तुले हुए हो, ९ न तुम्हारे निगले पे निगले जायेंगे, न उनके निगले तुम निगले जाओंगे।

मिल जुलकर रहो, उन्हें बड़े हो कर रहने दो, तुम छोटे हो कर हो रहो, मगर

मेरी कौन सुनता है।

" ख्वाजा" जिसका लड़का एक हिन्दू लड़को का अपहरण करके अपने धर में रख्ता है, वह अपने लड़के को गोली मार देता है। इस प्रकार हिन्दू मुस्लिम एकोकरण की भावना इस उपन्यास में अत्यध्कि पायी जाती है।

यह सा म्प्रदायिक एकता " कर्मेनूमि " उपन्यास में भी दृष्ट य है।
" सलीम" का पिता " हा फिज हलोम " कहता है - " आ इये, हम और आप
गले। मलकर उस देवी को रूह को दुश करें, जो हमारी सच्ची, रहनुमा, बारोको
में सुबह का पैगाम लाने वालो सुपैदी थी, दुदा हमे तोफीक दें ि इस सच्चे
शहीद से हम हक परस्ती और खिदमत का एडक हा सिल करें।"

"रंगभूमि " उपन्यास में ईसाई तथा हिन्दू धर्म में सामाजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

[।] काया कल्प. भाग-2. प्० - 12

^{2 • &}quot;कर्मभूमि " ,प्० – 219

सोपिया " जो कि ईसाई लड़को है, उसको शादी " विनय" नामक हिन्दू युक्क से हो जातो है। तथा " सोपिया" हिन्दू और ईसाई धर्मों में समानता ब ताते हुए कहतो है कि - " ईसा और कृष्ण में कितनो समानता है पर उनके अनुवरों में कितनो विभिन्तता। कोन कह सकता है कि साम्प्रदायिक मेदों ने हमारो आ त्माओं पर कितना अत्याचार किया है।"

इस उपन्याम में न केवल ईमाई और हिन्दू धर्मों में एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया है। बल्कि हिन्दू और मुसलमान धर्मों में भो ए को करण स्थापना पर बलादया गया है। "जा धनवो " कहतो है - " क्या कहा १ मुसलमान है,। कर्तव्य के क्षेत्र में हिन्दू और मुसलमान का भेद नहीं, दोनों एक ही नाव में बैठे हुए हैं, इबेंगे तो दोनों इबेंगे, बचेंगे तो दोनों बचेंगे।"

इस प्रकार शरत वन्द्र और प्रेमवन्द दोनों रचनाकारों में मा मुदाियक एक्ता के चिन्दु ममान रूप से पाये जाते है।

स्वदेश - प्रेम :-

देश में खुशहाली लाने का एक ही उपाय था - देश प्रेम । देश प्रेम की भावना जागृह हो जाने पर जाति धर्म तथा देशवाद को संकृष्टित भावनाएं स्वतः

^{। • &}quot;रंगभूमि" , पृ० - 109

^{2.} वहो , प्० - 539

हो समाप्त हो जाती है। प्रत्येक नागरिक का न कोई अपना धर्महोता है। और न कोई अपनो जाति। एक ही धर्म होता है - देश धर्म तथा एक ही जाति होती है - मानव जाति।

नवजागरण आन्दोलन में देश - 9म की भावना जगा कर के देश का उद्दार करने का प्रयास किया गया । देश को मुक्त कराने के लिए नव्यवकों ने क्रान्ति का रास्ता अपनाया । शस्तवन्द्र भी इस भावना से प्रभावित दूर । " पथ के दावेदार " नामक उपन्यास में " अपूर्व" के प्रवासी जीवन के समय के विन्तन में इस प्रकार की भावना पायो जातो है - " है अभागे देश के शिक्त होन लोग । जिस पेशवर्य शालिनो भूमि का नारत्म लोग संभाल नहीं सक्ते, उम पर व्यर्थ का लोभ किसालर १ स्वभन्त्रता का जन्मजात अधिकार केवल मनुष्यत्व को नहीं, तुम अपनी धुद्ध इन्द्रियों को हो मनुष्य समल बैठो हो, इसमे भिष्टक आ त्मधातो प्रवृत्ति और क्या हो सक्ती है १ "

मातृभूमि के प्रति प्रेम न केवल पुरुष आं में पाया जाता है बल्कि नारी पात्रों में भी पाया जाता है। - "नयनतारा ", सृमित्रा", "भारती", मिहलायें, "पथ के दावेदार" नामक उपन्यास में क्रान्तिकारी संगठन में शामिल होती है तथा देश को मुक्त कराने का प्रयास करती है।

शस्त समग्र, प्० - 182

ग्रामोण समाज को माँहला पात्र "जिस्टेस वरो" भो देश - प्रेम को भावना से ओत- प्रोत है। "श्रीकान्त" उपन्यास में भो देश - प्रेम को भावना मुखरित हुई है -

"यह सोने को भूमि किस तरह ऐसी शुष्क, ऐसी रिश्त हो गयो, कैसे देश को समस्त सम्पदा जिदेश में के हाथ में पड़कर धीरे - धीरे जिदेश में चली गयो, किस तरह मानृभूमि के समस्त भेद - मज्जा, और रक्त के जिदेशियों ने शोधम कर लिया ••• मगर हाँ। देश की नेवा करना भी हम लोगों का एक इत है।"

इस प्रकार शास्तवन्द्र देश प्रेम को भावना पर बल देते है।

प्रेमवन्द्र में भी यह भावना व्यापक पेमाने पर पायी जाती है।

"गवन" उपन्यात का "देवी-दीन' जिसके दो बेटे स्वदेशी को बेदो पर चंद्र गये,

कहता है - " जिस देश में रहते है, जिसका अन्न- जल जाते हैं, इसके निए इतना
भी न करें तो जीने के धिकार है। दो जवान बेटे इस स्वेदशी को भेंट कर

 [&]quot;शस्त समग्र, व भाग-3, प्० - 425

वुका हूँ , भझ्या ।"

"कायाकत्य" का नायाः "क्ष्रधर " स्वदेश प्रेम को भावना से भरा हुआ है। वह "मनोरमा " से कहता है - " सारा देश गुलामी की बेड़ियों में अकड़ा हुआ है, फिर भी हम अपने भाईयों को गर्दन पर उसी करने से बाज नहीं आते। इतनो दुर्दशा पर भा हमारो अधि नहीं खुलाो। जिनसे लड़ना जाहिए उने तलुपे वाटते हैं और जिनसे गले निलना चाहिए उनने गर्दन दखाते हैं।"

"गोदान "उपन्याह के "राय साइब " के इस वक्स व्य में भी देश-प्रेम को भावना चलकतो है, ये " अंकारनाथ " संवादक से कहते हैं - " साप बनसे तो हैं - आदर्शवादी और ।सन न्तवादी, पर अपने पगयदे के लिए, देश का धम विदेश भेजते हुये आपको जरा भं देद नहीं जेता 9

" सेवा-मदन " उपन्याम में देश को स्वतन्त्र कराने की विनती गायना चार अपने इस पद में गाला है - " दयामयी भारत को अपनाओं

^{। &}quot;गबन" पृ० - 150

^{2.} कायाकत्य, भाग-1, पूज 115

^{3.} गोदान, पृ० - 63

नीये आर्य जाति के गौरव जननि फेर जगाओं दुलहा पराधीनता रूपी बड़ी काट बहाओं "

"रंगभूमि" उपन्यास में ता स्वदेश प्रेम बड़े पैमाने पर पाया जाता है।
सो फिया ", " प्रभु सेवळ", "विनय", "जा हनवी" इत्यादि पात्र देश प्रेम की भावना से खोत- प्रोत है। विनय की मां "जा हनवी" अपनी देशभिक्त
परक भावना व्यक्त करती हुई कहती है - " एक नई अभिनाषा उत्पन्न हुई मेरो कोख से भी कोई ऐसा पृत्र जन्म लेता, जो अभिमन्य, दुर्गादास और प्रताप
की भाँति जा ति का मस्तक उँचा करता। मेने द्रत किया कि पृत्र हुआ तो उमे
देश और जाति के हित के लिए समर्पित कर दूंगो।"

"सो पिया" का समा में जीवन देश प्रेम तथा मानवता वाद से भरा हुआ है। वह देश का उतार करने के लिए मिस्टर जॉन क्लार्क जैसे ऑधकारियों से शादी नहीं करतो, बल्कि " विनय " के पथा का अनुसरण करती है किन्तु जब विनय जनता के

^{।.} सेवासदन, पृ० - 23।

² रंगभूमि , पृ० - ११

उपर गोली चलाकर असन्तोष फैलाते हैं तो वह उनसे भी घूणा करने लगती है। वह कहती है - " जो लोग आज निरापराधियों की हत्या करके सम्भान और कोर्ति का उपभोग कर रहे हैं, उन्हें नरक कुण्ड में जलाउँगो , और जब तक अत्या-चारियों के इस जत्ये का मूला छेद न कर दूँगो, चैन न लूँगो, चाहे रियासत में विप्लव व ही क्यों न हो जाये, चाहे रियासत का निशान ही क्यों न मिट जायें।"

"गागुली " और "इन्द्र दत्त " में भी देशम्रेम को यह भावना कूट - कूट कर भरी है।

इस प्रकार प्रेमवन्द में देश प्रेम की भावना कभी अंग्रेजों के शो का नीति के विरुद्ध जागत हुई तो कभी निरपराधो जनता पर गोली चलाने वाते रियासत-दारों और जमीदारों पर । एसदरूपेण में हम देखते हैं कि देश प्रेम की भावना शरत चन्द्र और प्रेमवन्द में विध्मान है किन्तु परिणाण में प्रेमवन्द में अधिक है।

उ. गाँधोवादी विचारधारा:

गाँधों जी के असहयोग आन्दोलन, स्वदेशी आन्दोलन

गंभूमि , पृ० - 352

तथा मातृभाषा के प्रयोग का प्रभाव साहित्यकारों पर आधकाश रूप से देखने को मिलता है। कल - कारतानों का ग्रामोण बस्तियों के समीप निमाण भी महातमा गाँधी का दृष्टि में हानिकारक थी, इसको भी जिन्न स्वता कारों की रवना औ में देखने को मिलतो है।

शरतचन्द्र के " जागरण" उपन्यास में असहयोग आन्दोलन का प्रभाव दिशाई पड़ता है। " अमर नाथ" कहता है " - तुम लोग मार- काट मत करों, किसो व्यक्ति क्लोष या अंग्रेज के प्रति विदेष भावना अपने अन्दर न आने देना, लेकिन इन दुराचारो अर्ध्म परायण और असत्य प्रिय मोजूदा सरकार से किसो प्रकार का सम्पर्क मत रखों। नोकरों का लाल्च में पड़कर इसके आगे नाच मत रगड़ों। विश्वा प्राप्त के लिए स्कूल कालेज के हाते में अन्दर पर मत रशों, इन्माफ की आशा में इसको कवहरी की और मन खां। "

यह भावना निश्चित रूप में 1921 में महात्मा गाँधी नारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन के परिजामस्वस्य हो पैदा हुई।

महातमा गाँधो ने " स्वदेशो अपनाओं का नारा दिया । विदेशो अपडों को होली जलाई गयो । विदेशी अस्त्रों के परित्याग पर बल दिया गया । इस

शस्त बमग्र, भाग -3, पृ० 377

उपन्यास में यह भावना भी देखने धे मिलतो है - " अमरपुर बाजार में खिदेशी । कपड़ी की बिक्री गुण्डों ने रक्ता टो है।"

इस प्रकार गाँधी जी के ऋहियोग तथा स्वदेशी आन्दोलन का प्रभाव शरतदन्द्र के उपन्यासों में देखें को मिलता है।

प्रेमवन्द भी तो महात्मा गाँधी के नेतृत्व में पूर्णस्प से ज्यिवास रखेते था। वे उनके सच्चे अनुयायी थे। इमलिए उनको भावनाओं का अपने उपन्यासों में स्थान-स्थान पर प्रतिपादन किया है। "गबन" उपन्यास में "देवी दीन स्वैदेशी वस्तुओं पर बल देता है तथा " रमानाथ " ते कहता है " " कुछ बेसी दाम लगे, पर स्पया तो देश में ही रह जाता है। नवे दिन दूकानदारों ने क्सम खायी कि हिवलायती क्यड़े अब न मंगवायेंगे। तब पहरे उठा लिये गये। तब से विदेशी दियासलाई तक धर में नहों लाया।

देश भवतों को उलाहना देता हुआ देवोदोन कहता है - "गरीखों को लूटकर विलायत का घर भरना तुम्हारा अम है, इसोलिए तुम्हारा इस देश

[।] भरत समग्र, भाग- 3, प्० 381

^{2. &}quot;गबन", पूर् - 150

में ज़ुन्म हुआ है। हाँ रोये जाओं, विलायतो शराब उडाओ, विलायतो मोटरे दोडाओं, विलायतो मुरब्बे और आचार वधो, विलायतो बर्तनों में खाओं, जिलायतो दवाइयाँ पियों, पर देश के नाम पर रोये आओं।

इस प्रकार शरतचन्द्र और प्रेमचन्द के उपन्यामों में गाँधीवादी विधार धारा भी समान रूप मे पायी जाती है।

XXXXXX

^{। • &}quot;गबन " पृ० - । । ।

वेषम्य

साहित्य के क्षेत्र में

शास्तवन्द्र और प्रेमचन्द्र में अनेक तथ्यपरक समानता के बाउजूद वेषम्य भी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। दोनों कर वातावरण, सामाजिक परिवेश कर अलग किरम का था। शरतचन्द्र का रचना संसार अपेबाक्त अधिक भावक है। सम्पूर्ण साहित्य में इसो का किशा किया गया है। इनके उपन्यासी की कथा वस्त वर्जित प्रेम का क्तिरक है। ऐसे नारी पुरुष पात्रों के प्रेम जिन्हें समाज नैनिक नहीं कहता है। वर्जित प्रेम करे जाते हैं। किनसे प्रेम करना चाहिए । किससे खेर करना वाहिए । १ ऐसा लगता है समाज के पास इसका एक निष्टिवत नियम कानून है यदि उस मार्भूले के आधार पर प्रेम किया जाता है तो वैध अन्यथा अवैध करार कर दिया जाता है। सभी व्याक्तयों को प्रेम करने का आधकार नहीं है इसके लिए भी व्यक्तियों की श्रेणी है। इस प्रकार ब्यां समाज में प्रेम का एक निश्चित स्वरूप निर्धारित कर दिया गया था। शरतचन्द्र ने इन मान्यताओं का सम्बन किया । क्यों कि प्रेम सिहान्त पर नहीं स्थिर किया जा सकता । यह शुद्ध रूप से क्दय पक्ष को बात है। प्रेम के 'गरा समाज की उँच - नीच . छुआ छुत. गरीब. अमीर को खार्ड पट जाती है। अतः समाज में सुव्यवस्था लाने के लिए प्रेम को इन नियमों के दायरे से बाहर निकलवाना होगा । शरतचन्द्र का अधिकाश

साहित्य इसी क्यावस्तु में लिखा गया है। कहीं विश्ववा प्रेम कहीं वेह या प्रेम कहीं अन्तर जातीय प्रेम की समस्या को उठाया गया है।

" बड़दीदी" उद्धाहत में माधवी जो कि एक विश्वता है उसका प्रेम सूरेन्द्र नाथ नामक युक्क से हो जाता है। चूँकि माधवी विश्वता है उसत: सूरेन्द्र नाथ के साथ उसका प्रेम औषित्यपूर्ण नहीं माना जाता है। " देवदास " उपन्यास में पार्वती का देवदास से प्रेम हो जाता है। दोनों फल्स्किन्द का आर्थिक आशार एक सा नहीं है। देवदास के पिता नारायण मुख्जों जमीँदार हैं तथा पार्वती के पिता नीलकंठ चक्रवर्ती साधारण से काश्तकार। इसलिए पार्वती और देवदास का विवाह नहीं हो पाता है। पार्वती की शादी अधेड उम्र के खून स्वामी के साथ हो जाती है। प्रेम की पूर्णता प्राप्त न होने के कारण देवदास शराबी हो जाता है। वेदयालय जाने लगता है। इस प्रकार इस उपन्यास की भी क्यावस्त, वर्जित प्रेम ही है।

"गृहदा ह " उपन्यास में क्वला जो कि एक ब्राह्म समाजी है, उसका प्रेम
माहिम नामक हिन्दू युवक से हो जाता है। इस प्रेम का विरोध उसका मित्र सुरेश
करता है किन्दू धीरे - धीरे सुरेश भी ज्वला का प्रेमी बन जाता है तथा उसे प्राप्त
करने के लिए कभी अवेले में अवला के पास पहुँच जाता है कभी उसका अपहरण कर
लेता है। इस प्रकार सम्पूर्ण कथा - अवला - माहिम और सुरेश के त्रिकोणात्मक

प्रेम को लक्ष्य बनाकर चलती है।

"चरित्रहीन " उपन्यास में सतिका और साविकी को प्रेम क्या का वर्षन है। साविकी कुलीन परिवार की बाल विध्वा ब्राह्मणी है जिसे कि उसके किसी रिश्तेदार ने बहला - पूछला कर संयोग स्थापित कर लिया इस प्रकार उसका जीवन सामाजिक दृष्टि से पापमय हो गया। ऐसी धृष्पित युवती से सतीका का प्रेम समायोजित नहीं कहा जा सकता उपन्यास के अन्त में हम देखते हैं कि उपेन्द्र जो कि सतीका का मित्र है वह सावित्री का बहिन का सा सम्मान देता है। सम्पूर्ण क्या के मूल में इसी प्रेम का चित्रण हुआ है।

" श्रीकान्त " उपन्यास की क्यावस्त, भी प्रेम ही है । श्रीकान्त का राजल मी नामक गाने वाली के प्रति बाक्षंम तथा उसका श्रीकान्त के प्रति सेवाभार एवं समर्पण ही क्या की मूच्य घटना है । सावित्री तथा श्रीकान्त का विवाह श्री सम्मन्त होता है । कहने का अभिग्राय कि सम्पूर्ण क्यानक में प्रेम का ही चित्रण हुआ है ।

इस प्रकार शरतवन्द्र के अधिकाश उपन्यासों के क्यातत्व के रूप में वर्जित प्रेम जाता है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी इस वर्जित प्रेम का चित्रांकन हुआ है। लेकिन वहाँ पर वह पंधान न होकर केवल घटना को सरस बनाने तथा घटनाकुम को आगे कटाने के लिए किया गया है। जैसे - कर्मनिम में - सकीना तथा अमरकान्त का पेम " गोदान " में झिनया १ विधवा १ तथा गोबर का प्रेम । गोदान में ही पं मातादीन तथा चमारिन सिलिया काप्रेम । " रंगभूमि" में विनय तथा सोपिया का पेम । इन उपन्यासी का मूख्य प्रतिपाद्य क्यातत्व शोषितों का किया तथा इनके खिलाफ संवर्ष है। जैसे कर्मभूमि उपन्यास का नायक अमरकान्त साम्यवादी व्यवस्था के लिए संघर्ष दिखाना है न कि सकीना - अमरकान्त का पुण्य प्रसंग -या सकीना - स्रुलीम के सम्बन्ध अतलाना । प्रेमचन्द की मान्यता है कि समाज में जो कुछ भी अवेतिक कार्य होते हैं वे सभी सम्पत्ति अर्जित करने के लिए होते हैं। यदि इन सम्पत्तियों के अर्जन पर रोक लगा दी जाय तो सारे अनेतिक कार्य बन्द हो जायेंगे।

इस प्रकार उपन्यास का मूज्य प्रतिपाद्य साम्यवादी व्यवस्था का समर्थन है।

" गोदान " उपन्यास की भी क्यावस्तु -िसिल्या चमारिन तथा पं मातादीन का प्रेम चित्रांकन नहीं है। ये सब गोण घटनाएं हैं। मूझ्य घटना ग्रामीण कृषक जीवन की दयनोयता का चित्रण करना है। इसी प्रकार रंगभूमि भी मूह्य रूप से राजनैतिक उपन्यास है। जिसमें सुरदास - गाँधी जी, विनय, जवाहर लाल नेहरू, विनय के पिता कुँबर भरत सिंह, मोती लाल नेहरू, सोपिया श्रीमती ऐनी बेसेन्ट तथा डाँ० गाँगूली - देश बन्धु चितर नजस्दास के रूप में काम कर रहे हैं। यहाँ पर उपन्यास का मूह्य प्रतिपद्मध जसहयोग जान्दोलन का चित्रण करना है। विकि विनय तथा सोपिया के प्रेम का चित्रण करना।

इस प्रकार शारतचन्द्र के उपन्यासों की क्यावस्तु वर्जित हैम का चित्रण करना है जबकि प्रेम चन्द का मूज्य प्रतिपाद्य भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौर के समय के समाज का चित्रण करना है।

शररतचन्द्र तथा प्रेमचन्द के उपन्यासों में पात्र भेद भी मिलते हैं। शरतचन्द्रं के ज्यादातर नायक बवारा किस्म के हैं। चाहे वह "देवदास " का नायक देवदास हो अथवा " चरित्रहीन " का सतीश वा गृहदाह का माहिम हो। सभी नायक व्यवस्था या परिवार के प्रति जिम्मेदारी नहीं महस्स करते। श्रीकान्त उपन्यास का नायक श्रीकान्त भी धुमन्त्र किस्म का नायक है जो कशी सन्यासी का स्प धारण करता है तो कशी बच्चों के साथ जाकर अन्य साहसिक कार्यों में मनोविनोद करता है। इन पात्रों में धन के प्रति जरा भी आसिकत नहीं दिखलायी पड़ती। देवदास, शराब पीता है, वेहयालय जाता है। तथा वह चन्द्रमुडी नामक

वेरया को "बद्दन कहता है। "चरित्र हीन" का नायक सतिशा शराबी है और एक पतित समझी जाने वाली स्त्री का प्रेमी। " गृहदाह" का नायक माहिम भी बेपरवा चरित्र है। श्रीकान्त का नायक "श्रीकान्त" भी राजलक्ष्मी नामक गाने वाली का प्रेमी बनता है तथा उससे शादी भी करता है। कभी बंगाल जाता है कभी बमां। कभी बनदा दीदी से मिलता है। तो कभी अभया को सहारा देता है। वमां जाता है। इस प्रकार उसका सम्पूर्ण जीवन कहारा सा लगता है। उसका यह जीवन स्वाह्म शरतचन्द्र के जीवन से मिलता जुलता लगता है।

प्रेमचन्द्र के उपन्यासों के नायक सिर से पेर तक जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए नजर बाते हैं। उनमें क्वारगी का एक भी और नहीं पाया जाता है। जैसे -"गोदान " का नायक होरी। अपने परिवार की जिम्मेदारी का निर्वाह करता है। समाज की परम्पराओं का भी निर्वाह करता है। रंगभूमि का नायक सुरदास भी पुरानी सोच का व्यक्ति है। इसीलिए उसमें जोड़ोगिक भावना नहीं पनप पाती है। वह अन्त तक इसका विरोध करता रहता है। किसी भी प्रकार की चारित्रिक दुकेंन्ता उसमें नहीं पायी जातो।

"कर्मभूमि" का नायक अश्ररकान्त भी एक जिम्मेदार युवक है। "प्रेमाश्रय" में ज्ञान शंकर सच्चरित्रवान नवयुवक है। कहने का तात्पर्य कि प्रेम्बन्द्र के सभी नायक सच्चरित्रवान तथा जिम्मेदार है जबकि शस्तवन्द्रें के नायक शसाबी तथा आवारगी की प्रवृत्ति से युक्त है।

इसी प्रकार शरतचन्द्र के उपन्यास की नायिकाए भी समाज के पत्ति वर्ग से आती हैं। "चरित्र हीन" उपन्यास की नायिका भूसावित्री" उच्च कूलो त्यन्न ब्राह्मणी जो कि विधवा हो गयी हो गयी है। उसके किसी रिश्तेदार ने पुसलाकर उसके साथ संभोग स्थापित किया है। अब वह खाना बनाने का काम करती है। इस प्रकार वह समाज की दृष्टि से पतिता है।

" गृहदाह" की नायिका अवलाब्राह्म समाजी लड़की है। सुरेश उसके साथवला त्कार करता है तथा उसका अपहरण भी कर लेता है। इस प्रकार वह भी मुक्त विचारों वाली नायिका है जो समाज की दृष्टि में अनेतिक है।

"श्रीकान्त " उपन्यास में तीन प्रमुख महिला पात्र है अन्नदा दीदी अभ्या, राजलक्ष्मी। ये तीनों ही नारियां परम्बरागत समाज में समा हुत नहीं है। अनदा दीदी पति के मुझलमान बन जालेपर वह भी अपना धर्मत्याग कर उसके साथ अभाव मय जीवन व्यतीत करने लगती है। उसका यह धर्म परिवर्तन सामाजिक दृष्टिकोप से नैतिक नहीं माना जाता है।

अभ्या वर्मा में प्रवासी पति के दूसरी शादी कर लेने के कारण उसके साथ न रहकर रोहिशी नामक युवक से शादी कर लेती है। इस प्रकार वह भी सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित पात्र है।

राजलक्ष्मी महलों और इवलेलियों में जाकर गाने वाली प्यारी बाई बन जाती है इस प्रकार वह भी अपना सामाजिक सम्मान खो चुकी है।

किन्तु प्रेमचन्द की नायिकाएं समाज के गरीब वर्ग से सम्बन्धित अवस्य हैं।
किन्तु उपेक्षित नहीं। गोदान की नायिका धनिया - होरी महतो की सम्मानित
पत्नी है जो कि परम्परागत तरीके से व्याहो है।

इसी प्रकार कर्मभूमि की नायिका - सकीना तथा रंगभूमि की सोपिया भी सामाजिक दृष्टि से सम्मानित नायिकाएं हैं। " निर्मेला" उपन्यास की नायिक निर्मेला भी गरीब अवस्य है किन्तु सामाजिक दृष्टि से पतित नहीं है।

केवल " सेवासदन " को नायिका सुमन वेह या बन जाने पर निराहत होती है किन्तु उपन्यास के बन्त में उसमें भी वेह या परिवर्तन की मावना बाती है। इस प्रकार शरतचन्द्र की नायिकाएँ समाज के पतित वर्ग से आती हैं जबकि प्रेमचन्द्र की नायिकाएँ समाज की सम्मानित नायिकाएँ हैं।

शरतवन्द्र स्क्भावत: रोग्गनी हैं। वे यह जताते हूर प्रतीत होते हैं हैं कि परम्परागत नैतिकता मन्ष्य के दृष्टिकोण को संकीण बनाती है। प्रचलित मानदण्डों का बनुसरण करने से ही कोई खन्छा या महान नहीं बन जाता, बल्कि व्यापक दृन्टिक्श कोर संवेदनशील क्दय हो तो मनुष्य सवमूद वीरोदात्त कहा जाता है। इसीलिए उन्होंने अपने उपन्यासों में नैतिकता पालन पर बल न देकर मानव क्दय को भावना के पालन पर बल दिया है। समाज के द्रारा बनाये गये नियम युग सापेब होते हैं वे नियम कानून, कायदे तत्कालीन परिस्थितियहें के उपयुक्त हो सकते हैं किन्त, उनको शाहकाता के विषय में कोई मारण्टी नहीं है।

प्रेमवन्द के साहित्य का उद्देश्य समाज - राजनीति का यथार्थ किया करके उनमें सुधार तथा परिष्कार करना । यद्यपि कि उनका भीमानना है कि समाज के जारा बनाये गये नियम युग सापेब होते हैं वे नियम कानून, कायदे तत्कालीन परिस्थितियों के उपयुक्त हो सकते हैं किन्तु उनकी शाहकाता के विषय में कोई गारण्टी नहीं है ।

प्रेमचन्द के साहित्य का उद्देश्य समाज राजनीति का यथार्थ चित्रण करेंके उनमें सुभार तथा परिष्कार करना । यथि कि उनका भी मानना है कि समाज के द्वारा बनाये गये सम्पूर्ण नियमों का यथावत पालन नहीं करना चाहिए । किन्तु उन परम्पर की को तोड़ने में उनके अन्दर एक संकोच पाया जाता है । जिसके कारण वे नयी सोच के दौर में उतना आगे नहीं जा सके हैं । जिसता शरत-चन्द्र जाते हैं । "गोदान " होरी अपना सम्पूर्ण जीवन इन्हीं सामाजिक परामरा- को को अपने अन्तस में संजोये -संजोये अन्तत: तबाह हो जाता है ।

पूमचन्द के उपन्यासों में वस्त्राभूषण से आकर्षण तथा तज्जिनत पीड़ा का भी चित्रण किया गया है। जैसे - "गवन" उपन्यास में "जालपा" तथा "रतन" शरत चन्द्र के सभी पात्र इस पृंवृत्ति से ग्रिसत नहीं लगते हैं। प्रेमचन्द तथा शरत चन्द्र के परिवेश में अन्तर होने के कारण साहित्य के उपकरणों में भी अन्तर पाया जाता है। जहाँ प्रेमचन्द के साहित्य में कब्बड़ तथा गृल्ली उन्हा जैसे ग्रामीण खेलों का वर्णन किया गया है। वहीं शरत चन्द्र के साहित्य में मनो-किनोद का मृद्ध्य साधन हैन मछली पक्दना तथा नाव खेना। जैसे श्रीकान्त उपन्यास में श्रीकान्त तथा इन्द्रनाथ का खेल :

राजनैतिक वेषंग्य:

शस्त चन्द्र गाँधी जी के आलोचक थे। किन्तु वे गाँधी जी की अपेक्षा देशबन्धु चितर ज्जन दास से अधिक प्रभावित थे। देशबन्धु की प्रोकेमस्ती काप्रभाव शस्त साहित्य में अधिकाश रूप से पाया जाता है। उनके सभी पात्र धन के प्रति बनासकत लगते हैं।

शरत चन्द्र आर्तेक्वाद तथा अनित्तकारी गतिविधियां के भी पक्ष धर नहीं थे। फिर भी स्वाधीनता संग्राम में क्रान्तिकारियों ने जो आग धर्धकायी है उसकी सरा हना उन्होंने -" पथेरदिब" तथा " जागरण " उपन्यासी में किया है। इसका अर्थ यह भी नहीं लगाया जाना चाहिए कि वे स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन से बिल्कुल ही अछूते रहे। "जागरण" उपन्यास में गाँधी जी के उसहयोग आन्दोलन का वह प्रभाव परिलिधित होता है। जिसके माध्यम से इन्होंने न्यायालयों तथा स्कूल कॉलेजों के बहिष्कार पर बल दिया था। आपसी वाद-विवाद मिलम जुलकर हल किये जाने चाहिए । यह बिन्दु उनके उपन्यास "जागरण" तथा पाल्लि समाज में मिलता है। "पथ के दावेदार " में क्रान्तिकारियों के जीवन का चित्रण किया गया है। जहाँ किसी व्यक्ति विशेष को सम्मान के स्थान पर सबके विवारों को सम्मान देने की ध्विन सुनायी देती है। इस आतंक

-वादी गतिर्विश्व में न केवल पुरुष भात्र सम्मिलित हैं - अपित् सुमित्रा तथा भारती जैसी जागरूक नारियाँ क भी सम्मिलित हैं।

प्रस्केन का प्रयास किया है। वे गाँधी जी से बहुत ज्यादा प्रभावित है।

उनका सम्पूर्ण साहित्य ही इस बान्दोलन से करा पड़ा है। प्रेमचन्द जी ने अपने

"लिटरेरी जीवन " का प्रारम्म 1901 से प्रारम्म किया। 1907 में उन्होंने

दुनिया का सबसे अनमोल रतन नामक कहानी लिखो। इसमें उन्होंने जून की

उस बूँद को दुनिया कासबसे अनमोल रतन कहा जो देश की स्वतन्त्रता के लिए

बहाया गया है। 1908 में क्रान्तिकारी खुदी राम बोस को फाँसी होती है।

इस क्रान्ति की पृष्ठभूमि में ही " खोजे वतन" नामक कहानी लंग्रह प्रकाशित हुई।

जिसे ब्रिटिश सरकार ने 1908 में जब्त कर लिया। अभी तक नवाब राय थे जो

उद्दें में लिखते थे किन्तु अब बदलकर हिन्दी के प्रेमचन्द बन गये।

स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन की पृष्टभूमि में ही "कर्मभूमि हूं काया कर्म तथा "रंगभूमि" उपन्यासों की सृष्टि हुई । "कर्मभूमि में समरकान्त तथा अमरकान्त वाप -बेटे, समाज में नयी वेतना पेदा करते हैं। यह काम स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में मोती लाल नेहरू तथा जवाहर लाल नेहरू कर रहे थे। हिन्दू

मुस्लिम एकीकरण को भावना का प्रचार - प्रसार तत्कालीन आन्दोलन मोलाना अली कर रहे थे। " कायाकल" में यह कार्य हवाजा मोलवी साहब करते हैं। गाँधी जी के लिए प्रेमचन्द के मन में अत्यधिक आस्था थी । गाँधी जी की अचल निष्ठा थी - कर्म पथ पर । पेमचन्द कभी क्मी इस संकोच में पड़ जाते थे कि वै महात्मा गाँधी की बात को प्रभाणित माने अथवा जो कछ वे स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं। उनके जीवन के अपने अनुभव तथा महात्मागांधी के कथन के बीच बराबर रस्सावशी चलती रहती थी अन्त में दोनों के बीच सामंजस्य का रास्ता तय करते थे। गाँधी भी आह्वान पर उन्होंने 16 स्ववरी 1921 को सरकारी नोक्सी से त्याग पत्र दे दिया । गाँधी जी ने चरखा पर बल दिया । पेमचन्द्र ने सरकारी नो इसी से त्याग पत्र देने के बाद 20 ह्यकरहीं का एक कारसाना स्थापित किये । न्यायालयों के स्थान पर पंची के माध्यम से विवादों के सुलक्षाने की कोशिश की गयो । इसके लिए प्रेमचन्द ने पंच परमेश वर वहानी लिखी । माँधी जी ने उद्योग - धन्धों का विरोध किया था । "रंगश्रुमि" का सरदास भी पांडेपूर में मि0 जानसेवक द्वारा स्थापित की जाने वाली सिगरेट फेक्टरी का विरोध करता है। इस प्रकार शरतचन्द का राजनैतिक दृष्टि सीमित परिलिश्त होता है जबिक नेमचन्द का वर्णन क्षेत्र व्यापक है।

प्रेमचन्द समाजवादी विचारधारा से भी अत्यधिक प्रशासित ये उनके जीवन दर्शन में सर्वहारा वर्ग का उत्थान ही समाज में समानता ला सकता है। स्स की बो स्मेविक विचारधारा से अच्छी तरह परिचित थे। गोर्की, टा स्मटाय उनके प्रिय रचनाकार थे। प्रेमचन्द के उपन्यासों में जो क्रान्ति का स्वर मृद्धरित हुआ है। वह इसी विचारधारा का प्रशाव है।

शारतचन्द्र तथा प्रेमचन्द के साहित्य में कला त्मक भिन्नताएं भी पायी जाती है। शारतचन्द्र प्रेम और कर्मव्य के बीच समझौते का रास्ता अपनाते हैं। किन्तू प्रेम -चन्द्र में ऐसा कम ही देखने को मिल्ला है। "रंगमूमि" में "सोपिया " के प्रेम में इबा ह्या किन्य ग्रामीण जनता पर गोली चलवा दे देता है। वह सोचता है कि इससे सोपिया प्रसन्न होगो किन्तु वह उससे प्रसन्न महोकर उससे घृगा करने लगती है। इस प्रकार प्रेमचन्द्र केवल कर्तव्य पर बल देते हैं।

शास्तवन्द्र के उपन्यास संयोग्ने पर अधिक निर्मर रहते हैं। तथा उनका उपंसहार अति नाटकीय होता है। " बडदीदी" उपन्यास का दूसरा भाग संयोगों पर अधिक निर्मर है। माधवी की शादी जिस क्षेत्र में हुई होती है, संयोग से उसी क्षेत्र का जमीदार सुरेन्द्र नाथ भी रहता है। जब माधवी सुरेन्द्रनाथ के विषय में जानती है कि उसी की रक्षार्थ वह दूर निकल गया है। वह भी निकल जाती है। तथा " संयोग " से मुलाकात होती है। तथा सुरेन्द्र नाथ अपनी अन्तिम साँस

मा इवी की गोदी में लेता है। इसी प्रकार श्रीकान्त उपन्यास में श्री श्रीकान्त संयोग से उसी रंग्राला मे पहुँचता है जहाँ उसकी बाल प्रेमिका राजलक्ष्मी नृत्य कर रही होती है। इस प्रकार शरतचन्द के अधिकांश उपन्यास संयोगों पर आधारित रहते हैं।

किन्तु प्रेमचन्द के ओपन्यासिक कला में हम ऐसा कुछ नहीं देखने को पाते हैं। सभी घटनाओं के पीछे कारण - कार्य का सम्यक रूप से निर्वाह किया गया है। क्यानक के स्थूल रूप में कम से कमितना संयोग और कल्पना अपेदित होती है। प्रेमचन्द साहित्य में बस उतना ही पाया जाता है।

शास्तवनद्र ने अपने उपन्यासों में व्यक्तित्व को प्रतिष्ठा अधिक की है। चाहे वह श्रीकान्त हो, गृहदाह अधिका चिरित्रहोन हो। कथानक का प्रवाह दब सा गया है।

प्रेमचन्द के उपन्यास वालों व व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के स्थान पर कथानक का प्रवाह अधिक पाया जाता है।

शास्तवन्द ने अतिवाद का सहारा लिया है यदि किसी से प्रेम प्रसंग का वर्णन है तो उसमें अतिवार के लक्षण प्रतीत होने लगते हैं। तथा पात्र जब तक रो नहीं देते। सन्तोष की साँस नहीं लेते।

प्रेमचन्द मध्यमार्गी साहित्यकार है उनके उपन्यास आंसुओं में इदे ह्य न होकर यथार्थ को ठोस अभि पर टिकें ह्य है।

इस प्रकार साहित्यिक तथा राजनैतिक दोनों क्षेत्रों में शरतचन्द्रं तथा
प्रेमचन्द में अन्तर परिलक्षित होते हैं। किन्तु इसका यह उर्ध क्दापि नहीं लगाया
जा सकता है कि एक छोटा है तथा दूसरा बड़ा। यह साहित्यकार के परिवेश
उसकी अधिस्चितथा समय की माँग की बात है। किसी क्षेत्र में एक बड़ा है तो
किसी क्षेत्र में दूसरा।

बंगमूमि के नक्जागरण की विरास्त रूप में हिन्दी प्रदेशों में भी नक्जागरण पुकट हुआ और इसके संवाहक बने भारतेन्द्र बाबू हरिशचन्द्र । भारतेन्द्र हरिशचन्द्र के पूर्वज इतिहास प्रसिद्ध अमोचन्द सेठ थे। जिनका परेवार बाद में बनारस आकर बस गया था। इसलिए भारतेन्द्र के संस्कार में बंगाल प्रान्त की आबोहवा समाहित थी। यही नहीं ईसवर चन्द्र विद्यालागर से उनके बहुत ही नजदीकी सम्बन्ध थे। उन्हीं की प्रांक्सा में भारतेन्द्र ने " मधुरी बानी कहि समझा का, विधवा गन सो नेह लगावत " कही । इस प्रकार बंगाल के नवजागरण को हिन्दी प्रदेश में लाने का बहुत कुछ क्ष्य भारतेन्दु बाबू हरिश वन्द्र को है। इन्होंने हिन्दी प्रदेश तथा बंग पुंदेश के नवजागरण में एक सेतृ का कार्य किया । सामाजिक क्रीतियों, नारी जागरण, विश्वा विवाह के समर्थन तथा देश - प्रेम की भावना से औत-प्रोत रचनाएं की।

इसी समय " आर्य समाज " समाज सुधार के क्षेत्र में सिक्किय था। इस समाज के लोग सनातनी पिंडतों से शास्त्रार्थ करते थे तथा इसके साथ ही बाल किवाह एवं बेमेल विकाह की क्रीतियों पर भी बल देते थे।

प्रेमचन्द के मस्तिष्क में इन दोनों प्रयासों का खूब प्रभाव पड़ा। चूकि भारतेन्द्र भी वाराजसी के ही थे तथा प्रेमचन्द भो बनारस के थे। यही नहीं भारतेन्द्र साहित्यकारों में अगुगण्य थे। "किव-वचन सुधा, हिरएचन्द्र चित्रद्रका

तथा हिरहचन्द्र मेगजीन के माध्यम से वे बहुत ही प्रशस्ति हो गये थे। अतः प्रेमचन्द पर इनका प्रभाव पड़ना स्वाकान्तिक हो था। आर्य समाज के सन्देश भी प्रेमचन्द को पृष्ठिभूमि में रचे थे। प्रेमचन्द स्वयं साथी थे। अनेमेल विवाह के कारण पेदा हुई समस्याओं के। उनके पिता ने अपनी दूसरी शादी की तथा शीघ्र ही इस संसार से कूब गये। पीछे छोड़ गये दो बच्चे तथा एक विध्वा। इन सबका कार प्रेमचन्द के उपर बा पड़ा था। बाल विवाह के दृष्पिरणामों के की प्रकथ्व भोकता थे प्रेमचन्द । उनकी शादी बास्यावस्था में हो हो गयी। बहुत के सने के बाद इस शादी की परिणित हुई विवाह विच्छेद में। इसिलर प्रेमचन्द को आर्य समाज की सम्मूर्ण बातें क्लो प्रकार से समझ में आयीं।

इन सभी ाकारकों के साथ हो प्रेमचन्द अपनो आँखों से जिस समाज को देख रहे थे, जिस समाज में जो रहे थे, जिसके भो क्या तथा दृष्टिंग्टा दोनों वे स्वयं थे वह समाज विषमतापूर्ण था । पिंडत पूरोहितों को धर्म के क्षेत्र में दादागिरी चल रही थी । देवालयों में वेह याएं नृत्य कर सकती हैं किन्तु अञ्चल के प्रवेश से ही मन्दिर असिकत्र हो जाता है । इसके साथ ही प्रेमचन्द ने नारी दुईशा को भी अपनी आँखों से देखा - समाज निर्माण में जिसका इतना योगदान है वही नारी इतना तिरस्वृत तथा हैप समझी जाती है । वह केवल पृत्यों के भोग- विलास की सामग्री मात्र मानी जातो है । उसके सारे विध्वार छोन लिये जाते हैं । इसी प्रकार की अनेकानेक घटनाएं प्रेमचन्द्र के लिए जैचारिक पृष्ठभूमि बनीं। अञ्चल और नारी ही विशेष रूप से प्रेमचन्द्र के। आविष्ति किये।

इसी समय काँग्रेस को स्थापना १ 1855 भें हुई । इससे राजनीतिक चेतना जगी । किन्तु यह चेतना ज्यादा प्रबल रूप नहीं धारण कर सकी । इसके अधिवेशन जहाँ भी होते केवल अधिवेशन के समय ही नारे लगाकर साल भर के लिए पुनः शान्ति हो जाती । इसके बाद्युद भी यह तो मानना हो पड़ेगा कि कुछ हो लोगों में सही, राजनैतिक चेतना जग रहों थी ।

1893 में स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में जाकर भारत का नाम रोशन किया । इस प्रकार के प्रतिनिधित्व से भारतोयों का उत्साह और बदा ।

इस प्रकार देश - विदेश में नयी चेतना का संचार हो रहा था। प्रेष-चन्द की संवेदनशीलता बड़ी व्यापक थी। उन्होंने उन बीजों का गहराई से अनुश्व किया जिनके कारण समाज में गति हीनता आयो है तथा देश का समृचित विकास नहीं हो पा रहा है। मुंगी प्रेमचन्द के सुधार की पहली सीमा आर्य समाज से प्रारम्भ होती है। तथा राजनीति के क्षेत्र में वे गोखले से ज्यादा प्रभावित हुए। इसके साथ हो गरम दल का भी प्रभाव उन पर था। 1907 में उन्होंने "दुनिया का सबसे अनमेल रतन नामक कहानंग लिखा तथा खुदीराम बोस को प्रांसी हो जाने पर उनकी तस्वीर अपने कमरे में टांग दी। शीघ्र ही "सोजे वतन " अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लिया गया।

बंग साहित्य में विक्रम चन्द्र का प्रभाव सीमा का अतिकृष्ण करके हिन्दी प्रदेशों में भी फैला । उनका "वन्दे मातरम् "नारा स्वतन्त्रता ज्यनाद बना । मुंगी प्रेमचन्द जी ने 1912 में "जल्दर ईशर "वरदान" प्रकाशित हुआ जिसमें बिक्स का प्रभाव पाया जाता है। बंग - भंग विरोधी स्वेदशी आन्दोलन का प्रभाव उनके "सोजे व्यन" में मिलता है। इसके साथ ही प्रेमचन्द के जीवन को गतिशीलता प्रदान की । टालस्टाय की रचनाओं ने । उनको रचनाओं से उन्होंने प्रेम, दया, क्षमा, परोपकार, विहेंसा, त्याग अपरिग्रह की शिक्षा ली। "पंच परमेशवर "सरीखी कहानियों पर इन्हों का प्रभाव है।

इस प्रकार के राजनैतिक परिवेश के कारण प्रेमवन्द के मिस्ताब्क में दो प्रकार को भावनाएं पैदा हुई। एक िस्तावादी तथा दसरी अहिंसावादी। प्रेमवन्द को एक और रूस की लाल क्रान्ति छीच रही थी। तथा दसरी और महात्मागाँ भी की अहिंसावादी नीति। इसोलिए उनकी कितपय रचनाओं में हिसावादी क्रान्ति का भी दर्शन होते हैं सथा कुछ रचनाओं पर अहिंसावादी नीति का प्रभाव है।

गांधी जी के प्रति मुंगी जी की अटूट आस्था थी। वे उनके अहिंसात्मक विचारधारा से अत्यधिक प्रभाजित थे। असहयोग आन्दोलन में बद्दर, चर्छे को स्वीकार किया गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। अदालत कचहरी का बहिष्कार किया गया, स्कूल कालेज का बहिष्कार किया गया। को सिल तथा उसके चुनावों का बहिष्कार किया गया। इसन अञ्चल की भावना को मिटाने का प्रयास हुआ।

गाँधी जी के अहिंसावादी विवारधारा से प्रशाबित हो कर प्रेमचन्द ने " प्रेमाश्रम" उपन्यास लिखा । इसो समय म्हंगी जी ने अपनी सरकारी नो करी से त्याग पत्र दे दिया । असहयोग की पृष्टभूमि में ही " संग्राम" नामक नाटक लिखा । यहो नहीं इस समय प्रेमचन्द ने जो कहानियाँ लिखी उनमें से लगभग एक दर्जन कहानियाँ स्वराज्य की है ।

बंग प्रान्त की प्रतिमा ने समूचे देश को प्रभावित किया । रवीन्द्र नाथ टेगोर ने " का वेय ब्लर उपे बिता " नामक निखन्ध लिखा । उसका प्रभाव महावीर प्रसाद द्विदी पर पड़ा इसी तर्ज पर उन्होंने " किवयों को उर्मिला विषय उदासीनता " नामक निखन्ध लिखा । तथा उन्हों का अनुसरण करके मैथिलीशरण गुन्त ने " साकेत " की लुब्टि की ।

कहने का तात्पर्य कि बंग साहित्य का सीधा प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ रहा था। उनकी मूल संवेदनाओं को हिन्दी प्रदेशों में भी समाहृत किया गया। इस प्रकार बंगान का नवजागरण सम्पूर्ण देश का नवजागरण बन गया।

शरतचन्द्र तथा प्रेमचन्द्र में इतनी बड़ी समानता के कई कारण हैं। उनमें सबसे बड़ा समान वारक है - दोनों में सूक्ष्म निरीक्षण को शक्ति । दोनों कला कारों का बचपन लाभा एक जैसे अभा वपूर्ण वाता वरण में बीता । बचपन में दोनों में एक जैसी चंचलता पायी जाती है। दोनों का समय भी लगभग वही है। इसलिए देश को तत्कालीन परिस्थितियों ने समान रूप से दोनों को प्रभावित किया । राष्ट्रीय स्तर पर जो भी विचार मंथन हो रहे थे उससे दोनों हो खुब वाकिए थे। रवीन्द्र नाथ टेगोर, बक्सिवन्द्र वटजों ने समान रूप से शरत तथा प्रेमवन्द को प्रशासित क्या । महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने सम्पूर्ण देश को एकजूट करने में मदद दी । महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व से दोनों क्लाकार प्रभावित थे। उत: दोनों में गाँधी दर्शन का पुत्यक्षी करण पाया जाता है। इसके साथ ही गोखले ने भी समान स्प से दोनों साहित्यकारों को प्रभावित किया।

कांग्रेस की नरमपथी किवारशारा के साथ ही लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में भी दोनों साहित्यकारों की अद्भुत आस्था थी।

सुधारवादी संगठन भो सम्पूर्ण देश की संस्कृति को जोड़ने का प्रयास कर रहे थे। एक जैसी परम्परा का प्रचलन करने पर बल दे रहे थे।

इस प्रकार साहित्यकार जो बंग भूमि में पैदा हुए थे एक राष्ट्रीय चरित्र धारण कर सामने आये।

राष्ट्रीय भावनाओं को प्रचारित प्रसारित किया गया । सुधारवादी संगठनों ने भी एक छोर से दूसरे छोर तक एक किया । जिसके परिणामस्वरूप बंगला तथा हिन्दी संसार में एक सी प्रवृत्तियाँ पैदा हुई ।

शरतचन्द्र का जन्म 1876 में हुआ था । इस समय सम्पूर्ण देश में नयी वेतना और प्रगति का दौर वल रहा था। राजनैतिक क्षेत्र में अंग्रेजों के दमन तेजी से चल रहे थे। इसके ठीक 19 वर्ष पहले स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन को ज्वाला पुज्यवित्त हुई थी। यह आन्दोलन अप्रेजों हारा ब्बर्रतापूर्वक दबा दिया गया था। इस देश में रंग मंच पर सत्ता परिवर्तन के लिए होने वाले अभिनय पर पटाक्षेप हो गया था । अप्रेजों के शोषण के तोर - तरीके, शासन करने के दंग में चलाकी पूर्ण नये नये तरीकों का बन्वेषण आंग्ल शासन हारा छोजा जा रहा था। "पूट उनलो और राज करो " सिद्धान्त को और व्यापक रूप दिया जा रहा था । जिसने हिन्दू तथा मूसलमान दोनों सम्प्रदायों के एक दूसरे का बागी बना दिया। मलसमानों के अन्दर यह भावना भरी गयी कि भारतीय शासन पर आपका अधिकार है। हिन्दू आपकी शासित जाति है अतः वह आपकी बराबर न होकर शुद्र जाति है। यही नहीं तत्का लीन मुस्लिम संगठनों को तथा नेताओं को भी पोतसाहित क्या जाने लगा। स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में अधेजों ने हिन्द तथा मिस्लम एक्ता का अद्भुत दूरय देखा था अतः इस सामन्जस्य को समाप्त करना है। अंग्रेजी ह्युमत के पढ़ में हितकर लगने लगा । इसीलिए अंग्रेजों ने मुसलमानों को अपने हाथ का दलस्वा बनाया ।

इसके विपरीत हिन्दुओं में यह भावना पनपायी गयो कि मुसलमान विदेशी हैं उनका इस देश पर रहने वा कोई अधिकार नहीं है। यह धर्म हिन्दू धर्म का विरोधी है। जिसका परिणाम यह हुआ कि क्रीजों से युद्ध करने के स्थान पर हिन्दू तथा मुसलमान एक दूसरे के जान के बागी बन गये। एक अच्छे निर्देशक की भाति महरानी विक्टोरिया समय - समय पर सूत्रधार के वाम्य के रूप में कुछ बोलने लगति । कभी हिन्दू धर्म के पृति कुछ उदार दिखी तो कभी मुस्लिम धार्मिक उन्माद के परिणामस्वरूप जनता यह भूल गयी कि हमारा वास्तविक शक् कौन है। किस पुकार इस समस्या से निपटा जाय । जो दूरदर्शी राष्ट्रभक्तो द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आन्दोलन प्रारम्भ भी रहे वे शिष्टा मृत्यु को प्राप्त हर । एक अजीव सी राजनैतिक विचारों की शुन्यता पैदा हो गयी। किन्तु शीघ्र ही इस क्विंट्य विमृद्रता की स्थिति को बतम किया । वातावरण के सन्नाटे में रोशनी की ज्वाला जनायी महात्मागाँधी के नेतृत्व ने महात्मा गाँधी को सर्व प्रमुख समस्यां हिन्दू मिस्तिम एकोकरण की लगी। इसलिए सोचा गया कि यदि आंग्ल सत्ता को देश से हटाना है तो इन दोनों सम्प्रदायों में एकीकरण को भावना पैदा करनी होगी। हिन्दू मुस्लिम भाई - भाई का नारा दिया गया । इस प्रकार लम्बे अर्से से चले बोने वाले साम्प्रदायिक विवारों का अन्त होने लगा और देश में दिशा हीनता के स्थान पर एक निश्चित दिशा निधां^{भि}रत हुई, एक निश्चित लक्ष्य निधारित हुआ।

और राजनीति के क्षेत्र में एक नथी सोच पैदा हुई। समाज सुधार के क्षेत्र में भी यह दूरय देख्ने को मिला । प्रमुख समाज सुधारक राजाराम मोहन राय को दिवात हुए 43 वर्ष बीत चुके थे। इस समय सक दूसरे अधिकांश सुधारवादी नेता भी स्थर्ग-वासी हो चुके थे। इन सुधारकों की अनुपस्थिति में भी उनके सुधार के प्रयास के फल नुप्त नहीं हुए ये, देश प्रेम, समाज सुधार तथा बोडिक स्वात न्त्रय की भावना चिन्तकों को अभी भी बालों डिल कर रही थी। बंग समाज सुधार के क्रेन में जो भी प्रयास चल रहे थे उनमें नारी सुधार आन्दोलन प्रमुख था । नारी जीवन के त्रासदी को सुधारकों ने बहुत नजदीक से देखा था। उन्होंने महसूस किया था। उनका सम्पूर्ण जीवन पूरुष प्रधान समाज की सेवा के लिए निर्मित था । जीवन की सार्थक्ता पुरुषों की आदेशों का इब हू पालन करना है । उनका अपना कुछ नहीं । पुरुष वर्ग पर इस पुकार आश्रित रहने की मान्यता ने नारी जीवन को पंगू बना दिया था।

उनका जन्म, जीवन तथा मृत्यू सभी कुछ पुरुषों की इच्छाओं पर निर्भर है। वह इनका उपयोग एवं उपभोग अपनी इच्छानुसार कर सकता था। वह अपनी किसी भी भावना को न तो व्यक्त कर सकती थी और न ही उनको इच्छाओं का अमादर कर सकती थी। सामाजिक मान्यताएं भी पुरुषों के पेश्व में ही बनायी गयी थो। जैसे लड़कियों को शिक्षा से दूर रखना चाहिए। इस मान्यता के

पीछे शहु रूप से यहां शाव समापा था कि पदी - लिखी नारियां उस अर्थ में उनके लिए उपयोगी नहीं हो सकेगो जिस रूप में पुरुष वर्ग उनका शोषण, उपभोग करना चाहता था। इसलिए लइकियों को शिक्षा से सर्वथा दूर रखा गया। उन्हें अर्ध - विश्वासी है बनाया रखा गया था। उनकी शादी बाल्यावस्था में ही कर देनी चाहिए जिससे उनके सतीत्व को रक्षा हो सके। बंग समाज में ऐसे तमाम उदा हरण मिलते हैं जिनकी शादी ऐसी लड़कियों के साथ हुआ जिनमें उम्र का बहुत बड़ा उन्तर था।

जब यह विवाहितायों दन को प्राप्त करती तो उस समय पित दिवंगत हो जाते। नारी को सतीत्व रक्षा का भय दिखाकर उन्हें घर को चारदीवारी के अन्दर केंद्र कर दिया जाता था। पर पृश्च दर्शन तक की मना ही थी। कितपय लड़िक्यों पित के दर्शन के पूर्व ही विधवा हो जाती थो उनके लिए सन्यासिनी का जीवन बिताना आवस्यक था। इसके पीछे भी यही तर्क सतीत्व रक्षा। पृश्च पूरे उत्साह से सम्मान जनक रूप से कई शादियों कर सक्ता था। किन्तु यह दूस नारियों के लिए नहीं थी। नारी तथा पृश्च दोनों एक साथ ही वैवाहिक अवसर पर ही एक मन्त्र को उच्चारित करते हैं किन्तु पृश्च उन मन्त्रों को बेहिचक दंग से तोड़ देता था और नारी जीवन के लिए यही मन्त्र पैर की पेड़ी साबित होता

बान किवा ह तथा अनेमेन किवा ह वे परिणामस्वरूप बंग समाज में किश्वाओं की एक अच्छी आसी जमात अड़ी हो गयी थी। परिवार की सेवा करना हो उनका मुख्य उद्देश्य रह गया। यदि उनमें मानव जिन्त स्वाभाविक पृवृत्ति के कारण कहीं पैर पिसन गया और उनका सतीत्व भंग हो गया तो उनकी सारो सेवाएं परिवार के पृति सम्पूर्ण त्याग एक अटके में निर्ध्क सिद्ध होने लगता था। सामाजिक दृष्टि से वह पतित मान ली जाती थी। समाज पित उनके दंड को व्यवस्था करता था। नारी जीवन में सतीत्व के अतिरिक्त क्या नारोत्व का कोई मृत्य नहीं है १ और उनके मातृत्व सेवा, दया, माया, ममता, अगाद विश्वास जैसे मानवी गृष्णे को तिरस्कृत कर दिया जाता था। सतीत्व ही नारीत्व है यह सिद्धान्त पृष्णे को तिरस्कृत कर दिया जाता था। सतीत्व ही नारीत्व है

नवजागरण के प्रोधाओं ने इस मान्यता पर क्ठाराधात किया। इन क्रांतियों को जड में नारी अशिक्षा, जाल- विवाह तथा उनमेल विवाह को पाया गया। इसलिए समाज सुधार के प्रथम प्रयास किया गया। नारी शिक्षा के लिए अनेक स्कूल कालेजों को स्थापना बंगाल प्रान्त में हुई। बाल- विवाह तथा अनमेल विवाह पर प्रतिबन्ध लगाये गये। इसके साथ ही विधवा जीवन में आमूल चूक परिवर्तन लाने के लिए विधवा विवाह का समर्थन किया गया। इस मान्यता के प्रचलित हो जाने पर नारी जीवन के स्तीत्व तथा नारीत्व दोनों को विकसित होने का समय

मिला। बंगात प्रान्त के लोग अपेक्षाकृत भावक अधिक थे। इसलिए सुख दुख से प्रभावित होना उनकी स्वाभाविक विशेषसा थी। जैसे ही नारी जीवन केये सुधारवादी प्रयास समाज में पुरप्रित हुए जनता ने तो इसका स्वागत किया किन्तु समाजपतियों ने इसका जबरदस्त विरोध किया । इसका भी कारण यही था कि जाने अनजाने इन समाजपतियों को प्रतिष्ठा का यही एक साधन था। समाजपितयों ने समाज सुधारकों को हतो तसाहित करने के लिए बहुत प्यास किये उन्हें जाति बहिष्कृत तक कर दिया । किन्तु परम्परागत कुप्थाओं के उन्मूलन में इन विचारकों ने दिगणित उत्साह दिखाया । सामाजिक तथा राजनैतिक महामन्थन का प्रभाव जोवन के पत्थेक क्षेत्र में पड़ा। साहित्य भी इससे अञ्चला नहीं रह सका। बंग लाहित्य में इस भावना के संवाहक बने - बिकमचन्द्र, तथा रवीन्द्र नाथ ठाइर। यहाँ पर एक बिन्दु और ध्यातव्य है कि नवजागरण शहरी कथ्यवर्ग तक ही ज्यादा प्रभावशाली दिख्ता है। शायद इसका कारण यह है कि मध्य वर्ग के लोग ही पाश्चात्य संस्कृति से जल्दी परिचित हुए थे। तथा वही लोग उम सस्कृति के दुष्परिणामों से चिन्तित भी हुए थे। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं निकलता कि इस आन्दोलन से किसान, मजदूर वर्ग पूर्णरूप से अछूता रहा । मध्यवर्ग ने सामाजिक क्रीतियों का पर्दापारा करने किसान मजदूर वर्ग के लिए एक वैचारिक धरातल तैयार कर दिया । स्वतन्त्रता, समानता और जनवाद का यह सांस्कृतिक धरातल नवजागरण का विशेष रूप से संवाहक बना। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बिक्मवन्द्र भी इसी कोटि के विचारक थे उतः तत्कालीन स्थारवादी आन्दोलन से थे खूब प्रशाबित हुए।

" यंग इण्डिया " सग०न के कार्यकर्ता अपने के प्रगतिबादी कहते थे।

प्रगतिवाद के प्रतीक रूप में शराब पीना या तमाम वर्जित स्थानों पर जाना आम

बात थी। वे अपने विवार तथा संस्कार में अंग्रेजों को तुलना करना चाहते थे।

माँस भक्षण आम बात थी। इस प्रकार आवारगी तथा पर्निक मस्ती का जीवन

लेकर समाज परिष्कार करना चाहते थे। तत्कालीन साहित्य में समाज सुधार

सम्बन्धी दृष्टिकों भें नारी सुधार भावना मूख्य रूप से मुखरित हुई। विधवा

विवाह समर्थन, नारी शिक्षा पर बल, बाल विवाह, पर राक, अनमेल विवाह पर

राक इत्यादि कार्य हुए।

राजनीति के क्षेत्र में वैसे महात्मागाँधी इस समय तक राष्ट्रीय स्तरके नेता बन चुंके थे। देश के प्रत्येक को ने में महात्मा गाँधी का सम्मान हो रहा था। लेकिन सिद्धान्तों को लेकर मतनेद था। देशवासियों को विश्वास नहीं हो रहा था कि चरखे कि सहारे स्वाधीनता ली जा सकती है। इन उदार पंथी कांग्रेस की नीतियों का ज्यादा प्रभाव युवा मन पर नहीं पड़ रहा था। इसो के समानान्तर चलने वाले गरमदल के सिद्धान्त युवाओं को ज्यादा आकर्षक तथा युक्तिसंगत लो।

अत: लोकमान्य तिलक एवं सुकाष चन्द्र बोस की भावनाओं का स्वागत भी समाज में होने लगा। इस प्रकार बंग प्रान्त के भावक युवा मन को सुकाष चन्द्र बोस छा गये।

साहित्य भी तत्कालीन परिवेश से मुक्त नहीं रह सका। समाज सुधार में " बंग समाज " नामक संस्था का प्रभाव दिखलायी पड़ने लगा । वण्यं विषय में भी परिवर्तन होने लगा। सभाज की पतित समक्ष जाने वाली नारियाँ साहित्य की नायिका बनने लगीं। चूँकि इन सभी सुधारों परिवारों के मूल में राष्ट्र प्रेम की मावना छिपी थी। इस भावना के बिना स्वतन्त्रताको कामना करना भी असंगत प्रतीत होता है। बंगोय साहित्य में समाज परिष्कार तथा देश प्रेम की भावना बलक्ती हुई। समाज सुधार परक रचनाओं में - रवोन्द्रनाथ टेगोर को " आँख को किरिकरो प्रकाशित हुई। जिसमें इन्होंने विधवा प्रेम को दर्शाया है। इसी प्रकार शरतचन्द्र के साहित्य के क्षेत्र में पर्दापण करने से पूर्व रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बिक्मचन्द्र चटर्जी साधित्य में पृतिष्ठित हो चुके थे। इन साहित्य झरों को रवनाएँ बंग दर्शन " "यम्ना । तथा "भारतवर्ष " नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी। बंग समाज इन सभा इत साहित्यकारों से बहुत ही पृशादित था। इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से वही कार्य किया जो कि सुधार वादी संगठन अपने आन्दोलनों से कर रहे थे। तात्पर्यं यह कि समाज सुधार की

भावना दन साहित्यकारों में पायी जाती है। इस प्रकार सुधार की भावना इन साहित्यकारों में पायी जाती है। इस प्रकार शिक्षित समाज में नवजागरण का सन्देश पहुँचाने में इन सिहित्यकारों का जिशेष योगदान रहा। रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा बीकम चन्द्र के अतिरिक्त प्रमेथ चोधरी, अमृत लाल वस्, शी राधे प्रसाद विद्या विनोद, सत्येन्द्र नाथ दत्त, सोरीन्द्र मोहन मुख्जीं, हेमन्त ऋगार राय, मिण लाल गांगुली, पिक गांगुली, अमल होम, दिलीप कुमार राय, नवजागरण के सन्देश वाहक थे। इन साहित्यकारों से प्रभावित होकर शैलजानन्द.मधीपाध्याय. काजी नजरूल इस्लाम. अचिन्त्य कुमार सेन गुप्त, प्रमेन्द्र मित्र, नृषेन्द्र कृष्ण चट्टोपाध्याय ने अपनी रचना को गति प्रदान को शरतचन्द्र भी इन साहित्यकारों से प्रभावित हर । शरत साहित्य का जो भी वर्ण्य विषय है कुछ तो उनके अपने जीवन का यथार्थ है तथा कुछ समकालीन साहित्यकारों की प्रेरणा । शरतचन्द्र ने बंग समाज को जिस रूप में देखा था, जिस रूप में उन्होंने अपने जीवन को बिताया था। उसी का वर्णन अपने साहित्य में किया। समाज की अटपटी, सड़ी -गली मा न्यताएं खण्डित होनी चाहिए । वेहे यह कोई नया नयी विचार उनके साहित्य में प्रतिष्ठित नहीं हुआ क्यों कि समाज सुधार का स्वर ब्राहम समाज जैसे सुधार वादी संगठनों हारा पहले ही किया जा चुका था। "यंग इज्डिया" संगठन के माध्यम से कुलोनता पर प्रहार किया जा चुका था । ये बुहम पुरर्णा क्षेात शारतचन्द्र को पुरित अवस्य लिए उनके लिए एक वैचारिक धरातल अवस्य बनाए जिन्तु शरतवन्द्रं की साहित्यक सोच तत्कालीन समस्त साहित्य कारों

से कुछ अलग किस्म की थो । जिसके परिणामस्वरूप शास्तवन्द्र को इन समकालीन साहित्यकारों काविरोध भो सहना पड़ा। वस्तुत: शास साहित्य की सृष्टि उनके अपने जीवन की अनुभूति है। आवारगो, पंगकेमस्तो उनको अपने पिता से उत्तराधिकार में मिली थी। गरोबो इतनी कि फीस के पैसे भी नहीं इक्ट्रे हो सके जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें शिक्षा भी अधूरी ही छोड़नी पड़ी स्वाभाविक है कि इस प्रकार के व्यक्ति तथा कथित क्लीन समाज में सम्मान नहीं प्राप्त कर सक्ते । शरतचन्द्र में मंगीस के प्रति अतिसय लगाव था । बाँसुरी तथा तबला बजाने में महारत हासिल किये थे। गला भी बहुत उच्छा था। परिणाम स्वस्प वे उस समाज की और आङ्ब्ट हुए जहाँ उनका सम्मान हो । जब शास्तचन्द्र 19 वर्ष के ये तभी से कालीदासी नामक वेरया के यहाँ आया जाता करते थे। चूँ कि कुलोन समाज में उनकी मर्यादा घट गयी थी। इस लिए अक्लीन समाज की ही शरण उन्होंने ली। इसी समाज में शरतचन्द्र ने अपने साहित्य के मनुष्य की छोज की। ओर यह भी पाया कि मानवता वाद समाज हारा निधारित क्लीनता तिहान्त से बड़ी वस्तु है। मनुष्य में छिपी हुई सहज मानवीय करणा को अठलाया नहीं जा सकता । इस प्रकार शरत साहित्य में जो भी पतिलाएं चित्रित हुई है वे सब शरतचन्द्र के जीवन से किसी न किसी रूप से सम्बन्धित अवस्य हैं। शरतचन्द्र जहाँ भी गये उनका मन समाज की पतित समभी जाने वाली नारियों के प्रति आसक्त हुआ । मूजप्पर पुर जाने पर वहाँ भी एक वेशया के प्रति आसका हुए ।

वह "यूटी " नामक वेरया इनके लिए विलास की वस्तु नहीं बनी बिल्क आदर को पात्र बनी । शरतचन्द्र ने मानवता को स्रोज उस समाज में की जो कि सर्वधा से जपेकित रहे। शरतचन्द्रने जो शिक्षा अपने जीवन को पाठशाला से ग्रह्म को उसका उत्तरो त्तर विकास करने में रवी न्द्रनाथ टैगोर तथा बिक्म बाब ने अहं भूमिका निभायी । " रवीन्द्र नाथ टैगोर " की रचना " आँख को किरिक्टरि" प्रकाशित होने पर शास्तवन्द्र को मानों अपनी विवारधारा का साकार रूप मिल गया । शरतचन्द्र ने विधवा निस्तामा देखी से प्रेम किया था । किन्त् उनका यह पुम सफल नहीं हो सका जिसमीटी स उनको हमेशा सालती रही। उनका यह विरह बोध उनके साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ। चाहे वह "देवदास" को "बार्वतो " हो अथवा "बड़दीदी" उपन्यास की नायिका "माधवी" हो. सबमें शरतचन्द्र के जीवन का यथार्थ झलक मारता है।

वैसे यह तथ्य सत्य है कि नक्जागरण आन्दोलन में नारी के प्रति सम्मानजनक दृष्टि पनप रही थी। इसी से प्रेरित होकर रवीन्द्रनाथ टेगोर में का त्येर उपेक्षिता "निबन्ध लिखा।

नक्जागरण के परिणानस्वरूप साहित्यकारों की नारी विषयक सोच बदली। शरतचन्द्र इन भारतीय नारी रूपों के अतिरिक्त पाशचात्य नारी रूप की भी प्रतिष्ठा की है। उनकी मा चता है कि नारियों को सिर्फ देवी को पदवी

दे देने से नारी समाज में सुधार सम्भव नहीं है। उनमें नयी सोच पैदा करने की आवरयकता है। उनकी सवतन्त्रता पर बन देने की आवरयकता है। शरतचन्द्र पाश्चात्य साहित्यकारों में - हेनरीवड़, मेरी कौरेली, क्लिंटन और डिकिन्स के साहित्य से भी खब प्रभावित थे। उत: उनकी सौच केवल बंग समाज तक ही सीमित नहीं गयी। पाश्चात्य विचारधाराएं भी उनके साहित्य के स्थान पाने लगों। विधवा के प्रति सम्मान तथा नारी जीवन के पति स्वस्थ दिष्टकोण यह निश्चित रूप से भारतीय नवजागरण का प्रभाव है। शरतचन्द्र के साहित्य में दो नारी पक्षत्र ऐसे बाये हैं जिनके आचार - विचार से ऐसा लगता है कि ये पात्र पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कर रहे हैं जैसे श्रीकान्त को "अभ्या " तथा चरित्रहोन को किरणमयी । अभ्या में जहाँ नारी- पुरुष समानता पर बल को भावना ज्यादा बलकती दिखायी पड़ती है। वहीं पर किरममयी अपने वैया क्लिक सुत्र पर बल देती है। अभ्या पति हारा वर्मा स्त्री से शादी कर लेने पर वह हिन्दू रीति नीति को तहस नहस करके अपने प्रेमी रोहिणी 'बाबू के साथ सूले रूप में रहने लगती है। किरणमयी पति का इलाज करने वाले डा० के प्रति आसक्त होती है बाद में दिवाकर को लेकर आक्याब चली जाती है। इस पकार दोनों नारियाँ रोमान्टिक प्रवृत्ति को परिलिधत होती हैं। इनके उपर पाश्चात्य नारियों का प्रभाव परिलक्ति होता है।

शरतवन्द्र का अध्ययन अति विस्तृत था। उनका - "नारी का मूल्य " नामक नामक निबन्ध विश्व भर के नारी जीवन का चित्रण करता है। इसलिए उनके नारी विषयक दृष्टिकोंण में रुमानी लक्षण भी स्पष्ट होते हैं।

शरतचन्द्र कृतीनता की लक्ष्मण रेखा के अन्दर जीना पसन्द नहीं करते थे।

उन्हें एक सच्चे मानव को तलाश थी और यह मानवता उनको नारी जीवन में अत्मिधक

दिखी। जो त्याग, दया, माया, मानव प्रेम नारी जीवन में है वह अत्यन्त कहाँ श्

यदि कोई नारी अपनी देह पिक्त नहीं कर पायो तो क्या उसके अन्दर के अन्य

मानवीय मृत्यभी निर्धिक सिद्ध कर दिये जायँ। यही शरतचन्द्र के अधिकांश उपन्यासी

में दिखलायी पड़ता है। उनके छरेलुमन के भो जो उपन्यास लिखे गये उनमें भी ज्यादातर
नारियाँ बुद्ध स्वार्थों से संबर्ध कर रही हैं।

यह सत्य है कि शरतचन्द्र के प्रादर्भाव के समय नवजागरण व्यापक रूप से
प्रचारित किया जा रहा था, किन्तु इस आन्दोलन में केवल वे ही लोग सम्मिलित
थे जो कि ज्यादा पदे - लिखे थे। जन सामान्य इस सुधारवादो जान्दोलन से स्वयं
को अला महसूस करता था। इसका भो कारण शायद यह था कि ये सुधारवादी नेता
समाज के उच्च वर्ग से आये थे या मध्यवर्ग से जाये थे। आर्थिक रूप से सम्मिन्न थे सभा
भली प्रकार शिक्तित थे जिनका जनसाधारण से ज्यादा मेल मिलाप नहीं हो पाता था।
शरतचन्द्र के साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण करते ही नवजागरण जनसामान्य के बीच स्थान
पाता है। शरतचन्द्र समाज के सुविधा सम्मिन्न वर्ग से बहीं आये थे। ये गरीब इतने थे
पीस का पैसा नहीं मिल पाता था। परिष्पामस्वरूप किसी तरह 10वी कक्षा की परीक्षा

ही पास कर सकें। आगे की पदाई ठम हो गयो। दो सो पचीस रूपये में घर भी बिक गया। नोकरी के लिए दर - दर मटकने लो। समाज के उच्च समाज-पितयों के बीव सम्मान नहीं पाते ये इस लिए सामाजिक रूप से पितत समझे। जाने वाली जातियों के बीच में आने जाने लो। इसी समय उनको इन जातियों में छिपे हुए देवत्व की परख करने का अवसर मिला। इसलिए जन साधारण शरबचन्द्र से ज्यादा प्रभावित हुआ। और नवजागरण को बंग भूमि की धूल- माटी में फैलाने का वास्तविक कार्य शरतचन्द्र ने ही किया।

शरतचन्द्र के उद्भव के समय रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा बिक्य चन्द बांगला साहित्य में स्वाक्त हस्तावर बन चुके थे। साहित्य ही नहीं राजनीति के क्षेत्र में भी मार्ग निर्देशन का कार्य कर रहे थे। बिक्य द्वारा लिखित " वन्दे माहरम" स्वान्तता संग्राम सेनानियों के लिए बुक्य वाक्य हो गया था। इन दोनों हस्तियों के रहते हुए किसी बन्य साहित्यकार का स्थान बन पाना बड़ा मृश्किल कार्य था। शरतचन्द्र भी इनसे बहुत ही प्रभावित हुए। यहाँ तक कि बिक्य दारा लिखित " मृगालिनी " नाटक में शरत ने स्वधं मृगालिनी की भूमिका निभायो। तथा उनके अधिकांश साहित्य का अनुशीलन किया।

रवीन्द्र नाथ टैगोर को वे हमेशा अपना काव्य गुरू मानते रहे। उनके हम्पूर्ण साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा उन्हों जैसा बनने को कोशिशा की।

इसके लिए सतत प्रयत्नशील बने रहे। यूँ तो रवोन्द्रनाथ टैगोर ने भी समाज सधार के लिए भोरचनाएं की । जैसे - आँख को किरिकरी " में विधवा प्रेम का समर्थन किया गया है। फिर भी समाज सुधार के क्षेत्र में जो विधवा जीवन के प्रति शरत ने सम्मान पुक्ट किया है वह रवीन्द्र साहित्य में नहीं मिलता है। शरतचन्द्र ने अपने जीवन की पाठशाला में जो कुछ सीखा वह बहुत हो सजीप्व बन पड़ा है। विधवा प्रेम के सन्दर्भ में एक तरफ प्रेरणा रवीन्द्र नाथ टैगोर के आँख की किरिकरी" से तो मिली ही। साथ हो उनके अपने जीवन का भौगा हुआ यथार्थ भी। उसका पेरक बना । शरत ने 1900 में एक साहित्य गोष्ठी स्थापित की थी इसके सहस्य थे - मामा स्रेन्द्रनाथ, गिरोन्द्र नाथ मिस, योगेश मजमूदार, विभूति मूक्ण भट्ट तथा निरूपमा देवी । निरूपमा देवो विधवा थी । इनके पृति शारत का अत्यधिक आकर्षण था। किन्तु समाज के नियमों के कारण यह आकर्षण विवाह में नहीं बदल सका। इसी प्रकार की तमाम घटनाएं उनके प्रेरणा के रूप में कार्य करती रहीं। जिसके कारण वे रवीन्द्र नाथ टैगोर से भी आगे निकलते हुए प्रतीत होते हैं।

शरत के नवजागरण में बंगाल की धूल - माटी की गन्ध आती है।

उनकी विधवाएं बंगाल की विधाएं हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर विशव मानव चरित्र के

पक्षश्र हैं अतेव उनके साहित्य में वह पैनापन नहीं आ पाया है जो कि झरत साहित्य

में परिलिक्त होता है।

में परिलिक्त होता है।

इस नक्जागरण को प्रेरणा शस्त ने केवल बंग कृमि के साहित्यकारों से ही
नहीं ली। शस्त ने वालस्टाय, मेक्सिम गोर्की संरोधे पाश्चात्य साहित्यकारों से
भी खूब प्रभावित थे। टालस्टाय की - बन्ना केरेसिना" का अध्ययन शस्त ने
पवासों बार किया। तथा "नारी का मृत्य "तथा नारी का इतिहास "लिखने
की सामग्री प्राप्त की मेक्सिम गोर्की से प्रभावित होकर उन्होंने "पथेर "दबो "
की सृष्टि की। गोर्को तथा शस्त के जीवन में भी बद्धा कुछ समानताएं पायी जाती
है। दोनों ने बद्धा दिन तक अधारगी का जीवन बिताया/दोनों मृक्ति बान्दोलन
का भी समर्थन किया।

इस प्रकार साहित्य के क्षेत्र में नवजागरण को प्रेरणा न केवल बंग साहित्य से मिलो अपित स्त्री साहित्य से भी मिली । इन प्रेरणादायक कारकों के अतिरिक्त शरतचन्द्र केप्रभावित किया क तत्कालीन बंग समाज को पतिताओं की द्देंगा
ने । इस वर्ग को नारियों से शरत के बहुत हो नजदीकी सम्बन्ध थे । इनके व्यक्तिगत जीवन में आने वाली पतिता नारियों ही इनके साहित्य को गित प्रदान को।
यहीं कारण है कि इनका चित्रण करने में इन्होंने कल्पना का सहारा कम ही लिया
है । इनके गृह पंचकोड़ी ने इनको इस बात के लिए सबेत भी किया था कि साहित्य
में ज्यादा कल्पना का समावेश नहीं होना चाहिए । नीह दोदी, सुरबाला, तथा

निस्पमा देवी किसी न किसी रंप में शरतचन्द्र को साहित्य स्ज्र के लिर सदैव

प्रेरक बनी रहीं। इन नारियों से शरत का सम्बन्ध हार्दिक था। यही नहीं

म्ज्रपमस्पूर की यूंटी नामक के या जिसके यहां शरत आते-जाते थे वह भी शरत

साहित्य में स्थान पायो। शररचन्द्र ने स्वयं स्वीकार किया है " श्रीकान्त"

में जीवन के उन्हीं स्पों का वर्णन मैंने किया है, जिनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय

है, और उन्हीं चरित्रों को मेने लिया है जिनका अध्ययन निकट से करने का

अवसर मुझे मिला है, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह मेरा आ न्यवरित

है। फिर भी मुझे लोगों की यह धारणा जानकर प्रसन्नता ही होती है, क्यों कि

उससे प्रमाणित होता है कि मेरे पात्र पाठकों को सजीव लगते है और मेरा जीवन

कहानी लिखने की प्रेरण उनको पिता मोती लाल से भी खूब जो ित स्वयं एक साहित्यकार थे। चो भी से शरत ने पिता की दूटी हुई आलमारी खोलकर "हिरदास को गुप्त बातें" और भवानी पाठ" जैसी पुस्तकें पदी। इन पुस्तकों को पदने के लिए उन्हें मनाही थी क्यों कि इनका प्रभाव बालकों के उमर बहुत बुरा पड़ता था। इनमें कु अधुरो कहानियां भी थीं उनकं पूरा करने के लिए शरत कृत संकल्प हुए तथा रसी प्रकार के भावनों से उनको एप किया।

शरतवन्द्र में सूक्ष्म परविद्याण को शक्ति बहुत अधिक थी । किसी भी

घटना को देखते तो उसके अन्तस में पहुँचने का प्रयास अवस्य करते । यही पर्यविक्रण को शिवत उनकी कहानी के लिए संवेदना बनतो जाती थी ।

बचपन में शरत को अपने नाना केदारनाथ गांगूलो के यहाँ रहने जा सौभा र प्राप्त हुआ था अतः उस भरे पूरे परिवार की हर स्थिति परिस्थितियों से वे प्रभावित होते रहते थे। इस संयुक्त परिवार की आपसी टक्सराहट, खान-पान उठन-बैठन, सबका शरत पर प्रभाव पड़ा।

शरत के समीप रहें वाले जीव-जन्त भी मिहित्य में स्थान पाये।
भेल कुता, बाद बाबा चिक्या, गाय तथा साँप सभी के प्रति उनकी सहान्भृति
थी। अस्त, इनकी अपनी अम्मिक्ति, शराब, गाँजा, हारमोन्यिम, क्लेयरनेट,
बाँस्री बजाना तथा नृत्व करना मृख्य था। इसकी प्रेरणा इनको बचपन के
मित्र राजू से मिली और वह राजू "सतीश" के रूप में अमर हुआ।

इन सब घटनाओं से शरत इस तरह प्रशास्ति हर कि आजीवन इसी में व्यस्त रहे। वे इन घटनाओं के भो का ही नहीं, दृष्टा भी थे। शायद यही कारण है कि उनको रचनाओं के पाठक भी अधिक बने। छात्र,गृहनारी, तथा व्यापारी सभी इनके अन्त बने। छात्र "चरित्रहीन " श्रीकान्त तथा देवदास को होशा अपने साथ रखते थे। यही नहीं क्रान्तिकारी "पथरदावी " को सदैव अपने पास रखते थे। इन क्रान्तिकारियों के पास केवल गीता तथा पथरदावी

दों ही रचनाएं रहती थी। 'जस समय शारत प्रसिद्धि के शिखर पर थे, उसी
समय शारतीय राजनीति में भो क्रिन्तिकारी परिक्तन होने लो थे। राजनैतिक
मंव पर नयी परिस्थितियाँ पैदा हो रही थीं। 13 अप्रैल 1919 को जिल्यावाला बाग काण्ड तथा रोलेक्ट एक्ट के आगमन से देश के स्वाभिमान पर
चोट पहुँची। समृद्धि देश विष्धर भुजंग की भाँति पुंक्कार होउठा ।रवीन्द्रनाथ
टैगोर ने अंग्रेजों इंगरा प्रदान की गयी 'सर को उपाधि लौटा दी स देशबन्ध्
चितरंजन दास भी इस महाससक में कूद पड़े। इस प्रकार सम्पूर्ण देश आन्दोलित
हो उठा।

शारत का अत्यधिक लगात था - देश बन्धु चितरंजन दास से इसलिए उन्हीं के नेतृत्व में राजनीति में भी कूदे । वैसे शारत का झुकाव मदा गरम दल की और था । लोकमान्य तिलक्ष के प्रति उनकी सच्ची भृता थी । "हरिलक्ष्मी" नामक कहानी में तिलक को चर्चा की है ।

भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी भी एक प्रभावशाली नेता के हिप में उभरे थे। लेकिन बंगाल पान्त प्रारम्भ में महात्मा गांधी के साथ नहीं था। देश बन्ध चितरंजन गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के विरुट थे। इसी समय कांग्रेस का एक विशेष अधिनेत्रान कलकत्ता में हुआ जिसके समापति बनाये गये।

मंजाब केसरी लाला नाजपतराय । जिनके प्रभाव से महात्मागाँधी का असहयोग बान्दोलन प्रस्ताव पास हो गया । शरत ने असहयोग बान्दोलन का पूरी तरह स्वागत किया । शीं, हो वे हावडा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी चुने गये। डॉं० यतीन्द्रनाथ, मो हनदास गुप्त, सुभाषवन्द्रं बोध, हेमन्त कुंगार सरकार, निर्मेलवन्द्र वन्द्र " इनके सहयोगि बने । शारतचन्द्र नियम का पालन करने के लिए सूत कातते तथा खादी पहन्ते थे। किन्तु वे सूत कातने से प्रशक्ति नहीं थे। उन्होने स्पष्ट वहा " शारत की बीस लाख रूपये को खादी से अस्सी करोड़ रूपयों की कमी पूरी नहीं जा सकती। काठ केवर्षे से लोहे की मशीन को हराया रहीं जा सकता। और अगर ऐसा हो भी जाय तरे इससे मनुष्य का मार्ग प्रशस्त नहीं होता । 1929 में उन्होंने " बेणु पत्रिका " में " परशुराम " के छ्दम नाम से चर्छे के विरोध में लेख लिखा । शरतचन्द्र ऐसे मानव ये जिनके अन्तस में देश प्रेम की शासना उमझ रही थो। एक बार उनसे किसी ने प्रश्न किया कि क्या वै क्तिवादी राजनीति में किवास करते हैं १ शरत ने उत्तर दिया कि देश के लिए जो काम करते हैं, उन सब पर में शृहा रखता हूँ अले ही वे लिसा तमक कृतिकारी हो या अहिंसात्मक सत्यागृही। मेरे लिए वे दोनों ही अहा वे पात्र हैं। बंगाल के जितने लड़कां ने जीवन का सर्वस्व बलिदान किया, उसकी जोड़ सारे भारतवर में नहीं है। क्यों जानते हो १ कारण यह है कि बंगाल के

युवक जितना अपने देश को "यार करते हैं उसका एक हिस्सा भी शायद पंजाब को छोड़कर भारत में और कहीं खोजे नहीं मिलेंगे। इसी से "वन्दे मातरम" की सृष्टि खंगाल में हुई।"

उसहयोग आन्दोलन में नारियाँ भी सम्मिलित हुई थीं। उनकी देखरेख के लिए शरत ने " नारी कर्म मिन्दर " को स्थापना की । तत्कालीन समीक्षकों ने शरतचन्द्र में रवीन्द्र नाथ टैगोर से भी अधिक देश प्रेम देखा था । " नारायम " पत्रिका" के सम्भादक चितरंजनदास ने लिखा था " रवीन्द्रनाथ ने पश्चिम से बहुत सारी चीजें गृहण की हैं। इसमें केई सन्देह नहीं कि उनकी वजह से बंगला साहित्य में विविधता आई और उसकी समृद्धि भी हुई। परन्तु इसते कारण बंगाल की अपनी संस्कृति आहे राष्ट्रीय चेतना का विकास नहीं हो सका । किसी भी स्थिति में हमारे लिए यह शोकनीय नहीं है कि हम पश्चिम की चका चाँध से प्रशासित हो जाँय। "वही चितरंजन दास शरत को "नारायण " के लिए कहानों को माँग किये। इसके लिए शारत ने "स्वामी " नामक ग्रन्थ लिखा । पारिश्रीभक के रूप भें वैरिस्टर दास ने कोरा चेक भेज दिया था। इस प्रकार देशा प्रेम के क्षेत्र में शरत रवीन्द्र नाथ टैगोर से भी आगे बद्ध गये।

इस नवजागरण के भून में देश प्रेम ही समाहित था। शरत के सकी

पात्र बंगाल को ही धूल-माटी से आये हैं। वहीं की धरती को महिमान्वित

16 जून 1925 को देशबन्धु का देहान्त हो गया । इसके बाद शरत
ने पून: साहित्य लेखन का कार्य प्रारम्भ किया । इस समय गोकों से वे ज्यादा
प्रभावित हर । और जागरण नथा "पथेरवाबी " जैसे उपन्यासों की सृष्टित की ।
" पथेरवाबी " प्रकाशित होते हो जब्त कर लो गयो थो । पुलिस किमरनर ने
शरत से कहा " जहाँ भी हम क्रान्तिकारियों को पकड़ते हैं, वहीं दबते हैं कि
हरेक क्रान्तिकारी के पास दो पुस्तकें हैं - गीता और पथेरवाबी ।"

हिन्दू मुस्लिम एक्ता को लक्ष्य करके उन्होंने "महेश " नामक कहानी लिखा ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शरत ने बक्जागरण बंगाल हो नहीं बिल्क सम्पूर्ण देश में लोकप्रिय बनाय"। तथा उसके समाज सुधार एवं राजनीति सुधार दोनों स्पों को स्वीकार किया।

समीका त्मक कृतियाँ

- । अधिनिक भारतीय संस्कृति एल०पी प्रामा
- अधिनिक भारत वर्ष का इं निहास एल०पी०सरकार
- अधिनक भारत का इतिहास बीळ्पला ने विकास
- अाधीनक भारत का इतिहास सुमित स्रकार
- बंगला नवजागरण और भारतेन्द् डा० शम्भू नाथ हारा सम्पादित
- 6. वीसदी शता ब्दी में भारतीय महिलाओं का सामाजिक एवं राजनैतिक
 - मधुराका सक्तेना ।
- 7 भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का
 - एक विकास। बी०रन अस्तिया
- भारतीय संस्कृति का इतिहास एस० विद्यालंका र
- 9• भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास डा० ता । चन्द्र
- 10 भारत में सामाजिक धार्मिक, आन्दोलन- वो के णाप्त का एक अध्ययन।
- ।। भारतीय नक्जागरण प्रणेता तथा गौरीशंकर भट्ट ।
- 12. महावीर प्रसाद हिवेदी और डा० राम विलास शर्मा हिन्दी नवजागरण ।
- 13. सम्मित्ति शहस्त्र । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

14. भारत का सामाजिक, साम्कृतिक - गो० पस० चोपड़ा, बो० पर०पुरी,

पमण्पन०दम ।

15. भारत में सामाजिक आन्दोलन डा० सुरेन्द्र कुमार श्रीजास्तव

और परिकर्तन।

- 16 मोहन राय और जीवन कौर के के असी अस्ता।
 दर्शन।
- । त्या न्त्रता संग्राम विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठो
- 18. अवाराँ मसीहा विष्णु प्रभाकर
- 19. उत्तर प्रदेश के सामाजिक एवं धार्मिक- डा० शिवराम त्रिपाठी जीवन के। प्रमण्ति करने वाले साहित्यकारों के प्रयास ।
- 20. उपन्यास और समाज सुधार के दर्शन- डा० राम कुमार वर्मा
- 21 समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के परिपेक्ष्य स्तीशकुमार दुवे । में प्रेमचन्द साहित्य का मृत्यांकन
- 22 सामाजिक परिकान और उनकी हिन्दी वी०पी० छत्री साहित्य पर प्रभाव।
- 23· 19वीं श्रदी और उसके बाद का इलाचन्द्र जोशी। साहित्य।
- 24. सोमेन्द्र नाथ टैगोर राजाराम मो हन राय।

25 अधिनक भारत में सामाजिक एम०एम० श्रीनिवास । परिवर्तन । 26 संस्कृत के चार अध्याय - राम धारी सिंह दिनकर । पत्रिका । सरस्वती अंक जुलाई 1913 शरतचन्द्र की विवेचित कृतियाँ: । बडी दीदो 13 चन्द्र नाथ +4• श्रीग्र, न्त 2. देव दास देना पाकना 3 स्वामी 15 4• निष्कृति शुभदा 16 5. पथ के दावेदार पण्डित जी 17 बिन्दों का लडका 6 काशी नाथ 18 बाह्मण की बेटी ग्रामीण समाज 19 7 20 जागरण दत्ता 8 विपदास गृहदाह 21 9 शेष पुशन बेंक्एठ का दान पत्र 22 10 ।। नव विधान अरक्षपीया 23

परिणीता

12

चि रत्रहोन

24

प्रेमचन्द्र की विवेचित कृतियाँ:

- । प्रेमा
- 2• निर्मेला
- सेवासदन
- 4. बायावं स
- 5 क्मेंश्रीम
- 6 रंग भूमि
- 7 गबन
- 8 गोदान।

*** * * * * *